IIMA

विद्याविनियोगाद्विकास:

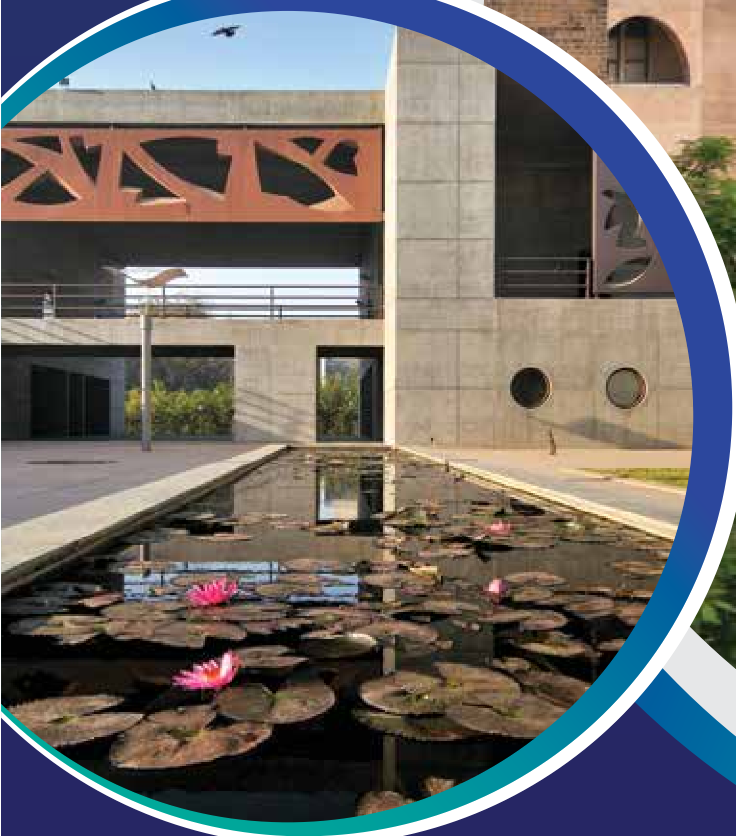

तेरहवाँ अंक

प्रतिबिंब

फरवरी 2024

विद्याविनियोगाद्विकास:

भारतीय प्रबंध संस्थान अहमदाबाद

वस्त्रापुर, अहमदाबाद - 380 015

दूरभाष: 91-79-7152 4691 फैक्स : 91-079-26300352, 26308345

ईमेल : agm-hindi@iima.ac.in वेबसाइट : www.iima.ac.in

© प्रतिबिंब – – फरवरी 2024

संपादक

डॉ. मुकेश शर्मा

सहायक महाप्रबंधक-हिंदी

भारतीय प्रबंध संस्थान अहमदाबाद

सहयोग

बिन्दु डोडिया

सहायक प्रबंधक - हिंदी

एवं

प्रकाशन विभाग

भारतीय प्रबंध संस्थान अहमदाबाद

"प्रतिबिंब" में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त किए गए विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित लेखकों के हैं। संपादक एवं संस्थान का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। - **संपादक**

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत गर्व की अनुभूति हो रही है कि हमारे संस्थान की हिंदी गृह-पत्रिका "प्रतिबिंब" का प्रकाशन पिछले तेरह वर्षों से अनवरत रूप से जारी है। मेरा मानना है कि यह केवल आईआईएमए समुदाय के उन सक्रिय सदस्यों के सहयोग से ही संभव हो सका है जो राजभाषा हिंदी के प्रति एक विशेष लगाव रखते हैं। यह पत्रिका इसके नामकरण एवं उद्देश्य के अनुरूप ही आईआईएमए समुदाय की रचनात्मक प्रतिभा को एक मंच प्रदान करते हुए हमारे संस्थान की संस्कृति को प्रतिबिंबित करने में पूर्णतः सफल रही है।

इस तेरहवें अंक में समाहित सभी रचनाओं में सरल, सहज एवं आसान हिंदी शब्दों का चयन किया गया है जिनका हम अपने दैनिक जीवन में आम बोलचाल की भाषा में इस्तेमाल करते हैं। इस पत्रिका की इसी विशेषता के कारण यह अपने पाठकों के बीच दिन-प्रतिदिन लोकप्रिय होती जा रही है तथा साथ ही संस्थान में राजभाषा कार्यान्वयन के अहम कार्य को आसान बनाती जा रही है। इसके माध्यम से संस्थान के अधिक से अधिक सदस्य राजभाषा हिंदी के प्रति आकर्षित हो रहे हैं और अपने दैनिक कार्यकलापों में राजभाषा हिंदी को अपना रहे हैं।

हमारी राजभाषा हिंदी हमारे देश की पहचान है क्योंकि भाषा से ही देश की पहचान होती है और देश से भाषा की पहचान होती है अर्थात् दोनों ही एक दूसरे के पूरक हैं। राजभाषा हिंदी पूरे देश की संस्कृति को संजोए हुए है और राष्ट्र को संगठित रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। हिंदी का पूरे विश्व में निरंतर प्रभाव बढ़ रहा है क्योंकि इसे समझना और सीखना अन्य भाषाओं की अपेक्षा ज्यादा आसान है। यह पूरे विश्व में हमारी सांस्कृतिक विरासत को आगे बढ़ाने में सार्थक सिद्ध हो रही है।

मुझे पूरा विश्वास है कि हमारी हिंदी गृह-पत्रिका "प्रतिबिंब" का यह तेरहवाँ अंक अन्य पिछले अंकों की तरह ही सराहनीय रहेगा। अंत में, मैं इस पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े संस्थान के सभी सदस्यों को उनके विशेष योगदान के लिए बधाई देता हूँ तथा इस पत्रिका की सफलता की कामना करता हूँ।

शुभकामनाओं सहित।

प्रोफेसर भारत भास्कर
निदेशक

संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हो रही है कि संस्थान की गृह-पत्रिका “प्रतिबिंब” के तेरहवें अंक का प्रकाशन हो रहा है। यह पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के प्रति संस्थान की प्रतिबद्धता दर्शाते हुए, राजभाषा कार्यान्वयन में अपना महत्वपूर्ण योगदान प्रदान कर रही है। यह संस्थान के सदस्यों को राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन में सहयोग करने के लिए एक मंच प्रदान कर रही है। हिंदी गृह-पत्रिका “प्रतिबिंब” के तेरहवें अंक में प्रकाशित रचनाएँ यह दर्शाती हैं कि संस्थान के स्टाफ सदस्यों के साथ-साथ हमारे संकाय सदस्य, छात्र एवं पूर्वछात्र भी राजभाषा हिंदी को अपना रहे हैं। राजभाषा हिंदी के प्रति संस्थान के सदस्यों में बढ़ते लगाव से हमारी यह गृह-पत्रिका हर वर्ष परिष्कृत होती जा रही है जो इसके उद्देश्य को परिपूर्ण करती है।

वैश्वीकरण के इस आधुनिक दौर में सूचना प्रौद्योगिकी के बढ़ते प्रभाव के कारण राजभाषा हिंदी पूरे विश्व में एक सशक्त भाषा के रूप में अपनी पहचान बनाती जा रही है। यह हमारे देश की सरल एवं लोकप्रिय भाषा होने के साथ-साथ हमारी सभ्यता एवं संस्कृति की संवाहक भी बनकर उभरी है। मुझे पूरा विश्वास है कि आने वाले समय में राजभाषा हिंदी हमारे देश की उन्नति का मार्ग प्रशस्त करने में सकारात्मक भूमिका अदा करेगी। राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन में हमारा संस्थान भी अपनी सकारात्मक भूमिका अदा कर रहा है।

हमारे संस्थान में राजभाषा हिंदी को बढ़ावा देने के लिए हर वर्ष हिंदी पखवाड़े का आयोजन किया जाता है और इस दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं में आईआईएमए समुदाय के सभी सदस्य बढ़-चढ़कर हिस्सा लेते हैं। वर्ष 2023 में भी 14 से 29 सितंबर 2023 के दौरान हिंदी पखवाड़े का आयोजन किया गया था। हिंदी पखवाड़े में कुल नौ हिंदी प्रतियोगिताएँ (कविता, सामान्य-ज्ञान, शब्द-ज्ञान, स्लोगन, निबंध, आशुभाषण, अंताक्षरी, सुलेख, गीत गायन) आयोजित की गई थी और आईआईएमए समुदाय के पाँच सौ से अधिक सदस्यों ने इन प्रतियोगिताओं में प्रतिभागिता की थी। पिछले वर्षों में हिंदी पखवाड़े के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं में संस्थान के सदस्यों की बढ़ती भागीदारी संस्थान में राजभाषा हिंदी के प्रति बढ़ते लगाव को दर्शाती है।

मैं “प्रतिबिंब” के प्रकाशन में सहभागी बनें सभी सदस्यों को हार्दिक बधाई देता हूँ और आशा करता हूँ कि इस पत्रिका का हर अंक सफलता की बुलंदियों को छूता रहे।

शुभकामनाओं सहित।

प्रोफेसर सतीश देवधर
अधिष्ठाता (प्राध्यापक संकाय)

संदेश

भारत सरकार की राजभाषा नीति की अनुपालना में हम सब का यह संवैधानिक कर्तव्य है कि हम अपने दैनिक कार्यों में राजभाषा हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग करें। इस गृह-पत्रिका का प्रकाशन भी इसी उद्देश्य को ध्यान में रखकर किया जाता रहा है। इसके माध्यम से संस्थान के ज्यादा से ज्यादा सदस्यों को अपने विचारों की अभिव्यक्ति का अवसर तो मिलता ही है और साथ ही संस्थान में राजभाषा हिंदी का प्रचार-प्रसार भी बढ़ रहा है। मैं ऐसा मानता हूँ कि इस उद्देश्य को प्राप्त करने में हम काफी हद तक हमारे प्रयास में सफल भी रहे हैं।

मुझे बहुत खुशी हो रही है कि हमारे संस्थान की हिंदी गृह-पत्रिका "प्रतिबिंब" के तेरहवें अंक का प्रकाशन हो रहा है। इस पत्रिका के इस अंक में भी पिछले अंकों की तरह ही विभिन्न विविधतापूर्ण विषयों पर रोचक एवं ज्ञानवर्धक जानकारी प्रदान की गई है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि इसका यह अंक भी राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में अपनी अहम भूमिका अदा करेगा।

संस्थान के लिए यह गर्व का विषय है कि हमारी हिंदी गृह-पत्रिका "प्रतिबिंब" का प्रकाशन अनवरत रूप से जारी है। अपने पिछले अंकों की तरह ही इस गृह-पत्रिका का यह अंक भी संस्थान के सदस्यों की भावनाओं, विचारों एवं उद्गारों की सफल अभिव्यक्ति साबित होगा । साथ ही इसकी सभी रचनाएँ राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन में अपनी अहम भूमिका अदा कर रही हैं।

मैं, हिंदी गृह-पत्रिका "प्रतिबिंब" तेरहवें अंक से जुड़े संस्थान के उन सभी सदस्यों को हार्दिक बधाई देता हूँ जिनके अथक प्रयासों से इस अंक का प्रकाशन संभव हो सका है। मुझे पूरा विश्वास है कि हमारी हिंदी गृह-पत्रिका का यह अंक भी राजभाषा कार्यान्वयन की दिशा में मील का पत्थर साबित होगा।

शुभकामनाओं सहित।

कर्नल अमित वर्मा (सेवानिवृत्त)
मुख्य प्रशासनिक अधिकारी

संपादकीय

हमारा देश अनेक विविधताओं वाला देश है यहाँ अलग-अलग जाति, धर्म, संप्रदाय एवं भाषाओं वाले लोग रहते हैं लेकिन जब देश की एकता की बात आती है तो हम सभी अपनी विविधताओं को भूलाकर एकता के सूत्र में बंध जाते हैं। हमारे देश को एकता के सूत्र में पिरोने में हमारी राजभाषा हिंदी अहम भूमिका निभाती है क्योंकि यह भाषा हमारे देश की सबसे ज्यादा बोली एवं समझी जाने वाली सरल, सशक्त, लोकप्रिय तथा समृद्ध भाषा है। हिंदी बोलने वाले लोगों की संख्या भारत के अलावा भी नेपाल, मॉरिशस, फिजी, सूरीनाम, यूगांडा, दक्षिण अफ्रिका, अमेरिका, कनाड़ा, इंग्लैंड, ट्रिनिडाड, टोबेको, मध्य एशिया तथा कैरिबियन देशों में अच्छी-खासी है। इस प्रकार से विश्व-स्तर पर राजभाषा हिंदी के बढ़ते प्रभाव को देखते हुए भारतीय प्रबंध संस्थान जैसे उच्च शिक्षण संस्थानों का भी यह कर्तव्य बनता है कि हम भी राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में अपना योगदान प्रदान करें। इसी विचारधारा की अनुपालना में हमारे संस्थान की हिंदी गृह-पत्रिका "प्रतिबिंब" अपना महत्वपूर्ण योगदान अदा कर रही है और दिन प्रतिदिन हिंदी भाषा को हमारे संस्थान में आगे बढ़ा रही है।

विश्व पटल पर अपना प्रतिनिधित्व स्थापित करने वाली हमारी राजभाषा हिंदी के संबंध में हमारे देश के महापुरुष विनोबा भावे जी ने कहा था कि "हिंदी को गंगा नहीं बल्कि समुद्र बनाना होगा"। हमारी हिंदी गृह-पत्रिका "प्रतिबिंब" के प्रकाशन में हमारे संस्थान के सदस्यों ने इसी विचारधारा को आगे बढ़ाया है। इस अंक में समाहित रचनाओं के माध्यम से सभी सदस्यों ने अपनी वैचारिक अभिव्यक्ति और राजभाषा हिंदी के प्रति अपने लगाव को प्रकट किया है जो संस्थान में राजभाषा कार्यान्वयन के प्रति हमारी प्रतिबद्धता के उद्देश्य को फलीभूत करता है।

मैं, इस अंक के प्रकाशन से जुड़े संस्थान के उन सभी सदस्यों का आभार प्रकट करता हूँ जिनकी ज्ञानवर्धक एवं रोचक रचनाओं के माध्यम से इस अंक का प्रकाशन संभव हो सका है और आशा करता हूँ कि भविष्य में भी इसी प्रकार से आपकी रचनाओं से हिंदी गृह-पत्रिका "प्रतिबिंब" के आगामी अंक सुशोभित होते रहेंगे।

इस पत्रिका के पिछले अंकों के लिए आप सभी से प्राप्त अमूल्य सुझावों के अनुरूप हमने "प्रतिबिंब" के इस तेरहवें अंक को प्रकाशित करने का एक सार्थक प्रयास किया है। हमें आशा है कि आपको यह अंक अवश्य पसंद आएगा। कृपया हमें अपनी प्रतिक्रियाएँ / सुझाव भेजना ना भूलें, हमें आपकी प्रतिक्रियाओं / सुझावों की प्रतीक्षा रहेगी।

शुभकामनाओं सहित।

आपका अपना,

डॉ. मुकेश शर्मा
सहायक महाप्रबंधक - हिंदी

अनुक्रमणिका

राजभाषा हिंदी की विकास यात्रा	डॉ. मुकेश शर्मा	06
कोई नहीं चाहता	भावेश पटेल	09
भारतीय संस्कृति व धर्म की सही पहचान	प्रोफेसर विशाल गुप्ता	10
बाबा जी का ढाबा	प्रोफेसर प्रशांत दास	11
तुम आँसू ना बहाना	प्रशांत पुरोहित	12
यूँ ही किस्मत का लेखा जोखा होता देखा	प्रोफेसर चित्रा सिंगला	12
भ्रष्टाचार का विरोध करें; राष्ट्र के प्रति समर्पित रहें	मृदुल जोशी,	13
अहा, यह ज़िंदगी..	वनिता मुदलियार	15
सरकारी बाबू	धर्मेश रावल	15
जीत का सार	अभिषेक कुमार मिश्रा	16
मंजिल	राहुल कुमार झा	17
एंग्जायटी (Anxiety)	विनय शर्मा	18
स्वास्थ्य सुझाव	डॉ. नंदलाल माहेश्वरी	21
सुनहरी ज़िंदगी का सपना	स्नेहल जेठवा	21
आर्थिक विकास की कीमत प्राकृतिक आपदाएँ	डॉ. कृतिका टेकवानी	22
बैठा	हरीश वाघेला	23
नारी शिक्षा और समाज	हरीश प्रेमी	24
किसान	राहुल कुमार झा	25
गुब्बारे	श्रीमती प्रिया एस. प्रसाद	26
भारत की उपलब्धियाँ	डॉ. कृतिका टेकवानी	27
उत्क्रांति के रास्ते हिंदी युग की स्थापना	बिंदु डोडिया	28
प्रकृति	प्रतीक पटेल	30
टिन्नी की पिक्सी	श्रीमती कुमुद वर्मा	31
आगे बढ़ते रहेंगे	श्रीमती कुमुद वर्मा	32
पर्यावरण और आर्थिक विकास	मोनिका अग्रवाल	33
अच्छा सुनो!	रुचि गहलावत	34
साक्षरता द्वारा महिलाओं के लिए समानता	शिल्पा नागरे	35
जवानी बीती बुढापा आया	प्रतिमा भारती	36
डॉ. विक्रम अंबालाल साराभाई	रवि डी. पारेख	37
तृषित	श्रीमती प्रिया एस. प्रसाद	39
शारीरिक भाषा का मनोविज्ञान	डॉ. नंदलाल माहेश्वरी	40
पानी है बचाना	अनिका मेहता	42
संस्थान की राजभाषा गतिविधियाँ		43
अक्षय कोष - एक सकारात्मक पहल	विजयंत जोशी	50
काश मैं उड़ पाती	अनिका मेहता	51
ऐ जिंदगी	धर्मेंद्र एन. सोलंकी	51
मेरे सपनों का भारत	हरीश वाघेला	52
हम गुजराती	नीलम वाढेर	53
जीवन अपना	श्री दामजीभाई सोलंकी	54
रह जाए ग़र तो इश्क है	प्रोफेसर प्रशांत दास	54
संस्थान के पूर्व चित्रकार	श्री उर्मिल अंजारिया	55
हमारी मातृभाषाः पहली पहचान	इशिता सोलंकी	57
'यादों का आर्काइव्स'	अभिषेक कुमार मिश्रा	58
बुआ	श्रीमती सविता शर्मा	59
मैं हिंदुस्तान हूँ	चिंतन पटेल	60
तितली की सीख	प्रवीण शर्मा	61

राजभाषा हिंदी की विकास यात्रा

डॉ. मुकेश शर्मा
सहायक महाप्रबंधक - हिंदी

हमारा देश अनेक विविधताओं वाला देश है। यहाँ पर अलग-अलग भाषाएँ, बोलियाँ एवं संस्कृतियाँ एक साथ फल-फूल रही हैं। वैसे तो संवैधानिक तौर पर हमारे देश में 22 भाषाएँ हैं लेकिन हमारी राजभाषा हिंदी ही एक ऐसी भाषा है जो ज्यादातर देशवासियों द्वारा बोली और समझी जाती है। वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार हमारे देश की 57 प्रतिशत आबादी हिंदी बोलती और समझती है। यही कारण है कि हमारे देश की संपर्क भाषा के रूप में हिंदी ने अपनी विशेष पहचान बनाई है और धीरे-धीरे यह विश्व स्तर पर भी अपने पैर जमा रही है। हिंदी विश्व की तीसरी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है। हमारे देश के अलावा नेपाल, मॉरीशस, फिजी, अमेरिका, कनाड़ा, ब्रिटेन और संयुक्त अरब अमीरात जैसे देशों में हिंदी बोलने वाले लोगों की काफी संख्या मौजूद है। हिंदी भाषा कई देशों के विभिन्न विश्वविद्यालयों एवं स्कूलों में पढ़ाई भी जाती है और इस प्रकार से यह भाषा विश्व भाषा बनने के पथ पर कदम-से-कदम मिलाते हुए आगे बढ़ रही है।

किसी भी भाषा के विकास में इतिहास की एक अदृश्य शक्ति छिपी रहती है जो सामाजिक, राजनीतिक और ज्ञानात्मक रूप धारण करते हुए भाषा के विकास में महत्वपूर्ण योगदान देती है। अगर हिंदी की विकास यात्रा के बारे में बात करें तो इस भाषा की विकास यात्रा बहुत लंबी है। जिस प्रकार से हर भाषा के विकास में उस भाषा के भाषाभाषी क्षेत्र एवं वहाँ की संस्कृति की अहम भूमिका होती है उसी प्रकार से हिंदी भाषा के विकास में भी विशेष रूप से उत्तर भारतीय राज्यों एवं उनकी संस्कृति की महती भूमिका रही है। अगर हम भारत की प्राचीन भाषा की बात करें तो वह भाषा संस्कृत रही है। संस्कृत भाषा से हिंदी भाषा की विकास यात्रा प्रारंभ हुई है जो आगे चलकर संस्कृत से पालि, पालि से प्राकृत, प्राकृत से अपभ्रंश, अपभ्रंश से अवहट्ट, अवहट्ट से पुरानी हिंदी और पुरानी हिंदी से आज की हमारी आधुनिक हिंदी के रूप में विकसित हुई है, जिसे आज हम सब बोलते हैं। आज हिंदी के जिस रूप को हम देखते हैं उसकी बाह्य आकृति भले ही कुछ शताब्दियों पुरानी हो लेकिन उसकी जड़ें संस्कृत पाली, प्राकृत और अपभ्रंश की मृदा में गड़ी हैं।

स्वतंत्रता संग्राम के दौरान राजभाषा हिंदी का प्रचलन खूब बढ़ा। यह हिंदी भाषा का ही असर था कि उत्तर भारत ही नहीं दक्षिण भारत से भी आने वाले आजादी के नायकों ने इसे आजादी के संग्राम में संपर्क भाषा के रूप में अपनाया था। इस अभियान में गाँधीजी की भूमिका सबसे अहम रही थी। उन्होंने ही भारतीय जनमानस की चेतना को पहचान कर राजभाषा हिंदी को संपर्क भाषा के रूप अपनाते हुए पूरे देश को एकता के सूत्र में पिरोने का काम किया है। इस प्रकार से हिंदी एक विकासशील तथा विशाल भू-भाग में बोली जाने वाली भाषा के रूप में उभर कर सामने आई है। हिंदी का संस्कृत, अंग्रेजी, अरबी-फ़ारसी तथा आधुनिक भारतीय भाषाओं से निकट का संबंध रहा है इसलिए इसने इन भाषाओं के शब्दों को भी अपने आप में समाहित कर लिया है। इस भाषा को अपने दैनिक कामकाज में लोगों द्वारा ज्यादा से ज्यादा अपनाया जा सके और सभी को यह भाषा ज्यादा सरल एवं सुगम लगे इस उद्देश्य से अंग्रेजी के लगभग दस हजार से अधिक शब्दों को हिंदी भाषा ने अपना लिया है। आज हम देख रहे हैं कि अंग्रेजी ने भी हिंदी भषा के काफी शब्दों को अपनी शब्दावली में शामिल कर लिया है। हिंदी के विकास की पूर्व पृष्ठभूमि में अभी तक यही बताया गया है कि खड़ीबोली, बाँगरू, ब्रज आदि बोलियों के संयोग से हिंदी का एक मानक रूप विकसित हुआ है जो पिछले दो सौ वर्षों में विश्व के भाषाई मानचित्र में अपना अंतरराष्ट्रीय स्थान बना चुका है और भारत की राजभाष हिंदी के रूप में मान्य है।

अगर हम राजभाषा हिंदी की विकास यात्रा की बात कर रहे हैं तो हमें हिंदी साहित्य के इतिहास के काल विभाजन एवं इसके नामकरण की भी बात करनी होगी। हिंदी साहित्य के काल विभाजन एवं नामकरण को लेकर विद्वानों के विविध मत हैं। हिंदी साहित्य के इतिहास के काल विभाजन एवं इसके नामकरण के संबंध में सबसे पहला नाम आता है जॉर्ज ग्रियर्सन का। इन्होंने हिंदी साहित्य का काल विभाजन केवल साहित्यिक प्रवृत्ति के आधार पर किया है, लेकिन कालखंडों के नामकरण हेतु इन्होंने अनेक आधारों का सहारा लिया है। इनके अतिरिक्त शिवसिंह सेंगर, मिश्र बंधुओं, आचार्य रामचंद्र शुक्ल, हजारी प्रसाद द्विवेदी, रामकुमार वर्मा, गणपति चंद्र गुप्त, डॉ. नगेंद्र, डॉ. श्यामसुंदर दास, डॉ. विश्वनाथ प्रसाद मिश्र और रामस्वरूप चतुर्वेदी ने भी हिंदी साहित्य का वर्गीकरण एवं नामकरण किया है। हिंदी साहित्य के अब तक लिखे गए इतिहासों में आचार्य रामचंद्र शुक्ल द्वारा लिखे गए "हिंदी साहित्य का इतिहास" को सबसे प्रामाणिक एवं सर्वमान्य माना जाता है। आचार्य शुक्ल जी ने इसे "हिंदी शब्दसागर की भूमिका" के रूप में लिखा था जिसे बाद में स्वतंत्र पुस्तक के रूप में प्रकाशित कराया गया। इनके अनुसार हिंदी साहित्य के इतिहास का काल-विभाजन एवं नामकरण इस प्रकार से है:-

1. वीरगाथा काल

आचार्य शुक्ल जी ने हिंदी साहित्य के इतिहास के प्रारंभिक काल को वीरगाथा काल के नाम से संबोधित किया है। इन्होंने वीरगाथा काल की समय सीमा को विक्रम संवत 1050 से 1375 तक माना है। इस काल की प्रमुख रचनाओं में इन्होंने अपभ्रंश साहित्य की चार कृतियों विजयपाल रासो, हम्मीर रासो, कीर्तिलता और कीर्तिपताका का उल्लेख किया है और देशज भाषा की आठ कृतियों खुम्माण रासो, बीसलदेव रासो, पृथ्वीराज रासो, जयचंद प्रकाश, जय मयंक चंद्रिका, परमाल रासो, खुसरों की पहेलियाँ और विद्यापति पदावली का उल्लेख किया है। इन सभी पुस्तकों में वीरगाथाओं का उल्लेख किया गया है इसलिए आचार्य शुक्ल जी ने इस काल को वीरगाथा काल नाम दिया है।

2. भक्ति काल

हिंदी साहित्य के इस काल को कुछ विद्वानों ने पूर्व मध्यकाल या धार्मिक काल भी कहा है लेकिन शुक्ल जी ने इस काल का नामकरण भक्ति काल के रूप में किया है। इस काल की रचनाओं की प्रवृत्ति विशेष रूप से भक्तिमूलक रही है इसलिए इस काल का नामकरण भक्ति काल ज्यादा तर्कसंगत है। इन्होंने भक्ति काल की समय सीमा को विक्रम संवत 1375 से 1700 तक माना है। इन्होंने भक्ति काल को सगुण एवं निर्गुण भक्ति की दो काव्य धाराओं में बाँटकर प्रत्येक के दो भाग किए हैं। सगुण धारा को रामाश्रयी और कृष्णाश्रयी शाखा तथा निर्गुण धारा को ज्ञानाश्रयी और प्रेमाश्रयी शाखाओं में बाँटा है। राम के चरित्र पर लिखी गई रचनाओं को रामाश्रयी शाखा में और कृष्ण के चरित्र पर लिखी गई रचनाओं को कृष्णाश्रयी शाखा के अंतर्गत माना है। सगुण धारा की रामाश्रयी शाखा में तुलसीदास, केशवदास, नाभादास, ईश्वरदास, अग्रदास आदि कवि प्रमुख हैं और कृष्णाश्रयी शाखा में सूरदास, कुंभनदास, नंददास, मीरा, रसखान, रहीम आदि कवि प्रमुख हैं। निर्गुण धारा की प्रेमाश्रयी शाखा के अंतर्गत जायसी, कुतुबन, मंझन आदि कवि प्रमुख हैं और ज्ञानाश्रयी शाखा के अंतर्गत कबीरदास, मलूकदास, पल्टूदास, रैदास आदि कवि प्रमुख हैं। भक्ति काल रचना संख्या एवं गुणवत्ता की दृष्टि से बेजोड़ है इसलिए इस काल को स्वर्ण काल के नाम से भी जाना जाता है।

3. रीति काल

इस काल में रचित ग्रंथों में रस, अलंकार एवं ध्वनि की मूल प्रवृत्ति के कारण आचार्य शुक्ल जी ने इस काल को रीति काल का नाम दिया था। श्रृंगार रस की बहुलता के कारण कुछ विद्वानों ने इस काल का नामकरण श्रृंगाल काल के रूप में भी किया था लेकिन इस काल का नामकरण रीति काल ही सर्वमान्य एवं सर्व प्रचलित है। रीति काल की समय सीमा विक्रम संवत 1700 से 1900 तक मानी गई है। इस काल के सभी कवि प्रायः राजाओं के आश्रित कवि थे इसलिए इन कवियों की रचनाओं का मूल उद्देश्य अपने राजाओं की प्रशंसा करना अथवा उनका मनोरंजन करना था। उस काल के दौरान समाज में विलासिता का बोलबाला होने के कारण कवियों द्वारा श्रृंगारिकता की सीमा को लांघकर राधा – कृष्ण की प्रेमलीला के नाम पर अश्लीलता को भी परोसा गया था। इस काल में भूषण ही केवल मात्र एक ऐसे कवि हैं जिन्होंने श्रृंगार रस को छोड़कर वीर रस में अपनी कविताएँ लिखी हैं। इस काल के कवि भावुक, सहृदय औप निपुण कवि थे इसलिए उनकी रचनाओं में रसों (विशेषतः श्रृंगार रस)

और अलंकारों की बहुत ही सरस एवं हृदयग्राही बाहुल्यता मिलती है जिससे इस काल के नामकरण की सार्थकता प्रकट होती है।

4. आधुनिक काल

आधुनिक काल रीति काल के बाद का वह काल है जब राजभाषा हिंदी का चहुंमुखी विकास हुआ। आधुनिक काल की समय सीमा विक्रम संवत 1900 से अभी तक मानी गई है। इस काल को हिंदी भाषा साहित्य का सर्वश्रेष्ठ काल भी माना जाता है। इस काल में पद्य के साथ-साथ गद्य, कहानी, समालोचना, नाटक, एकांकी एवं पत्रकारिता का भी विकास हुआ है। इस समय के दौरान गद्य साहित्य का ज्यादा विकास हुआ है इसलिए इसको गद्य काल भी कहा जाता है।

इस काल के आरंभ में राजा लक्ष्मण सिंह, भारतेंदु हरिश्चंद्र, जगन्नाथ दास रत्नाकर, श्रीधर पाठक, रामचंद्र शुक्ल आदि ने ब्रजभाषा में काव्य रचना की थी। इनके उपरांत भारतेंदु जी ने गद्य का समुचित विकास किया और आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने इसी गद्य को प्रांजल रूप प्रदान किया था। इस काल के प्रमुख लेखकों एवं कवियों में मैथलीशरण गुप्त, महादेवी वर्मा, रामकुमार वर्मा, सुभद्राकुमारी चौहान, गोपालशरण सिंह, माखन लाल चतुर्वेदी, श्यामनारायण पांडे, रामधारी सिंह दिनकर, जयशंकर प्रसाद आदि नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

देश के आजाद होने पर 14 सितंबर 1949 को संविधान सभा द्वारा देवनागरी लिपि के साथ हिंदी को राजभाषा घोषित किया गया और यहीं से हिंदी को इसके विकास के लिए ऐसे पंख लगे कि आज यह विश्व पटल पर अपनी अमिट पहचान बना चुकी है। हिंदी का विकास के लिए सन् 1960 में गठित वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग द्वारा हिंदी का पारिभाषिक शब्दकोश तैयार किया गया है। आज हमारे पास विभिन्न प्रयोजनमूलक विषयों से संबंधित हिंदी के पारिभाषिक शब्द उपलब्ध हैं। जनसंचार एवं पत्रकारिता के क्षेत्र में तो हिंदी ने एक बहुत बड़ा मुकाम पा ही लिया है लेकिन साथ-साथ मनोरंजन एवं टीवी तथा सिनेमा जगत में भी बहुत बड़ी उपलब्धि हासिल की है। भारत सरकार के अथक प्रयासों से आज विज्ञान, वाणिज्य, प्रबंधन, चिकित्सा, अभियांत्रिकी, प्रौद्योगिकी न्याय आदि विषयों से जुड़े विषयों की उच्च शिक्षा से संबंधित अध्ययन सामग्री तैयार की जा रही है।

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी हिंदी की भूमिका बढ़ी है। विश्व पटल पर हिंदी को आगे बढ़ाने में बहु-राष्ट्रीय कंपनियाँ जैसे गूगल, फेसबुक, एप्पल आदि महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। हिंदी कंप्यूटिंग के क्षेत्र में गूगल के पास माइक्रोसॉफ्ट से कहीं ज्यादा उन्नत तकनीक एवं सुविधाएँ उपलब्ध हैं। अब तो कंप्यूटर के क्षेत्र में दुनिया की सर्वश्रेष्ठ एवं सुविधाजनक लिपि देवनागरी मानी जाने लगी है। गूगल अपने प्लेटफार्म में हिंदी में टाइप करने की सुविधा हर प्रकार से दे रहा है – जिसमें बोलकर, फोनेटिक आदि बड़े नायाब तरीके एवं उन्नत तरीके उपलब्ध हैं। साथ में मुफ्त हिंदी वर्तनी जाँच की सुविधा भी उपलब्ध है। इन सुविधाओं के कारण विदेशों में रहने वाले भारतीयों तथा उनके संपर्क में आने वाले विदेशियों के बीच भारतीय संस्कृति और भारतीय भाषाओं को सीखने की रुचि बढ़ी है। इसी का परिणाम है कि कई विदेशी विश्वविद्यालयों ने भारतीय अध्ययनों को बढ़ावा देने के लिए अपने यहाँ हिंदी सीखने के लिए अध्ययन केंद्र स्थापित किये हैं। साथ ही हिंदी के शिक्षण और अनुसंधान को बढ़ावा देने के लिए हिंदी विभागों की भी स्थापना की है।

अगर हिंदी साहित्य लेखन की बात की जाए तो हिंदी साहित्य में हिंदी पुस्तकों का अथाह सागर भरा पड़ा है अर्थात् हिंदी साहित्य बहुत ही समृद्ध साहित्य है। हिंदी साहित्य की सभी विधाओं में काफी लेखन कार्य हुआ है और आज भी सभी विधाओं में लेखन कार्य अनवरत रूप से जारी है। हिंदी साहित्य को बढ़ावा देने की दिशा में भारत सरकार तथा राज्य सरकारों द्वारा वित्तपोषित हिंदी साहित्य अकादमियों का विशेष योगदान रहा है। ये सभी अकादमियाँ हमारे उभरते हुए हिंदी लेखकों को आर्थिक मदद करने के साथ-साथ उन्हें अलग-अलग विधाओं के लिए पुरस्कृत करके लगातार हिंदी साहित्य लेखन के प्रति प्रोत्साहित करती रहती हैं। इसके अलावा समय-समय पर हिंदी साहित्यकारों की साहित्यिक गोष्ठियाँ एवं संगोष्ठियाँ भी आयोजित करती रहती हैं जिससे हिंदी साहित्यकारों को अपने विचार साझा करने के लिए एक मंच मिल रहा है। आज हमारे पास हिंदी पुस्तकों एवं पत्रिकाओं का अपार भंडार है। इसके अलावा सूचना प्रौद्योगिकी के बढ़ते प्रभाव के कारण हिंदी की ऑनलाइन पत्रिकाएँ और पुस्तकें भी काफी प्रचलन में आ गई हैं जो अत्यंत सुगमता से पाठकों को उपलब्ध हो जाती हैं और बहुत ही कम खर्च में प्रकाशित हो जाती हैं। इस प्रकार से हिंदी साहित्य के सृजन में भी दिन दूनी रात चौगुनी प्रगति हो रही है।

हमारी हिंदी हमारे देश की पहचान है क्योंकि भाषा से ही देश की पहचान होती है और देश से भाषा की पहचान होती है अर्थात् दोनों ही एक दूसरे के पूरक हैं। राजभाषा हिंदी हमारे पूरे देश की संस्कृति को संजोए हुए है और राष्ट्र को संगठित रखने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। हिंदी का पूरे विश्व में निरंतर प्रभाव बढ़ रहा है क्योंकि इसे समझना और सीखना अन्य भाषाओं की अपेक्षा ज्यादा आसान है। आज हमारी राजभाषा हिंदी पूरे विश्व में अपनी पैठ बनाती जा रही है। विश्व के हर कोने में जहाँ-जहाँ हमारे भारतीय रहते हैं या वे वहाँ के नागरिक बन चुके हैं, वे सभी हमारी हिंदी को दिलो जान से चाहते हैं। आज के आधुनिक युग में सूचना प्रौद्योगिकी के बढ़ते प्रभाव के कारण पूरा विश्व ही सिमट कर बहुत छोटा हो गया है। वैश्वीकरण के कारण सभी देश एक दूसरे से किसी ना किसी तरह से जुड़े हुए हैं या जुड़ते जा रहे हैं और लोगों के बीच की दूरियाँ लगातार घटती जा रही हैं। इसके परिणामस्वरूप पर्यावरण, संस्कृति, राजनैतिक व्यवस्थाएँ, आर्थिक विकास के साथ-साथ भाषाएँ भी विकसित हुई हैं। वैश्वीकरण के इस सकारात्मक प्रभाव से हमारी राजभाषा हिंदी भी अछूती नहीं रही है, हमारी हिंदी भी दिन दूनी रात चौगुनी तरक्की कर रही है। आज राजभाषा हिंदी पूरे विश्व में हमारी सांस्कृतिक विरासत को आगे बढ़ाने में सार्थक सिद्ध हो रही है और विश्व क्षितिज पर अपना परचम लहरा रही है।

हिंदी उन सभी गुणों से अलंकृत है
जिनके बल पर वह विश्व की साहित्यिक
भाषाओं की अगली श्रेणी में सभासीन
हो सकती है।

- मैथिलीशरण गुप्त

कोई नहीं चाहता

भावेश पटेल
वरिष्ठ व्यावसायिक सहायक

अच्छा भोजन सबको चाहिए,
पर खेती करना कोई नहीं चाहता।

शुद्ध पानी सबको चाहिए,
पर पानी बचाना कोई नहीं चाहता।

गाय का दूध सबको चाहिए,
पर गाय पालना कोई नहीं चाहता।

ठंडी छाया सबको चाहिए,
पर पेड़ लगाना कोई नहीं चाहता।

घर में बहू सबको चाहिए,
पर बेटी बचाना कोई नहीं चाहता।

भविष्य में पेंशन सबको चाहिए,
पर पैसा बचाना कोई नहीं चाहता।

स्वस्थ शरीर सबको चाहिए,
पर व्यायाम करना कोई नहीं चाहता।

माता-पिता की दौलत सबको चाहिए,
पर उनको रखना कोई नहीं चाहता।

जीवन में सफलता सबको चाहिए,
पर मेहनत करना कोई नहीं चाहता।

सम्मान लेना सबको चाहिए,
पर सम्मान देना कोई नहीं चाहता।

प्रतियोगिता जीतना सबको है पर,
भाग लेना कोई नहीं चाहता।

कविता सुनना सबको है,
पर ताली बजाना कोई नहीं चाहता।

भारतीय संस्कृति व धर्म की सही पहचान

प्रोफेसर विशाल गुप्ता

'महाभारत' भारत वर्ष का एक महान ग्रंथ है। इसे भारत का पाँचवाँ वेद भी कहा गया है। यह विश्व का सबसे बड़ा ग्रंथ भी है जिसमें करीब एक लाख श्लोक हैं और दुनिया में सबसे ज्यादा पढ़ा जाने वाला ग्रंथ 'गीता' भी इसमें सम्मिलित है।

महाभारत का युद्ध एक धर्म-युद्ध था। वह एक अत्यंत भीषण व विनाशकारी युद्ध था जिसका उद्देश्य विश्व में धर्म की स्थापना करना था। युद्ध की शुरुआत में कुरुक्षेत्र के मैदान में करीब 47 लाख योद्धा थे जिनमें से 18 दिन के युद्ध के बाद सिर्फ 11 योद्धा (पाँच पांडव, श्री कृष्ण, सत्यकी, युयुत्सु, अश्वत्थामा, कृपाचार्य व कृतवर्मा) ही बचे थे।

'धर्म' क्या है और उसकी सही पहचान क्या है? महाभारत में धर्म शब्द को बार-बार दोहराया गया है- पिता-धर्म, पुत्र-धर्म, पत्नी-धर्म इत्यादि। यहाँ तक कि श्री कृष्ण भी युद्ध के दौरान अर्जुन से कहते हैं-

> **"यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत ।**
> **अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम् ।।"**
> (जब-जब धर्म की हानि होगी, तब-तब मैं धर्म की स्थापना के लिए जन्म लूँगा।)

आज के समाज में भी हम कई ऐसी घटनाएँ देखते हैं जो धर्म-संगत नहीं हैं। हम लोग अपना जीवन जीते तो हैं मगर यह नहीं समझते कि धर्म की सही परिभाषा क्या है। इस लेख में मैं महाभारत से जुड़ी दो बातें बताना चाहूँगा जिससे हमें धर्म को समझने में मदद मिलेगी।

1. धारयति इति धर्मः

धर्म शब्द संस्कृत भाषा के 'धृ' धातु से बना है जिसका अर्थ होता है - धारण करना। महाभारत में महर्षि वेदव्यास जी लिखते हैं कि धर्म वही है जो धारण करने योग्य है। धर्म-पूर्ण व्यवहार व कर्म वही है जो हमारे में प्यार, भाईचारा, न्याय व संवेदनशीलता जैसे गुणों को बढ़ावा दे। हमारे जीवन में ऐसे कई मौके आते हैं जहाँ पर हमें दो सही या दो गलत विकल्पों में से एक का चुनाव करना होता है। इसे ही 'धर्म-संकट' कहते हैं। महाभारत के युद्ध में पांडवों के सामने भी धर्म-संकट खड़ा हुआ - या तो वे युद्ध हार जाएँ या फिर कुछ छल का सहारा लेकर युद्ध जीत जाएँ।

ऐसे समय में श्री कृष्ण उनके सहायक बने और उनको वह कार्य करने को प्रेरित किया जिससे समाज में संवेदना, प्यार व न्याय जैसे मूल्यों को बढ़ावा मिले।

2. धर्म एव हतो हन्ति, धर्मो रक्षति रक्षितः

महाभारत में महर्षि वेदव्यास कई जगह लिखते हैं - "धर्म एव हतो हन्ति, धर्मो रक्षति रक्षितः" अर्थात "जो धर्म की हानि करता है, धर्म उसकी हानि करता है, और जो धर्म की रक्षा करता है, धर्म भी उसकी रक्षा करता है।

महाभारत के युद्ध में कौरव सेना के पास पांडव सेना से करीब 10,40,000 सैनिक ज्यादा थे। सैनिकों के साथ-साथ कई महान योद्धा जैसे- भीष्म, द्रोणाचार्य, कर्ण, दुर्योधन, अश्वत्थामा आदि भी कौरव सेना के पास थे। ऐसे समय में श्री कृष्ण पांडवों के साथ थे और इस ग्रंथ के माध्यम से हमें संदेश देते हैं कि यदि हम सही रास्ते पर हैं तो ईश्वरीय शक्तियाँ भी हमारे साथ हैं।

'धर्म' की समझ भारत में कई सदियों पहले उत्पन्न हुई परंतु इसका सही संदेश आज की पीढ़ी से कहीं छुप गया है। हमारे पूर्वज हमें यह संदेश देते हैं कि हमें अपनी शक्ति व कार्यों को समाज के सतत विकास की ओर लगाना चाहिए और इस बात का पूर्ण विश्वास रखना चाहिए कि अगर हम सही काम कर रहे हैं तो ईश्वरीय शक्ति व आशीर्वाद सदैव हमारे साथ है।

आइए, इन सिद्धांतों को अपने जीवन में उतारें और अपने जीवन को धर्म-संगत व समाज के लिए उपयोगी बनाएँ।

बाबा जी का ढाबा

प्रोफेसर प्रशांत दास

अंबाला कैंट स्टेशन पर हर रात की तरह मध्यम भीड़ थी। हड्डियाँ कंपा देने वाली सर्दी थी उस रात। लेकिन इन सब से हरदीप सिंह को क्या! मोटा कच्छा, ऊनी पायजामा और उनके ऊपर मोटी पतलून। डबल बनियान, उसके ऊपर कुर्ता और लद्दाखी जॅकेट। ठंड का बाप भी कुछ न बिगाड़ पाए उनका। पगड़ी के नीचे एक लंबा मफलर ऐसे लपेट रखा था जैसे पिरामिड का कोई ममी हो।

चाय वाले से बोले: "भाई पंजाब मेल कब आने की?"

चाय वाले को साफ़-साफ़ सुनाई तो नहीं दिया, लेकिन आधी रात गये, इस प्लॅटफॉर्म पर लोग अक्सर यही सवाल पूछते हैं, यह सोचकर उसने तुरंत जवाब दागा: "राजपुरा से चल चुकी साहब। आद्धे घंटे मे यहाँ पर होनी चाहिए"।

"ठीक है, तो दूध-पत्ती बना एक", हरदीप सिंह ने आदेश दिया: बिल्कुल वैसे ही, जैसे एक सरकारी बाबू अपने डिपार्टमेंट के चपरासी को देते हैं।

कुछ देर मे जब ट्रेन की सीटी सुनाई दी, तो हरदीप ने चैन की साँस ली। ज़्यादा लोग नहीं थे प्लॅटफॉर्म पर। मतलब कि ट्रेन रुकेगी, तो आसानी से डब्बे में चढ़ने को मिल जाएगा।

लेकिन साहब, ट्रेन आई, और किसी जनरल डब्बे का दरवाज़ा ही नहीं खुला! दशहरे के मौसम में ऐसा अक्सर होता है। अमृतसर में ही डब्बे भर जाते हैं। आने वाले स्टेशनों से और लोग ना आ जायें, इस जोखिम को कम करने के लिए सवारी अंदर से चारों दरवाज़ों की चटखनियाँ लगा लेती हैं।

हरदीप सिंह का गुस्सा बवाल पर था। फिर भी मिन्नते माँगी, पर किसी ने डब्बे का दरवाज़ा ना खोला। दस मिनट ही तो रुकती है ट्रेन वहाँ पर। दौड़कर अगले डब्बे के दरवाज़े तक गए। वह भी बंद। कोई समाजशास्त्री वहाँ हो तो उसका दिल पसीज जाए। ऐसे समयों में कितना सामंजस्य बन जाता है नागरिकों में। डब्बे के अंदर कितनी भी डाइवर्सिटी हो, सबकी सोच एक जैसी हो जाती है। डब्बे के अंदर बैठे लोगों के अधिकारों की रक्षा करना सर्वधर्म समभाव का प्रतीक बन जाता है।

जब दूसरे डब्बे का दरवाज़ा भी ना खोला गया, तो हरदीप सिंह गाली गलौज पे उतार आए: "कुत्तों, ये ट्रेन क्या तुम्हारे बाप ने खरीद रखी है जो अंदर से दरवाज़ा बंद कर लिया है? मेरे पास भी टिकट है! खोल वरना पिछवाड़े में आग लगा दूँगा!" किसी ने फिर भी ना खोला। भागते हुए उसी डब्बे के दूसरे दरवाज़े तक गए। दरवाज़े के बगल वाली सीट की खिड़की थोड़ी-सी खुली थी। एक भाईसाहब ने तंबाखू थूकने के लिए अपना मुँह बाहर निकाला ही था कि हरदीप सिंह ने उनकी चोंच पकड़ ली मुट्ठी में। अगले ही पल उनका हाथ खिड़की के अंदर था और तंबाखू वाले भाईसाहब का गला ज़ोर से दबा रहा था। भाईसाहब की धर्मपत्नी आतंक से चीख उठी: "अरे मोनू, बाबूजी की जान चली जाएगी.... जल्दी जा, दरवाज़ा खोल दे। इस राक्षस को आने दे अंदर।" मोनू दरवाज़े की ओर लपका। दूसरे यात्रियों ने उसे जकड़ने की कोशिश की, मानो मोनू किसी फ़िदायीन मिशन पर जा रहा हो। लेकिन अपने बाबूजी की जान का मोह था, मोनू ने खुद को छुड़ाया और दरवाज़ा खोल डाला।

हरदीप सिंह ने तुरंत अपना दाहिना पैर डब्बे मे घुसेड़ दिया ताकि वह बंद ना किया जा सके। प्लॅटफॉर्म से अपना बैग उठाया और खुद को डब्बे मे झौंक दिया। उनके पीछे एक और बूढ़े बाबा हो लिए। उनके साथ एक लड़की थी और उसका नवजात शिशु भी। कोई और नहीं था। इतने में ट्रेन चल दी। टॉयलेट के पास ही इन नव-प्रविष्ट यात्रियों ने अपना डेरा डाल दिया। तंबाखू वाले भाईसाहब की पत्नी की तरेरती हुई आँखों का सामना करने की हिम्मत हरदीप सिंह में कहाँ थी! जो दूसरे लोग थे, उनके चेहरे की भंगिमायें अब लुप्त-सी

हो रही थी। ट्रेन चल चुकी थी, जोखिम ख़त्म हो गया था।

आधे घंटे बाद यमुना नगर आया। लेकिन प्लॅटफॉर्म खाली-सा था। ना कोई ट्रेन से उतरा ना कोई चढ़ा। ट्रेन फिर से मचलती हुई चल दी। इतने में बगल में बैठे बाबाजी ने बीड़ी पीना शुरू कर दिया था। धुआँ इतना कि बगल में बैठी चाची से झेला ना गया और उन्होंने उल्टी आने की शिकायत कर दी। चाचाजी ने बड़ी मिन्नतें कर खिड़की खुलवाई और एक दरवाज़ा भी ताकि हवा ताज़ी हो सके। ठंडी हवा डब्बे में ऐसे घुसने लगी जैसे पुंछ के पहाड़ों में सीमा पार से घुसपैठिए आ जाते हैं। हरदीप सिंह को खून जमा देने वाली इस हवा से दिक्कत नहीं थी। लेकिन रुड़की स्टेशन आने ही वाला था। वहाँ से जनरल डब्बे में काफ़ी जनता चढ़ती है ट्रेन पर, इसका उनको अंदाज़ा था। हरदीप सिंह चीखे: "अरे चाची, रोक ले उल्टी दो मिंट। दरवाज़ा बंद करणा है हमें। लोग ना चढ़ जाएँगे !?!... ऐसा लगता है ये ट्रेन ना हुआ, बाबा जी का ढाबा हो गया। सबको इसी पर चढ़ना है।" इतना कह कर हरदीप सिंह दरवाज़ा बंद करने को लपके। ऐसा लगता था मानो सिकंदर की सेना का नेतृत्त्व करने सेल्यूकस स्वयं भागा हो।

तुम आँसू ना बहाना

प्रशांत पुरोहित
अकादमिक सहयोगी

जब मैं चला जाऊंगा, तुम आँसू ना बहाना।

तीये की बैठक ना रखना, ना किसी को बुलाना।

कुछ तुम आना, कुछ मेरी यादों को लाना।

चार दोस्तों के बीच बैठकर,
मेरी कहानियाँ और हमारे किस्से सुनाना।

तुम हँसना, मुस्कुराना,
मेरी यादों में खोकर तुम झूम कर दिखाना।

तुम उन रस्तो पे जाना,
जहाँ मुझसे मिला करते थे।
और, वहाँ अपनी रूह से मेरे एहसास को मिटाना।

बस एक बात याद रखना,
जब मैं चला जाऊँ तुम आँसू ना बहाना।

यूँ ही किस्मत का लेखा जोखा होता देखा

प्रोफेसर चित्रा सिंगला

परसों एक बेटे को अरबपति पिता के
साथ स्टेज पर बैठे देखा,
उसी पिता के दूसरे बेटे को दर्शकों में सब से
आखिरी सीट पर देखा,
लोगों को एक बेटे को प्रतिभाशाली तो दूसरे को
मंदबुद्धि कहते देखा,
लोगों की बातें सुन बेटों की माँ का दिल
पसीजते हुए देखा।

यूँ ही किस्मत का लेखा जोखा होता देखा ...

कल एक मजदूर के बच्चे की मोटी- मोटी
आँखों में चमक को देखा,
उसको देख अपने बच्चे के बचपन की यादों को
आते देखा,
लोगों को उस बच्चे को अनदेखा,
और मेरे बच्चे की आँखों की चमक में उज्ज्वल
भविष्य बताते देखा,
दोनों बच्चों की एक समान चमक में अलग-अलग
परिस्थितियों का खेल देखा।

यूँ ही किस्मत का लेखा जोखा होता देखा ...

आज सुबह की सैर पर खुद को फूलों और प्रकृति
का आनंद उठाते देखा,
और दूसरी तरफ से हेलमेट और टिफिन उठाते
आते हुए मजदूरों को देखा,
आज बेटे को हिंदी के पाठ में कर्म का मतलब
उपकार बताते देखा,
खुद को उपकार छोड़, पब्लिकेशन, प्रेस्टीज और
पैसे के पीछे भागते हुए देखा।

बस यूँ ही किस्मत का लेखा जोखा होता देखा।

भ्रष्टाचार का विरोध करें; राष्ट्र के प्रति समर्पित रहें

मृदुल जोशी,
पति, बिन्दु डोडिया

मानव अपने अस्तित्व में आनंद को बनाये रखने व प्रतिरोध को निष्फल करने के लिए कई प्रकार के सरलतम मार्गों का चयन करता है, जिनमें से भ्रष्टाचार भी एक सरलतम मार्ग के रूप में मनोनीत होता है। और मानव की यह एक बुद्धिमत्ता पूर्ण व्यवस्था है कि वह विकल्प के लिए लालायित रहता है। पर सरलतम मार्ग का चयन अगर सामाजिक हित में हो तो इसकी स्वीकृति अनिवार्य-सी हो जाती है, किन्तु यही चयन अगर सामाजिक अहित का हेतु बन के भ्रष्टाचार जैसा उपस्थित होता है तो इस मार्ग की स्वीकृति एक भयावह स्थिति को साकार कर सकती है। पुरातन काल से लेकर वर्तमान तक मानव ने अपने लिए सामाजिक हित को चुना है लेकिन कई अवसरों पर वह सामाजिक हित सदृश्य मार्ग चयन करके सामाजिक अहित अथवा भ्रष्टाचार करता रहा है। कतिपय विचार भ्रष्टाचार को प्रशासकीय व्यवस्था से उपजा एक राजतंत्र के लिए उपयोग का औजार मानते हैं। पर भ्रष्टाचार व्यवस्थागत उपज के उलट एक मानवीय भूल है या अन्य शब्दों में कहिये तो कर्म सम्पादन में प्रमाद के लिए मानवीय मोह का परिणाम है। निश्चित ही मानव समाज का एक अंश ही है तो यह उसके द्वारा सम्पादित अनैतिक कर्म यानी भ्रष्टाचार एक सामाजिक धरा पर उपजा विष है, जिसे पोषण समाज के अंश ही देते हैं। इस बात का सत्यापन महात्मा गाँधी के कथन "मैं अपने मन-मस्तिष्क में मलीनता में सने पाँव वाले किसी भी ऐसे व्यक्ति को आने नहीं दूँगा", से हो जाता है। अनीति के विरोध के लिए अगर मानव एक इकाई के रूप में प्रतिबद्ध है तो भ्रष्टाचार असफल होगा अन्यथा नहीं। राष्ट्र कई समाज की संगृहित अवधारणा है और भारत तो एक बहु-सांस्कृतिक तथा बहु-धार्मिक राष्ट्र भी है। अतः भारत जैसे राष्ट्र के लिए भ्रष्टाचार, एक विजातीय तत्व है। राष्ट्र की सुचारू गतिविधियों के लिए नियमन में किसी भी प्रकार के विजातीय तत्व का प्रस्तुत रहना एक अस्वीकार्य स्थिति है। और यह समर्पण व्यक्तिगत रूप से होकर सामाजिक व अति-सामाजिक स्तर पर परिलक्षित होना चाहिए और यही राष्ट्र के लिए समर्पित होने का एक अनन्य भाव भी होगा।

राष्ट्र और भ्रष्टाचार : विभेद एवं प्रभाव

सामाजिक अहित का चयन ही भ्रष्टाचार है। व्यवस्थाएँ नियामक व प्रतिबद्ध कर्म सूचक हैं। और नियमित कर्म के सम्पादन में एक प्रतिरोध ही भ्रष्टाचार का जनक है। मानव स्वयं एक व्यवस्था है व इसी धारा में समाज भी संगृहित व्यवस्थाओं की एक व्यवस्था है। एक अकेला मानव प्रकृति का अंश बनकर समाज का निर्माण करता है, और मानवों की बहुलता, एक मानव समाज का निर्माण करती है और बहुत से समाज या एक ही समाज किसी एक विशेष क्षेत्र के सामाजिक अस्तित्व को राष्ट्र संबोधित कर सकते हैं। राष्ट्र कुछ नियमों में सम्बद्ध होकर अपनी व्यवस्थाओं का सुचारू वहन करता है। हम यहीं एक राष्ट्र की तुलना यंत्र से करें तो कई समानताएँ उभरकर आती हैं। यंत्र के पुर्जे अगर दिष्ट नियम से अगर भटक जाए तो यंत्र काम ही नहीं कर पायेगा। जैसे एक कार है। अगर उसके दो पहिये उलटे चलने लगे तो कार कभी चल ही नहीं पायेगी। इसी तरह सरकारी, गैर सरकारी अथवा निजी संस्थान के कार्यरत व्यक्ति को एक निश्चित वेतन पर नियत कार्यभार प्रदान होता है, और इस नियमन से विलगता ही राष्ट्र के प्रति द्रोह जैसा आचरण सिद्ध होता है। असंवैधानिक नियमावली का पालन और इसका अन्य मानवों में प्रचार और अनुमोदन ही राष्ट्र के प्रति समर्पण की कमी का पर्याय है।

मूल रूप से यह भ्रष्ट आचरण दो विभेद में उल्लेखित किया जा सकता है। कोई भी आचरण एक तो प्रत्यक्ष रूप में भ्रष्ट है या परोक्ष रूप में। जहाँ लाभ प्रयत्क्ष है, जैसे कोई नियत कार्य के लिए अतिरिक्त राशि की माँग, किसी की अनैतिकता का पक्षपात (जैसे उत्कोच (bribe) के माध्यम से स्वयं की

आय सिंचित करना), राष्ट्र की सम्पत्ति का व्यक्तिगत लाभ के लिए अधिग्रहण, स्वयं के लाभ हेतु अन्य की हानि आदि। प्रत्यक्ष भ्रष्टाचार में भी व्यक्ति सीधे तौर पर लिप्त होता है और इससे राष्ट्र को त्वरित व अधिकतम हानि होती है। परोक्ष भ्रष्टाचार में व्यक्ति एक व्यापारी जैसा व्यवहार करके स्वयं की प्रत्यक्ष लिप्तता को अल्पतम करके दूरगामी लाभित परिणाम में लिप्त होता है। किसी के अनैतिक आचरण को अनदेखा करके उससे अन्य लक्षित लाभ का सेतु बाँधना अथवा किसी को अनैतिक लाभ में लिप्त कर उससे अपने हित साधने की नीति तैयार करना आदि ये सब परोक्ष रूप से राष्ट्रद्रोह और राष्ट्र के प्रति समर्पण की भावना में कमी का लक्षण है। राष्ट्र के प्रति समर्पित न होने में एक भ्रष्टाचार सदृश एक उप-विभेद और है। यह प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष दोनों विभेद में उपस्थित है। नागरिक का अनीति के विरोध में अकर्मण्य अथवा अनीति होते वक्त तटस्थ रहना।

असमर्पित नागरिक और भ्रष्टाचार की भयावहता :

आचार व व्यवहार में नीतिगत नागरिक होना और राष्ट्र के प्रति समर्पित होने से गरीबी दूर होना और विकासशील होना अपरिहार्य है। अपवित्र अथवा भ्रष्ट-आचार और राष्ट्र के प्रति विलगता सामाजिक प्रतिष्ठा और प्रगति के लिए हानिकारक हैं। ट्रांसपेरेंसी इंटरनेशनल जैसी वैश्विक स्वायत्त संस्था के द्वारा 'भ्रष्टाचार बोध सूचकांक' 2023 (CPI) जारी किया जाता है जो कि बहुत मायनों में राष्ट्र के लोगों को प्रेरित करता है कि वे भ्रष्टाचार को अल्पतम करें। अमूमन 75% से 90% भारतीय अपेक्षित लाभ के लिए उत्कोच(bribe) का आदान-प्रदान स्वेच्छा से और निर्भीक होकर करते हैं, और इसमें उन्हें राष्ट्रद्रोह का भय ही नहीं हैं। इससे भयाक्रांत करने का कारण यह है कि ये सभी इस उत्कोच (bribe) व्यवस्था का अनुमोदन भी करते हैं। संवैधानिक पदों पर चयनित कई अधिकारी व उनके मातहत अपने नीयत अधिकारों का दुरुपयोग कर राष्ट्र के लिए एक मानसिक विलगता को आश्रय देते हैं। भारत जैसे राष्ट्र में भ्रष्टाचार हानिकारक रसायन बनकर सामाजिक माध्यम को प्रदूषित कर रहा है।

राष्ट्र के लिए समर्पण इन भ्रष्ट नागरिकों के लिए एक फूहड़ कल्पना है, और इस विचार के चलते उनकी निर्भीकता अन्य नागरिकों को उनके कहे अनुसार सोचने पर विवश कर देती है। यही नकारात्मक सोच अन्य सभ्य नागरिको को संकोच में डाल देती है और वे अपने मूल सभ्यता के स्वभाव में भ्रष्ट व्यवहार को प्रश्रय देने लगते हैं। निजी संस्थान भी सरकार से व्यापारिक लाभ हेतु पार्टी चंदा के उपनाम में कतिपय विशिष्ट राजनैतिक नेतृत्व को वैधानिक उत्कोच (bribe) का प्रसाद देते हैं। इस तरह से प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष लाभ के लिए राष्ट्र की नीतियों को अनदेखा करना निश्चित राष्ट्र के लिए विलगता की भावना है।

भ्रष्टचार से मुक्ति और राष्ट्र को समर्पित जीवन :

सामाजिक प्रश्रय से भ्रष्टाचार को बल मिला हुआ है और जनमानस इसकी स्वीकार्यता को व्यवहारिक मान चुका है। एक वेबसीरिज है "अस्पैरंट्स" (Aspirants), उसमें एक मजदूर नेता कुछ मजदूरों को लेकर एक उद्यमी के खिलाफ आन्दोलन कर देता है, कि उन्हें बोनस चाहिए। बात डिस्ट्रिक मजिस्ट्रेट तक पहुँचती है। वह उन्हें समझाने की कोशिश करते हैं। इस बीच लेबर ओफिसर उद्यमी पर एक जाँच बैठा देता है। तो उस जाँच को रुकवाने के लिए उद्यमी मंत्री का दबाव डलवाता है डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट पर। लेकिन मजिस्ट्रेट झुकने से मना कर देता है। है तो ये बहुत ही नाटकीय भाव में, पर ना कहना भी जरूरी है। बस यह एक ना कहना ही हमें सदाचारी और राष्ट्र के लिए समर्पित कर सकता है। कर तथा बिजली की चोरी, सरकारी व निजी संसाधन का दुरूपयोग, संवैधानिक पद से आकूत लाभ की इच्छा आदि को ना कहना होगा। किसी भी राष्ट्र में भ्रष्टाचार के कई कारण होते हैं, किन्तु मूल रूप से एक कारण है, जो सभी अन्य कारणों का पोषक है। वह कारण है अशिक्षित नागरिक।

जॉन ऍफ़ केनेडी ने कहा था, "यह मत पूछो कि अमेरिका तुम्हे क्या दे सकता है, यह पूछो कि तुम अमेरिका को क्या दे सकते हो"। आप इस वाक्य में अमेरिका की जगह राष्ट्र रख कर सोचें कि आपका जरा-सा समर्पण राष्ट्र को शक्तिशाली बना सकता है, समृद्ध बना सकता है। शक्तिशाली और समृद्ध राष्ट्र होने के लिए भ्रष्टाचार से मुक्त होना ही होगा। ऐसा राष्ट्र जिसके जनमानस में नैतिक मूल्यों और नियम पालन के लिए एक दृढ़ इच्छा हो और वह कठिन परिस्थितियों में भी नहीं डिगे। भारत में 1860 में भ्रष्टाचार निरोधक कानून बनाया गया था, और 1988 में फिर उसमें कई और प्रविष्टियाँ लागू की गयीं थी। क़ानून सख्त है लेकिन उनका अनुपालन भी आनिवार्य है।

शिक्षा व जागरूकता : अशिक्षित जनमानस में भय

होता है। शिक्षित जनता निर्भीक होती है और भ्रष्टाचार के प्रति जागरूक रहकर राष्ट्र के लिए समर्पित होती जाती है । अन्य नागरिकों को भी जागरुक करके तथा स्वयं भी भ्रष्टाचारियों के लिए प्रतिकार उत्पन्न कर सकती है। शिक्षित नागरिक कई अन्य को भ्रष्टाचार के लिए सचेत कर देता है और स्वयं को अधिक जागरूक बनाने लगता है। शिक्षा में नैतिकता का पाठ दूरगामी परिणाम देता है और नागरिक, भ्रष्ट आचरण से दूर रहता है। शिक्षित नागरिक प्रशासनिक पारदर्शिता के कारक बन जाते हैं और ये ही राष्ट्र के लिए सच्चा समर्पण है। सरकार प्रशासनिक पारदर्शिता को अपना कर जनमानस को भ्रष्टाचार मिटाने के लिए प्रोत्साहित कर सकती है। सरकारी कार्य की गुणवत्ता, सरकार और समाज की कार्य प्रणाली की नीतिगत होने की समर्थता व सार्थकता पर जोर दिया जाता है।

भ्रष्टाचार को रोकने में तकनीकी का लाभ लिया जा सकता है। तकनीकी से निगरानी और कार्यक्षमता को बढ़ाकर राष्ट्र के लिए अतुलनीय कार्य किया जा सकता है। एक राष्ट्र के लिए समर्पित होने वाले नागरिक के नाते यदि, अच्छे आचरण, बेहतर कार्य कुशलता और उपलब्धियों पर प्रोत्साहन व प्रशंसा पत्र दिया जाये तो भ्रष्टाचार को हटाया जा सकाता है। अगर मात्र इसी सोच के साथ आगे बढ़ा जाए कि मुझे एक राष्ट्र के नागरिक होने के बाबत राष्ट्र की जिम्मेदारी मेरे पर है तो भ्रष्टाचार को ना कहने में ज्यादा साहस की जरुरत नहीं होगी।

अहा, यह ज़िंदगी..

वनिता मुदलियार
संकाय सचिव

कभी चंचल, कभी ढीठ,
कभी नदी, कभी सागर,
कभी बादल, कभी हवा,
कभी बूँद, कभी बारिश,
कभी कठोर, कभी मुलायम,
कभी बंद, कभी खुली हुई सी,
कभी सहमी हुई, कभी फैली हुई..
कभी भ्रमित, कभी चकित..
बताओ.. कौन..?
अहा, यह ज़िंदगी..।

सरकारी बाबू

धर्मेश रावल
सहायक प्रबंधक

सरकार बदले, नेता बदले, बदले अफसर अनेक,
पर बाबू काम चलाते हैं।
बाबू पढ़े हैं हिंदी माध्यम, नेताजी तो अँग्रेज़ी वाले,
पर बाबू काम चलाते हैं।
बजट बनते, योजना बनती, बनती हैं रणनीतियाँ,
बाबू तो बस काम चलाते हैं।
क्रेडिट लेते नेता, अफसर और,
बाबू तो बस काम चलाते हैं।
नेता खाये मेवा-मिष्ठान्न और,
बाबू टिफिन से काम चलाते हैं।
नेता जी को गाड़ी-बंगला,
बाबू दो रूम के मकान से काम चलाते हैं।
बीवी को महँगी साड़ी,
बाबू दो जोड़ी से काम चलाते हैं।
बच्चे माँगे बडी गाड़ी,
बाबू स्कूटर से काम चलाते हैं।
जल, स्थल, या हो प्रलय,
बाबू तो दफ्तर आते हैं।
निंदा करते, गाली देते सब सरकारी बाबू को,
पर काम तो बाबू ही आते हैं।
वही बाबू देश की रक्षा हेतु जल में लड़ते,
अगन से जलते,
पर काम तो वही चलाते हैं।
चंद्रयान हो या सूर्ययान, सभी को संभालते हुए,
बस पूर्ण निष्ठा से बाबू काम चलाते हैं।

जीत का सार

अभिषेक कुमार मिश्रा
अभिलेखाधिकारी

एक बार वक्त आया फिर से,
घिर आया फिर, वह संशय से।
'मुश्किल' ने फिर एक चाल चली,
वह चाल, बहुत विकराल चली।।

सब दोस्त, यार, सब ठिठक गए,
पीछे होकर, सब छिटक गए।
फिर भी पाता, खुद को सक्षम,
पर राह देखो, कितनी निर्मम।।

हर बार हौंसले टूट गए,
सब मित्र राह में छूट गए।
क्या करता फिर वह बेचारा,
जो शत्रु से नहीं, खुद से हारा।।

अब युद्ध तो फिर भी लड़ना था,
सबको हराकर, फिर बढ़ना था।
कैसे जा सकता, अब पीछे?
जब युद्ध सारे, रक्त से सींचे।।

अब मन में फिर एक टीस उठी,
हर शत्रु का काटने शीष उठी।
आशा के बीज भी ज़िंदा थे,
जब कायर करते निंदा थे।।

एक वक्त बड़ा, मुश्किल आया,
जब सत्य, असत्य से घिर आया।
फिर अट्टहास करते शत्रु,
उस वीर के रक्त को प्यासी भू।।

एक कदम बढ़ाना हुआ कठिन,
अब जीत को पाना हुआ कठिन।
एक कदम बढ़ाना हुआ कठिन,
अब जीत को पाना हुआ कठिन।।

जब कर्णधार सब, सो थे गए,
सारे शुभचिंतक, खो थे गए।
एक वीर अकेला हो था गया,
हर 'दिवस', 'निशा' में खो था गया।।

क्या ऐसा कलियुग आएगा?
बस झूठ जीतता जाएगा।
दुश्मन देखो, फिर भी भयभीत,
था याद उन्हें, उसका अतीत।।

हर युद्ध जीतता आया था,
'मानवता' को वर लाया था।
जब जैसे भी हों, रण आए,
हरा उसे, ना वो पाए।।
हरा उसे, ना वो पाए,
गिरा उसे, ना वो पाए।।

हर बार वह गिरकर फिर से उठा,
सर कटाकर भी, सब खो कर भी।
जब भी वो गिरा, हर बार उठा,
फिर देख उसका, अलिखित अतीत,
वृद्धि, उसकी, नित आशातीत।।
भगवान स्वयं दौड़े आए,
जब 'प्रेम' छिपा ना वो पाए।।

उसको उठाकर अभिषेक किया,
फिर लड़ने का, संदेश दिया,
नित लड़ने का, संदेश दिया।
गीता से जब यह ज्ञान मिला,
हर वीर को उसका मान मिला।

फिर युद्ध लड़ा, क्या खूब लड़ा,
फिर युद्ध लड़ा, क्या खूब लड़ा।
दुश्मन भागे, थर-थर काँपे,
हो जैसे, उसकी शक्ति भाँपे।।

फिर महादेव की आँख खुली,
देवों के देव, वे महाबली।
फिर सार जीत का समझाया,
उसको आया, जीना आया।।
जीना आया, अब आ ही गया।।

दुश्मन करते, नित छल प्रपंच,
चालाकी, निंदा, हर षडयंत्र।
वे वीर नहीं, डिगते रण में,
विश्वास करें, जो सत्कर्म में।।

धैर्य उनका, उनका कौशल,
लेकर जाता, मंजिल सकुशल।
रण जीतने भी मुश्किल होंगे,
मुश्किल होकर, निर्मम होंगे।
बेहद घातक, मृत्युतम होंगे।।

जीत उसी की होगी, जो,
नित आगे बढ़ता जाएगा।
नित आगे बढ़ता जाएगा,
हर युद्ध जो लड़ता जाएगा।।
वह जीत सदा ही पाएगा।।

वह कर्म करे, बस कर्म करे,
बस कर्म करे, नित धैर्य धरे।
अन्याय न कर, सत्कर्म करे,
इस सत्य की राह जो जाएगा,
वह सदा जीत ही पाएगा।
तूफानों से टकराएगा,
वह सदा जीत ही पाएगा।।

नित आगे बढ़ता जाएगा,
वह सदा जीत ही पाएगा।
सत्कर्म जो करता जाएगा,
वह सदा जीत ही पाएगा।
इस सत्य की राह जो जाएगा,
वह सब कुछ जीत कर आएगा।।

मंजिल

राहुल कुमार झा
अकादमिक सहयोगी-पीएसजी

जो चमकना तुम चाहो तो,

जलना भी सीखना होगा।

मंजिल की चाह अगर हो तो,

गिरकर सँभलना भी सीखना होगा।।

गैरों की इस दुनिया में,

अपनी खुदाई बचानी पड़ती है।

जो आगे निकलना हो तुमको तो,

अपनी राह बनानी पड़ती है।।

जो ठान लो तुम हद को अपनी (2)

लकीरें ही क्या मुकद्दर से तेरे,

तकदीर भी आकर लड़ती है।।

तुम जीतोगे, बस जीतोगे,

यह आवाज़ फ़िज़ा में गुँजेगी।

जब तुम भूलकर हर एक मुश्किल को,

ले प्रण रणांगन में कुदोगे।।

मैदान तुम्हारा ही होगा,

पर जीत सुनिश्चित जाओगे।

दुःख-सुख, मुश्किल, प्रेम-घृणा

को छोड़कर तुम

हर विकार को तुम सौम्य भाव से अपनाओगे (2)

जो चमकना तुम चाहो तो... ।।

एंग्जायटी (Anxiety)

विनय शर्मा
नर्सिंग अधिकारी

एंग्जायटी इंसान के लिए घातक है! यह मस्तिष्क को चोट देने के साथ ही शरीर को भी नुकसान पहुँचाती है। इस दौड़-भाग में हम लोगों की जिंदगी जैसी हो गई है उसमें एंग्जायटी का होना बहुत आम बात है। रिश्तों में विश्वास की कमी, एक दूसरे से आगे निकलने की दौड़, असुरक्षित महसूस करना, लड़ाई-झगड़ा, ग़लत व्यवहार, अनियमितता, समाज से दूर रहना, अपनी ही जिंदगी में लीन रहना यह सब बेचैनी के कारण हैं। एंग्जायटी तो हर किसी को होती है परन्तु इसे बीमारी के तौर पर पहचानना मुश्किल है। अगर कोई विशेष नकारात्मक विचार या परेशानी बहुत लंबे वक्त तक बनी रहे और उससे आपकी रोजमर्रा की जिंदगी पर असर पड़ने लगे तो ये वाकई खतरनाक है।

एंग्जायटी क्या है?

एंग्जायटी अवसाद, निराशा व दुःख से जन्म लेती है। जब हम अपनी भावनाओं को अनदेखा करते हैं तो वे हमारे दुःख का कारण बनती हैं। ठीक इसी प्रकार, नजरअंदाज किए जाने पर अवसाद एंग्जायटी का रूप ले सकता है।

इस स्थिति में व्यक्ति को हर वक्त इस बात का डर लगा रहता है कि कुछ गलत होने वाला है। एंग्जायटी के दौर में व्यक्ति को हर समय चिंता, डर व घबराहट महसूस होती है। इसके अलावा उल्टी तथा जी मिचलाने की समस्या भी महसूस होती है, दिल की धड़कन तेज हो जाती है और सांस फूलने लगती है। अगर ऐसा बार बार होता है तो चिकित्सक से जरूर संपर्क करें अन्यथा यह जानलेवा भी हो सकता है। जब भी कोई विचार अपने निश्चित स्तर से आगे बढ़ जाता है तो उसे एंग्जायटी कहते हैं।

विचार हमेशा एक निश्चित स्तर तक ही किये जाने चाहिए। सीमा से अधिक विचार कभी नहीं करना चाहिए। जब तक कोई भी विचार आपको परेशान ना करें तब तक वह सामान्य हैं परन्तु जब कोई विचार या सोच निश्चित स्तर से ऊपर जाकर आपको हैरान या परेशान करने लगे तब यह चिंता का विषय है।

एंग्जायटी के सामान्य लक्षण :-

1. बेवजह की चिंता करना
2. हृदयगति में बढ़ोत्तरी होना
3. छाती में खिंचाव महसूस होना
4. सांस फूलना
5. लोगों के सामने जाने से डरना
6. लोगों से बातचीत करने से डरना
7. लिफ्ट वग़ैरह में जाने का डर कि वापस नहीं निकल पाएंगे
8. जुनून की हद तक सफाई करना
9. बार-बार चीजों को सही करते रहना
10. जीवन से निराश हो जाना
11. ये सोचना कि आप मरने वाले हैं या कोई आपको मार देगा
12. पुरानी बातों को याद करके बेचैन होना
13. मांसपेशियों में तनाव बढ़ जाना
14. फालतू विचारों में बढ़ोतरी होना
15. बिना कारण के बेचैनी महसूस करना
16. गैरजरूरी चीज के प्रति बहुत लगाव होना
17. जल्दी निराश हो जाना
18. किसी चीज के लिए अनावश्यक आग्रह करना आदि

एंग्जायटी के प्रकार :-

1. सामान्य एंग्जायटी

2. अनियंत्रित जुनूनी प्रकार
3. सामाजिक चिंता प्रकार
4. डर या फोबिया
5. पोस्ट ट्रॉमेटिक स्ट्रेस डिसऑर्डर
6. घबराहट

एंग्जायटी के कारण :-

1. ज़्यादा चिंता करने लगना

छोटी सी छोटी बातों को ज़्यादा सोचना और ऐसा आप की जिंदगी में बार बार होना एंग्जायटी का ही लक्षण है। इसके चलते आप खुद के महत्वपूर्ण कामों को अच्छे से नहीं कर पाते।

2. तनावपूर्ण घटनाएँ

कार्य का बोझ, तनाव, अपने किसी प्रिय व्यक्ति का निधन अथवा प्रेमिका से ब्रेकअप जैसी अविश्वसनीय घटनाएँ आदि।

3. परिवार का इतिहास

जिन व्यक्तियों के परिवार में मानसिक विकार से जुड़ी समस्याएँ होती रही हैं, उन्हें चिंता विकार की समस्या जल्दी हो सकती है जैसे ओसीडी विकार एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में जा सकता है।

4. स्वास्थ्य से जुड़े मामले

थायरॉयड की बीमारी, दमा, डायबिटीज या हृदय रोग आदि। अवसाद से पीड़ित लोग भी एंग्जायटी की चपेट में आ सकते हैं। जो व्यक्ति लंबे समय से डिप्रेशन से जूझ रहा हो, उसकी कार्यक्षमता में गिरावट आने लगती है। इससे कामकाज से जुड़ा तनाव बढ़ने लगता है और फिर एंग्जायटी का जन्म होता है।

5. नशे का इस्तेमाल

पीड़ा, ग़म, मायूसी, उदासी व तकलीफ़ को भुलाने के लिए बहुत से लोग शराब, नशीली दवाओं और दूसरे नशों का सहारा लेने लगते हैं। यकीन मानें कभी भी ये चीज़ें एंग्जायटी का इलाज नहीं हो सकते हैं। नशे का इस्तेमाल समस्याओं को और बढ़ा देता है। नशे का असर खत्म होते ही फिर से वही परेशानियाँ बढ़ने लगती हैं।

6. व्यक्तिव से जुड़े विकार

कुछ लोगों को पूर्णतः के साथ काम करने की आदत होती है लेकिन जब ये पूर्णतः की जिद सनक बन जाए तो ये एंग्जायटी के अधीन आ जाता है। यही जिद उन लोगों में बिना वजह की घबराहट और चिंता को जन्म देती है।

एंग्जायटी के परिणाम :-

1. उत्तेजित हो जाना

जब कोई बहुत ज्यादा परेशान होता है तो उसका सहानुभूति तंत्रिका तंत्र बहुत तेज़ काम करने लगता है जिसके कारण दिल की धड़कन बहुत तेजी से बढने लगती है, पसीना आने लगता है, हाथ पैर कांपने लगते हैं और मुंह सूखना शुरू हो जाता है।

2. घबराहट हो जाना

ज्यादा कुछ सोचने पर असहजता और घबराहट होने लगती है जो कि एंग्जायटी का ही एक लक्षण है। यह बहुत हानिकारक हो सकता है। इससे पहले कि यह बढ़े, डाक्टर से मिलना ज़रूरी है।

3. थकान हो जाना

जब हमें ज्यादा थकान महसूस होने लगे तो सबसे पहले ये जानना ज़रूरी है कि ये सामान्य फ़ीलिंग है या किसी चिंता की वजह से हो रहा है। यदि इस थकान के कारण सिर दर्द या घबराहट है तो यह एंग्जायटी का एक लक्षण है। ज़्यादा चिंता करने से नींद नहीं आती और तनाव बढ़ने लगता है।

4. ध्यान देने में मुश्किल होना

शोध से पता चला है कि जो लोग ज्यादा चिंता करते हैं, उन्हें ध्यान केंद्रित करने में कठिनाई होती है और चिंता से याद्दाश्त पर भी असर पड़ता है।

5. चिड़चिड़ापन होना

एंग्जायटी से पीड़ित लोग बहुत ज़्यादा चिड़चिड़े होते हैं। वे बात बात पर गुस्सा और चिड़चिड़ापन दिखाते हैं जिससे उनका सामाजिक स्तर निम्न हो जाता है। इसी वजह से वे लोगों से दूर हो जाते हैं।

6. मांसपेशियों में तनाव

मांसपेशियों में तनाव रहने लगता है। व्यक्ति को चिंता के दौरे पड़ने लगते हैं वह खुद को हर जगह असुरक्षित पाता है।

7. सोने में समस्या होना

एंग्जायटी का एक लक्षण यह है कि व्यक्ति सही से सो नहीं पाता। नींद पूरी तरीके से नहीं ले पाने के कारण नींद में सोते हुए गिर जाना या आधी रात में जग जाना यह सब भी एंग्जायटी के लक्षण हैं।

8. घबराहट के दौरे पड़ना

एंग्जायटी से पीड़ित लोगों को घबराहट का दौरा पड़ने लगता है जिसके कारण दिल की धड़कन बढ़ने लगती है व पसीना आने लगता है।

गर्भवती महिलाओं में बच्चे (भ्रूण) को सांस लेने में परेशानी होती है जिससे गर्भपात का ख़तरा बढ़ जाता है। पीड़ित व्यक्ति सीने में जकड़न, उल्टी और ख़ुद पर संतुलन खो बैठने जैसी समस्याओं से घिर जाता है।

9. समाज से कटे रहना

जिन लोगों को ज्यादा बेचैनी होती है वो सामाजिक स्थितियों से डरते रहते हैं। उन्हें समाज में उठना बैठना अच्छा नहीं लगता है। ऐसे लोगों को लगता है कि समाज उन्हें और उनकी बातों को अहमियत नहीं देगा।

10. संतुष्टि का अभाव

एंग्जायटी से पीड़ित इंसान कभी भी संतुष्टि का अनुभव नहीं कर पाता है। उसे सदा दुख का एहसास होता रहता है और वह संतुष्ट जीवन का आनंद लेने में असमर्थ होता है।

एंग्जायटी का इलाज :-

1. व्यक्ति को चिंता किसी भी चीज से किसी भी समय हो सकती है लेकिन अगर सही समय पर उसका इलाज न किया जाए तो यह अवसाद का रूप ले सकती है और पीड़ित व्यक्ति को घबराहट और चिंता के दौरे पड़ सकते हैं।
2. हम इस समस्या से छुटकारा पा सकते है परन्तु इस समस्या की गंभीरता को कम नहीं समझना चाहिए। अगर एंग्जायटी के एक भी लक्षण से आप, आपके परिवार का कोई व्यक्ति या जान पहचान का कोई इंसान पीड़ित है तो सबसे अच्छा यही है कि इलाज के लिए आप किसी अच्छे चिकित्सक, मनोचिकित्सक या मनोवैज्ञानिक की मदद लें।
3. एंग्जायटी का इलाज दवाओं और काउंसलिंग दोनों के मिले-जुले इस्तेमाल से बेहद आसानी से किया जा सकता है।
4. एंग्जायटी की समस्या होने पर उसका हल ये नहीं है कि आप उसे अंतिम सत्य मानकर बैठ जाएं। हिम्मत करके समस्या का सामना करें। एक न एक दिन ये एंग्जायटी आपसे जरूर दूर हो जाएगी।
5. सावधान रहने और चिंता करने में बहुत अंतर है। सावधान रहने का मतलब जागृत होना है जबकि चिंता करने का मतलब विचारों को गहराई से सोचते रहना है जो आपको अंदर ही अंदर से खा जाती हैं इसलिए सावधान रहिए चिंतित नहीं।

एंग्जायटी को दूर करने के लिए क्या खायें?

1. पालक का सेवन करने से एंग्जायटी को दूर करने में सहायता मिलती है। आप पालक को पीसकर उसका जूस निकालकर सेवन कर सकते हैं। पालक को सब्ज़ी के तौर पर भी खा सकते हैं। पालक में एंटी स्ट्रेस और एंटी डिप्रेसिव गुण होता हैं जो चिंता और एंग्जायटी को दूर करने में मदद करता है।
2. गाजर का सेवन भी चिंता को दूर करने के लिए किया जा सकता है। आप गाजर को सलाद के रूप में खा सकते हैं या उसका जूस निकाल कर भी सेवन कर सकते हैं। गाजर में विटामिन 'ए', 'सी' और 'के' पाया जाता है साथ ही पोटेशियम भी काफी मात्रा में होता है जो चिंता और एंग्जायटी से निजात दिलाने में सहायता करता है।
3. बादाम, लैवेंडर और मिशेलिया, अल्बा लीफ आदि के तेलों को मिलाकर सिर की मालिश करने से भी बेचैनी की परेशानी दूर होती है। तेलों के इस मिश्रण में चिंता निवारक गुण होते हैं जो घबराहट व बेचैनी को दूर करने में सहायता करते हैं।
4. एंग्जायटी को दूर करने के लिए जायफल भी काफी

सहायता करता है। इसका पाउडर के रूप में नाश्ते व खाना बनाने के दौरान इस्तेमाल करें। जायफल का तेल मूड ठीक करने के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है। इसके लिए जायफल के तेल की कुछ बूंदों को रूमाल पर डालकर इसको सूंघते रहें। इससे काफी आराम मिलेगा।

एंग्जायटी और चिंता दोनों ही मानसिक स्वास्थ्य के लिए ख़तरनाक होते हैं इसलिए ऐसी चीज़ों से दूर रहें जो एंग्जायटी का कारण बनते हैं। इस संदर्भ में कबीर दास जी का यह दौहा याद आ रहा हैं -

चिंता ऐसी डाकिनी, काटि करेजा खाए।
वैद्य बिचारा क्या करे, कहाँ तक दवा खवाय।।

स्वास्थ्य सुझाव

डॉ. नंदलाल माहेश्वरी,
चिकित्सा अधिकारी

बीमारी से बचाव के लिए महत्वपूर्ण कदम

- 7-8 घंटे सोएँ।
- प्रतिदिन पर्याप्त मात्रा में पानी का सेवन करें।
- धूम्रपान से बचें/बंद करें।
- शराब से बचें/बंद करें।
- वाहन चलाते/सवारी करते समय सीट बेल्ट/हेलमेट पहनें।
- प्रतिदिन टहलें/दौड़ने का अभ्यास करें।
- शक्कर वाले आहार से बचें।
- पर्याप्त प्रोटीनयुक्त आहार का सेवन करें।
- तनाव कम करें (ज्यादा सोचने से बचें और अपने, परिवार और दोस्तों के साथ गुणवत्तापूर्ण समय बिताएं।)
- समय पर स्वास्थ्य परीक्षण कराते रहें।
- समय पर डॉक्टर से परामर्श लें।
- समय पर दवाई लेते रहना।
- स्वास्थ्य देखभाल के लिए चिकित्सकों की सलाह का पालन करें।

अपने स्वास्थ्य को बेहतर बनाने और रोग-मुक्त रहने की दिशा में अपना सफर शुरू करने के लिए आज से बेहतर कोई दिन नहीं है।

सुनहरी ज़िंदगी का सपना

स्नेहल जेठवा
संकाय सचिव

जीतना है दुनिया सबको,
दूसरों को है बस हराना,

खुद को बस हराकर,
मुझे अपने आपको है जीतना।

दूसरों की ज़िंदगी में नमक घोलकर,
मिठाई तो सबको है चखना,

सबको मिठाई बाँटकर,
मुझे नमकीन गोलगप्पे हैं खाना।

डिस्काउंट, सेल-ऑफ़र और कैशबैक पर,
करनी है सबको तो ऐश,

इनका फायदा तो मुझे भी है पाना,
पर मुझे चाहिए ज़्यादा कैश।

गाड़ी-बंगला, जेवर-पावर सबका है सपना,
इसके साथ सुपर कार चलाना मेरा है सपना,

पेटीएम, बैंक-बैलेंस और चाहिए कैश में इजाफ़ा,
तो म्युचुअल फंड और स्टॉक सिक्योरिटी से
कमाओ मुनाफ़ा।।

हार जीत तो है बस एक बहाना,
ज़िंदगी को खुशहाल है बनाना।
रुकना नहीं किसी को गवारा,
सुनहरी ज़िंदगी का सपना है हमारा।

आर्थिक विकास की कीमत प्राकृतिक आपदाएँ

डॉ. कृतिका टेकवानी
अकादमिक सहयोगी

1. प्रस्तावना :

प्रस्तुत शीर्षक दर्शाता है कि आर्थिक विकास का असर प्रकृति पर होता है। आज के युग में हर एक राष्ट्र एक-दूसरे से आगे निकलना चाहता है। चाहे वह सीमा से जुड़ा हो या अंतरिक्ष में यान भेजने से जुड़ा हो। आर्थिक विकास का असर ना सिर्फ एक राष्ट्र, एक राज्य, या किसी एक समुदाय पर पड़ता है, अपितु इसका असर पूरे विश्व पर पड़ता है। वर्तमान में हमने कई प्राकृतिक आपदाएँ देखी हैं। ये आपदाएँ चाहे जल, थल, या वायु से जुड़ी हुई हो, इनका परिणाम अति भयंकर होता है।

2. आर्थिक विकास की आवश्यकता

2.1 आर्थिक विकास का अर्थ : आर्थिक विकास एक राष्ट्र के सकल घरेलू उत्पाद की दर को भी कह सकते हैं। सकल घरेलू उत्पाद जिसमें सभी तरह का उत्पादन जो केवल उस राष्ट्र में हुआ या उस राष्ट्र के द्वारा दूसरे राष्ट्र में किया गया हो वह शामिल होता है। प्रभावी रूप से, इसमें दूसरे राष्ट्रों द्वारा कितनी औद्योगिक इकाइयाँ नई खोली गई वह भी शामिल होता है। जो कहीं न कहीं एक देश के नागरिकों को रोजगार देने में सहायक होती हैं।

2.2 भारत में आर्थिक विकास की उन्नति का दौर : वर्ष 1991 में भारत में जब डॉ. मनमोहन सिंह जी वित्त मंत्री थे, तब उन्होंने एल.पी.जी. नीति अपनाने का सपना देखा था और यह साकार कर दिखाया था। एल.पी.जी. का अर्थ उदारीकरण (Liberalization), निजीकरण (Privatization) और वैश्वीकरण (Globalization) है। इस नीति के लागू होने के पश्चात भारत में उद्योगों को स्थापित करने के लिए लाइसेंस के नियमों में उदारता की गई ताकि नए उद्योग स्थापित हो सकें।

निजीकरण के द्वारा सरकारी संस्थानों को निजी हाथों में हस्तांतरित किया गया। वैश्वीकरण के द्वारा भारत में विदेशी कंपनियों को आमंत्रित किया गया। यह भारत के वैश्विक दौर में बढ़ने का एक अनूठा प्रयास था। भारत अपने सिद्धांत "वसुधैव कुटुम्बकम्" को लेकर आगे बढ़ा।

3. गत वर्षों से लेकर वर्तमान तक किए गए आर्थिक विकास

भारत ने आर्थिक विकास की दर में बहुत तेज़ी से उन्नति की है। सभी राष्ट्र अब एक-दूसरे से जुड़ गए हैं। चाहे वह जी-20 सम्मेलन ही क्यों ना हो। सभी राष्ट्र अपने-अपने राष्ट्रों के आर्थिक विकास की उन्नति के लिए ऐसे वैश्विक सम्मेलनों में शामिल होते हैं।

(अ) कार्बन का क्रय-विक्रय – सीओ13 कोपनहेगन में आयोजित की गई। इस वैश्विक सम्मेलन में सभी राष्ट्रों द्वारा कार्बन का क्रय-विक्रय निर्धारित किया गया। इसे कार्बन ट्रेडिंग कहा जाता है। जब भी देश नई औद्योगिक इकाइयाँ लगाता है तब उसे पर्यावरण के नियमों का पालन करना पड़ता है। ये सभी देश आपस में मिलकर अपने द्वारा कमाए गए कार्बन अंकों की खरीद फरोख्त करते हैं।

(ब) चंद्रयान – भारत ने चंद्रयान भेजकर सभी देशों की शीर्ष सूची में अपना नाम कर लिया है। अभी गगनयान आदित्य की तैयारी कर रहा है। भारत के अलावा, कई देशों के द्वारा भी अंतरिक्ष में यान भेजे जा रहे हैं। हाल ही में चंद्रयान के चाँद की सतह पर पहुँचने पर दूसरे देशों द्वारा भेजे गए यान का मलबा वहीं पड़ा

है। आर्थिक विकास तो हो रहा है, परंतु दूसरी तरफ पर्यावरण को प्रदूषित किया जा रहा है।

4. आर्थिक विकास और प्राकृतिक आपदा का संबंध

प्राकृतिक आपदाएँ पहले भी आती थीं, और आज भी आती हैं। फर्क बस इतना है कि पहले बहुत सालों में आती थीं और अब के समय में हर साल आती हैं। आर्थिक विकास से देश ने प्रगति तो की है लेकिन, पर्यावरण या प्रकृति को बचाए बिना की है।

(अ) **यमुना का ऊँचा उठता स्तर**- यमुना नदी जहाँ स्थित है, उसके आस-पास बहुत सारी औद्योगिक इकाइयाँ हैं, जिनका असर यमुना नदी पर साफ पड़ता दिखाई देता है।

(आ) **जंगल में आग** – विदेशों में जंगल में आग लगना अब आम बात हो गई है। विदेशों में कई सारे उद्योगों की स्थापना होने से प्रकृति को काफी नुकसान हो रहा है।

(इ) **मौसम परिवर्तन** – उद्योगों की दूषित हवा, तथा वायुमंडल में कार्बन गैस की वजह से सर्दियों और गर्मियों में काफी बदलाव आ गया है। दोनों ऋतुओं के आने और जाने में बहुत परिवर्तन हो गया है।

(ई) **भूकंप, बाढ़ आना, और चक्रवात** – ये सभी आपदाएँ मानवीकृत कारणों से आ रही हैं। मानव द्वारा किए गए विकास कार्य जिससे वे अपने राष्ट्र की तो उन्नति कर रहे हैं परंतु प्रकृति से छेड़छाड़ कर रहे हैं।

5. निष्कर्ष

आर्थिक विकास की कीमत प्राकृतिक आपदाएँ शीर्षक में यह दर्शाया गया कि आर्थिक विकास से आपदाएँ आ रही हैं। जैसा कि दिए गए उदाहरणों से यह पता चला कि आर्थिक विकास होना आवश्यक है परंतु उसके साथ प्रकृति का भी ध्यान रखना उतना ही आवश्यक है।

सुझाव –

(अ) राष्ट्रों को अपनी प्रकृति का ध्यान सिर्फ कागजों में नहीं, अपितु हकीकत में भी रखना चाहिए।

(आ) औद्योगिक इकाइयों के निर्माताओं को उद्योग लगाने से पहले वहाँ की भौगोलिक स्थिति समझनी चाहिए।

(इ) सरकार को आपदा कर लागू करना चाहिए ताकि जो उद्योग ऐसे भौगोलिक परिसर में लग रहे हैं जहाँ प्राकृतिक आपदा होने की संभावना बढ़ सकती है, उसे कम किया जा सके।

(ई) सी.एस.आर. के तहत उद्योगों को अपने लाभ का 30 प्रतिशत अंश पर्यावरण हितकर संसाधनों में खर्च करना चाहिए।

संस्कृत में एक श्लोक है – भूमे:गरीयसी माता, स्वर्गात उच्चतर:पिता। जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गात अपि गरीयसी।। अर्थात् — भूमि से श्रेष्ठ माता है, स्वर्ग से ऊँचे पिता हैं, माता और मातृभूमि स्वर्ग से भी श्रेष्ठ हैं। अतः हमें अपनी मातृभूमि की हर हाल में रक्षा करनी चाहिए।

बैठा

हरीश वाघेला
कार्यकारी

हथौड़ी, छेनी लेकर संगमरमर को मैं तराशने बैठा।
भैंस के आगे भागवत लेकर इसको समझाने बैठा।।

रात सारी गगन के तारे गिनने बैठा।
भरी महफिल में जैसे समाधि लगाने बैठा।।

आभासी नदी में जाकर,
पानी की पोटली भरने बैठा।
दिन भर कुछ न किया,
रात को भगवान को भजने बैठा।।

जीवन भर नास्तिक रहा, अंत में पत्थर पूजने बैठा।
शतायु वर्ष में जीवन कैसे जीया जाए,
यह पुस्तक पढ़ने बैठा।।

दोपहर की धूप में जाकर दीया जलाने बैठा।
वेंटिलेटर पर हूँ फिर भी प्राणायाम करने बैठा।।

चक्रवात के बीच में जाकर, हवा पकड़ने बैठा।
ना मैं कवि, ना मैं लेखक,
फिर भी कविता सुनाने बैठा।।

नारी शिक्षा और समाज

हरीश प्रेमी
पीएच. डी. छात्र

भारतीय संस्कृति में चिरकाल से ही महिलाओं को सम्मान एवं श्रद्धा की दृष्टि से देखा गया है। भारत के हर कोने में देवी के रूप में महिलाओं को पूजा जाता है। संस्कृत की एक सूक्ति के अनुसार – ***यत्र नार्यस्तु पूजयन्ते, रमन्ते तत्र देवताः।*** अर्थात जहाँ नारियों का सम्मान किया जाता है, उन्हें पूजा जाता है, वहाँ देवता निवास करते हैं। अपनी विशिष्ट कलाओं और योग्यताओं के कारण महिलाएँ इस समाज एवं राष्ट्र कल्याण में अनूठा योगदान प्रदान करती हैं।

हालांकि, चिरकाल की पराधीनता और विदेशी हुकूमतों के प्रभाव के चलते हमारे देश में भी कई सामाजिक कुरीतियाँ हमारी सोच और समझ को प्रभावित करती आई हैं। ऐसी ही एक सामाजिक कुरीति है – लिंग भेद। लिंग के आधार पर कई प्रकार के भेदभाव आज भी देश व समाज में देखने को मिलते हैं। इसी कुरीति का सबसे अधिक दुष्प्रभाव महिलाओं को झेलना पड़ता है, क्योंकि पिछड़ी सोच और रुढ़िवादी मानसिकता से ग्रसित समाज का एक वर्ग महिलाओं को कमज़ोर व अबला करार देता है। इसी पुरातन मानसिकता के आधार पर ही महिलाओं से उनके मूलभूत अधिकार भी छीन लिए जाते हैं।

देश के ग्रामीण एवं पिछड़े इलाकों में यह समस्या अधिक गंभीर है। बुद्धिमत्ता एवं जागरूकता की कमी के कारण महिलाओं के साथ अक्सर भेदभाव व शोषण किया जाता है एवं उनको मूलभूत मानवीय व सामाजिक अधकारों से भी वंचित रखा जाता है। ऐसी स्थिति में एक आदर्श समाज एवं विकसित व खुशहाल राष्ट्र की कल्पना मात्र करना ही कठिन मालूम पड़ता है।

साक्षरता द्वारा समाज की इस कष्टदायक कुरीति को जड़ से मिटाना संभव है। साक्षरता ही एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा समाज में जागरूकता लाई जा सकती है। लिंग के आधार पर भेद तभी समाप्त होगा जब महिलाओं को भी उतना ही सामाजिक अधिकार व स्वाधीनता हासिल होगी, जितना कि पुरुषों को प्राप्त है। हमारे देश की शिक्षा प्रणाली में भी महिलाओं की भागीदारी को सुनिश्चित करना होगा ताकि कोई भी महिला अपने मूलभूत अधिकार से वंचित ना रहे।

साक्षरता न केवल महिलाओं को पढ़ने-लिखने योग्य बनाती है, अपितु उनको समाज में अपने अधिकारों को प्राप्त करने के लिए निरंतर प्रेरित करती है, चाहे इसके लिए उन्हें संघर्ष की राह ही क्यों ना अपनानी पड़े। साक्षर महिला न केवल अपनी, अपने परिवार की बागडोर अच्छी प्रकार संभालती है, अपितु समाज एवं राष्ट्र को भी दिशा प्रदान करने में सक्षम होती है।

जीवन का कोई भी क्षेत्र हो - आर्थिक, व्यावसायिक, राजनैतिक या सामाजिक – साक्षर महिला हर क्षेत्र में अपनी काबिलियत को साबित करने में सक्षम है। प्रधानमंत्री का पद हो या राष्ट्रपति का, किसी बड़ी कंपनी में सी.ई.ओ. का स्थान हो या किसी विश्वविद्यालय में कुलपति का – महिलाओं ने हर क्षेत्र में अपनी विजय की पताका को फहराया है।

कहा जाता है कि जब किसी घर में एक महिला पढ़-लिख जाती है, तो न केवल उसका, अपितु पूरे परिवार, समाज, एवं राष्ट्र का विकास सुनिश्चित होता है। अपनी बुद्धिमत्ता एवं दृढ़ निश्चय के साथ-साथ संवेदनशीलता व कोमलता को हृदय में रखते हुए, महिलाएँ न केवल भौतिक विकास में अपना योगदान देती हैं, अपितु समाज को अधिक प्रसन्न व संतुष्ट बनाने में भी प्रयत्नरत रहती हैं। जहाँ एक ओर आर्थिक व वैज्ञानिक विकास आवश्यक है, वहीं संगीत, कला और सांस्कृतिक प्रगति भी अति अनिवार्य है और साक्षर महिलाएँ इस महत्त्वपूर्ण संतुलन को बनाए रखने में सक्षम होती हैं।

साक्षरता न केवल महिलाओं को उनके अधिकारों और उनकी छिपी क्षमताओं के प्रति उनको जागरूक एवं प्रेरित करती है, अपितु समाज के उस वर्ग को भी जागरूक एवं सावधान करती है जो महिलाओं को इनसे वंचित रखने के पक्ष में अपनी हामी भरते हैं। रूढ़िवादी मानसिकता से ग्रसित ये वर्ग भी अपनी पुरानी सोच को छोड़कर एक नई सोच को अपनाने में समर्थ होता है और महिलाओं के उत्थान के लिए अपना हर संभव प्रयास करता है।

समय आ गया है समाज के हर कोने में ये जागरूकता फैलाने का कि राष्ट्र एवं विश्व कल्याण तभी संभव है जब प्रकृति द्वारा रचित दोनों कृतियों – पुरुषों व महिलाओं को समान अधिकार व स्वाधीनता प्राप्त हो। हर क्षेत्र में महिला को अपनी सोच, समझ व इच्छा के आधार पर अपना निर्णय लेने की क्षमता प्राप्त हो। इस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए साक्षरता ही एक राम-बाण इलाज है, क्योंकि इससे न केवल पुरानी सोच (बिमारी) को मिटाया जा सकता है, अपितु एक नई व बेहतर सोच लाकर समाज को स्वस्थ किया जा सकता है।

अंत में कुछ पंक्तियाँ –

पढ़-लिखकर नई सोच अपनाएँ,
नई राहों पर कदम बढ़ाएँ,
लिंग भेद को दूर भगाकर,
महिला को उसका अधिकार दिलवाएँ।

पुरुष-महिला एक दूसरे के पूरक,
दो पहियों का चलना जैसे हो ज़रूरी,
एक पहिया भी गर कमज़ोर पड़ा तो,
यात्रा रह जाएगी ये अधूरी।

खुशहाल समाज व राष्ट्र निर्माण में,
आओ हम सब अपनी भूमिका निभाएँ,
खुद बनें साक्षर, दूसरों को भी करें,
हर मानव को उसका अधिकार दिलवाएँ।

किसान

राहुल कुमार झा
अकादमिक सहयोगी-पीएसजी

तू जान है मेरी, तू जहान है
सुन भाई, तू किसान है... (2)
अरे सब है भूखे, सब है नंगे
ये जो ऊँची-ऊँची मंजिलों को देखते हो,
वे तो बस मकान हैं।
सुन भाई, तू किसान है।।
लाखों-करोड़ों जो जहाजों में उपर उड़ते हैं
जिनके घरों की ऊँचाई छूता आसमान है
तू ही है वह बेघर... जो भूख मिटाता है उनकी
क्योंकि.. भाई तू एक किसान है।
बारिशें तो शहरों में बरसती होंगी... (2)
गाँवों में तो देख तेरी बदहाली को
रोता आसमान है।
सुन भाई, तू किसान है।
जहाँ शहरों में अर्ली-मॉर्निंग, वॉकिंग, जोगिंग
और थोड़ी सनशाइन से होते सब परेशान हैं।
वहीं दो-जून की रोटी की खातिर,
भरी दोपहरी में तू लथपथ पसीने से
सुन भाई, तू किसान है।
जहाँ सत्तर प्रतिशत की आबादी पर भी
ना होती कोई खोज-खबर,
ना ही कोई पहचान है ...
बस, कागजों में सिमटा रह गया तू
बस, कागजों में सिमटा रह या तू...
सुन भाई, तू किसान है।
दो बैल हैं परिवार तेरे
टपकती झोंपड़ी तेरा मकान है
कभी सुखा, कभी बाढ़
दुनिया के तानों से बी तू परेशान है।
सुन भाई, तू किसान है।
ना लटक घर के फंदों पर तू
ना लटक घर के फंदों पर तू..
तू ही अन्नदाता, तू ही पालक
तू है तो यह जहान है।
गर्व है तेरी मेहनत पर,
तू सच्चा भारत,
तू ही सच्चा हिन्दुस्तान है...
तू ही सच्चा हिन्दुस्तान है।।
सुन भाई, तू एक किसान है।
भाई, तू एक किसान है।।

गुब्बारे

श्रीमती प्रिया एस. प्रसाद
माँ, आर्यन प्रसाद, पीजीपी-20

जैसे ही लाल बत्ती पर कार रुकी करीब सात-आठ साल की एक छोटी बच्ची गुब्बारे लेकर कार की विंडो पर ठक-ठक करने लगी। सुनीति ने उसे देखा तो वह गुब्बारे दिखाकर बोली- "आंटी देखो न ये स्टार, डोरेमोन, पिकाचू, मिकी माउस वाले गुब्बारे केवल पचास रुपये में।" बच्ची विनती करने लगी गुब्बारे खरीदने के लिए। सुनीति ने मुस्कुराते हुए कहा- "बेटा, हमारे घर में कोई छोटा बच्चा ही नहीं हैं क्या करुँगी इसका?"

"तो आप ये दिल वाला ले लो, ये सस्ता भी है"- गुब्बारा दिखाते हुए बच्ची बोली ...

सुनीति उसकी बात सुनकर हँसने लगी तभी बत्ती हरी हो गई और सुनीति ने कार आगे बढ़ा दी।

अगले दिन भी उसी लाल बत्ती पर वो बच्ची मिली। उसकी मीठी आवाज़ सुनीति को बहुत भा गई। सुनीति ने उस बच्ची का नाम पूछा और एक दिल शेप वाला गुब्बारा ले लिया। अगली लाल बत्ती पर उसने गुब्बारे पर पेन से लिखा -"नूर" ... उस बच्ची का नाम।

उस दिन के बाद अक्सर सुनीति कोशिश करती कि उसकी कार उस लाल बत्ती पर रूके। वह नूर का हाल-चाल पूछती और गुब्बारा ले लेती। उसके पति अमित को भी अच्छे लगते वो गुब्बारे। एक दिन तो सुनीति ने नूर के साथ दो-तीन फोटो भी खिंची जिन्हें देखकर नूर खूब खुश हुई। बातों-बातों में पता चला कि उसके माँ-बाप भी किसी लाल बत्ती पर कोई सामान बेचते हैं।

कुछ दिन बाद ....

सुनीति की सास - "सुनीति, जल्दी करो बहुत मुश्किल से सात कन्या मिली हैं ज़्यादा देर की तो दो घंटे इंतज़ार करना पड़ेगा। और भी लोग खड़े हैं बाहर, उन्हें ले जाने के लिए।"

"बस मम्मी हो गया, मैं अमित को बुलाती हूँ"- सुनीति ने कहा।

"मैं भी तैयार हूँ, चलिए कन्या पूजन शुरू करते हैं।" अमित ने कहा। तीनों ने सभी कन्याओं को हलवा पूरी खिलाकर कुछ पैसे भी दिए। जब बच्चियाँ जाने लगी तो सुनीति की सास ने सुनीति से कहा- "कन्या के पैर छूकर आशीर्वाद तो ले लो तुम दोनों।" इनकी कृपा रही तो तुम्हारे गोद में भी एक बच्चा होगा। सुनीति और अमित बच्चियों के पैर छू ही रहे थे कि पड़ोस में रहने वाली दादी आ गई बच्चियों को लेने। सुनीति को देखकर बोली, "हे मातारानी हमारी सुनीति को भी एक बेटा दे दो।" --- उनकी बात सुनकर सुनीति की सास बोली- "अरे, अम्मा! क्या बेटा? अब तो बस एक बच्चा हो जाए फिर चाहे लड़का हो या लड़की।" सुनीति और अमित उनकी बात सुनकर मुस्कुराते हुए बच्चियों को बाहर तक छोड़ने चले जाते हैं।

अमित और सुनीति की लव मैरिज को चार साल हो गए थे लेकिन अभी तक दोनों ने बच्चे के बारे में सोचा नहीं था। असल में दोनों ही मल्टी-नेशनल कंपनी में काम करते थे। आए दिन नए प्रोजेक्ट्स और ऑफिस टूर के कारण बहुत व्यस्त रहते थे। ऐसी परिस्थिति में वे बच्चे को नहीं लाना चाहते थे। अमित की माँ को बहुत आस थी, हो भी क्यों नहीं आखिर दादी कौन नहीं बनना चाहेगा ! इसीलिए वो आए दिन व्रत, पूजा-पाठ आदि करती रहतीं। अमित और सुनीति उनकी आस्था को कभी ठेस नहीं पहुँचाते थे। उन्हें ये भी चिंता थी कि बच्चा आने से उनकी माँ की ही ज़िम्मेदारी ज्यादा बढ़ेगी क्योंकि दोनों तो अपने काम में ही व्यस्त रहेंगे। इन कारणों से सुनीति बहुत ही कंफ्यूज थी। उसे लगता था कि उसकी ज़िन्दगी बोझ से भर जाएगी बच्चे के बाद। अमित ने कहा भी कि बच्चे की देखभाल के लिए एक आया रख लेंगे जिससे माँ को परेशानी नहीं होगी लेकिन सुनीति खुद

को तैयार नहीं कर पा रही थी। भले ही सास या बाकि लोग उसे ही दोषी समझें माँ न बनने के कारण। उसने ठान रखा था कि जब मानसिक रूप से पूरी तरह तैयार होगी तभी नई ज़िम्मेदारी उठाएगी।

कुछ और दिन बीते ...

एक दिन सुनीति की कार फिर से लाल बत्ती पर रुकी लेकिन नूर उसे दिखाई नहीं दी। उसकी जगह एक लड़का गुब्बारे बेच रहा था। अगले तीन दिन भी नूर नज़र नहीं आई तो उसने उसी छोटे लड़के से पूछा तो उसने बताया कि नूर बहुत बीमार है। ये सुनकर सुनीति का दिल बेचैन हो उठा। उसे नूर का चेहरा याद आने लगा। उस दिन उसका न काम में मन लगा न घर में। उसने अमित को बताया तो उसने दिलासा दिया कि नूर ठीक हो जाएगी। रोज़ लाल बत्ती पर सुनीति की निगाहें नूर को ही ढूँढती और न मिलने पर फ़ोन में उसकी फोटो देखती और प्रार्थना करती कि नूर जल्दी ठीक हो जाए।

करीब एक महीना बीत गया सुनीति फिर से उसी लाल बत्ती पर थी कि तभी विंडो पर ठक-ठक हुई। सामने हाथों में गुब्बारे लिए नूर खड़ी थी। सुनीति ख़ुशी से उछल पड़ी उसने यू-टर्न लिया और सड़क के किनारे कार रोककर नूर को बुलाया और उसे गले-से लगा लिया। नूर को गले लगाकर उसके दिल को राहत मिली। नूर ने बताया कि उसे पीलिया हो गया था पर अब ठीक है। सुनीति को तसल्ली हुई। घर पर गुब्बारे देखकर अमित समझ गया कि नूर आ गई है। उसके दिल को भी तसल्ली मिली।

अब जब भी लाल बत्ती पर कार रूकती और नूर सुनीति के सामने आती तो उसके दिल में ममता जागने लगती, मातृत्व का अहसास होता। एक दिन नूर ने बताया कि आज उसका जन्मदिन है तो सुनीति ने ख़ुश होकर उसे प्यार किया और आशीर्वाद के साथ कुछ पैसे देकर कहा कि मम्मी से बोलना तुम्हारे लिए अच्छी-सी फ्रॉक खरीद दें और उसके सारे गुब्बारे खरीदकर कार में रख लिए। ऑफिस में पूरा दिन वह चहकती रही। घर जाकर उसने कमरे में सारे गुब्बारे सजा दिए।

सास ने जब बच्चों वाले गुब्बारे देखे तो मायूस होकर बोली- “इनसे खेलने वाला भी होता तो!! ... इतना कहकर चुप हो गई तब सुनीति ने कहा- “मम्मी, जल्दी खेलने वाला भी आएगा”, और अमित की तरफ़ देखकर मुस्कुरा दी।

सास ने ठंडी आह भरी और अपने कमरे में चली गई।

उनके जाने के बाद सुनीति ने अमित के हाथों को थामते हुए कहा- “मैं तैयार हूँ अमित। अगर समझदारी और प्लानिंग से बच्चा पाला जाए तो परवरिश आसान हो जाती है।” अमित ने खुश होते हुए कहा- “बच्चा हम दोनों की ज़िम्मेदारी होगा। मैं भी रातों को जागूँगा, ज़रूरत पड़ी तो छुट्टी लूँगा, नैपी बदलूँगा, सब कुछ करूँगा और अमित ने सुनीति को गले लगा लिया।

एक महीने बाद सुनीति ने माँ बनने की खुशखबरी दी। अमित और उसकी माँ की ख़ुशी का ठिकाना ही नहीं रहा। सास ने माता रानी के आगे सिर झुकाया और सुनीति को आशीर्वाद देते हुए कहा- “देखा कन्या पूजन का चमत्कार !!” सुनीति ने कहा- जी मम्मी उन्हीं की वजह से ये ख़ुशी आई है और उसकी आँखों के सामने नूर का चेहरा आ गया। उसने मन-ही-मन कहा- “अगर बेटी हुई तो “नूर” नाम रखूँगी।”

भारत की उपलब्धियाँ

डॉ. कृतिका टेकवानी,
अकादमिक सहयोगी

चंद्रयान की उड़ान भारत ने बढ़ाई,
अंधकार से लेकर चाँद की ओर दिखाई।

जी-20 के मंच पर हम ने संवाद किया,
विश्व में हमारी उपलब्धियों को प्रकट किया।

स्वतंत्रता संग्राम से आजादी हमने पाई,
साराभाई और पटेल ने हमारी शान बढ़ाई।

मंगल ग्रह पर रखा हमने क़दम,
दिखलाया दुनिया को देश का दम।

इतिहास के पन्नों में दर्ज है हमारा नाम,
रोशन हैं दुनिया में भारत के काम।

शक्ति, समृद्धि, और उद्यमिता के साथ,
भारत बढ़ा है एक नए कदम के साथ।

भारत की उपलब्धियाँ हैं हमारी शान,
जो दुनिया को दिखाती है हमारी महत्त्वपूर्ण पहचान।

विज्ञान, साहित्य, कला के क्षेत्रों में अग्रसर हैं हम,
भारत की सभी उपलब्धियों पर करते हैं गर्व हम।

उत्क्रांति के रास्ते हिंदी युग की स्थापना

बिंदु डोडिया,
सहायक प्रबंधक-हिंदी

प्रस्तावना

भाषा सांस्कृतिक, भौगोलिक, राजनैतिक, अन्य सामूहिक अस्तित्व तथा विभिन विषयों की अभिव्यक्ति का माध्यम है और हम सभी को ज्ञात है कि यह दृश्य श्रव्य तथा लेखन के उप-माध्यम से प्रकट होती है। भाषा का प्रभाव प्रत्येक आयाम में है और जैसा कि स्पष्ट है कि प्रत्येक राष्ट्र की एक मूल भाषा होती है जो उसकी संस्कृति व उससे परिमार्जित भविष्य की वाहिनी होती है। वर्तमान भारत में इस कर्तव्य का निर्वहन हिंदी के द्वारा किया जा रहा है, जो बाहुल्य में, संस्कृति व उससे परिमार्जित भविष्य को वहन करने का बीड़ा उठाये है। भारत में लगभग 46 प्रतिशत जनसंख्या, हिंदी से खुद को सम्बद्ध करके, लगभग हर एक प्राँत में विभिन्न स्तरों पर इसका उपयोग करती है।

विदेशों में हिंदी को तीसरी सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा के रूप में एक सम्माननीय स्थान प्राप्त है और लगभग 20 देशों में सीमित जनमानस आम संवाद के माध्यम के तौर पर इसका उपयोग करता है। हिंदी के धाराप्रवाह उपयोग में अमेरिका जैसा बड़ा देश तथा फिजी जैसा छोटा देश भी अनुकूलित संलिप्तता प्रदर्शित करता है। एक आंकड़े के अनुसार विश्व में 176 विश्वविद्यालयों में हिंदी पढाई जाती है, जो कि एक प्रभावशाली स्थिति है। भारत से सांस्कृतिक रूप से सम्बद्ध देशों में हिंदी एक आदरणीय स्तर पर ख्याति प्राप्त है तथा इसके ध्वानिकी होने जैसे गुण के नाते इसे दक्षिण एशियाई भाषा समूह में तथा विश्व भाषाओं में एक आकर्षक भाषा के रूप में समझा जाता है।

भारतीय जनमानस में हिंदी की स्थिति :

भारतीय जनमानस में हिंदी की स्वीकार्यता पर कोई संदेह नहीं है और न ही उसे हिंदी से प्रत्यूर्जता (एलर्जी) के स्तर पर घृणा है। लगभग 26% जनमानस हिंदी को मातृभाषा के तौर पर, लगभग 43 प्रतिशत इसे प्रथम भाषा के तौर

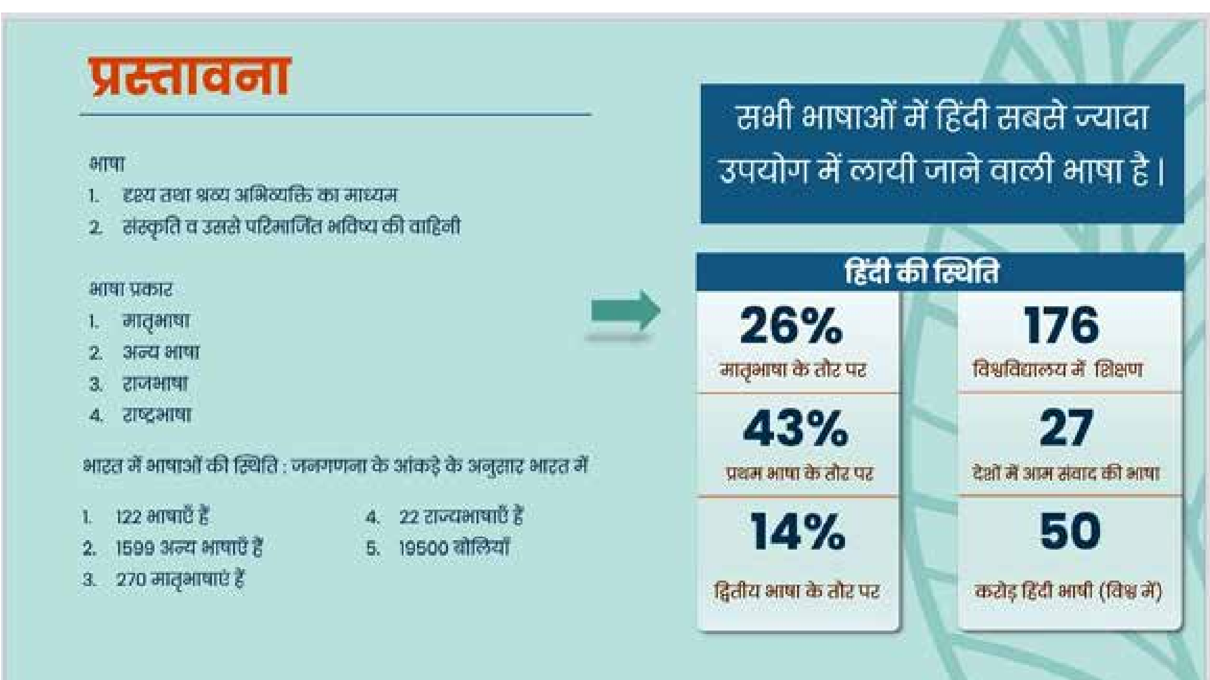

पर व लगभग 14% इसे द्वितीय और तृतीय भाषा के तौर पर उपयोग करते हैं। जनमानस हिंदी की ओर आकर्षित है तथा वो स्थानीय बोली व उच्चारण तथा आधुनिक आंग्ल व अन्य भाषाओं के शब्दों के परिशिष्ट से लोभित है। हिंदी के प्रचार में सभी संलग्न है जैसे कि समाचार माध्यम, हिंदी चलचित्र, पुस्तकें आदि। प्रचलित अर्थ में भारत में दो प्रकार की हिंदी पायी जाती है : एक वह हिंदी जो आम जनमानस अपने परिशिष्ट यानी स्थानीय उच्चारण आदि जोड़ कर बना चुका है, दूसरी हिंदी वह है जो सरकारी कार्य में उपयोग में लाई जाती है।

हिंदी का अनुकूलन : क्यों और कैसे

भाषा की उपयोगिता के अनुभाग में यह समस्या हमारा ध्यान आकर्षित करती है। हिंदी वैज्ञानिक रूप से ध्वानिकी गुण को अपनाये हुए है : यानी जैसा उच्चारित किया जाता है वैसा ही लिखा जाता है। तो इसे सीखने में और इसे अपनाने में वर्तनी स्मृति और अन्य भाषाओं की तरह विभिन्न उच्चारण स्मृति सहेजने की आवश्यकता नहीं है। हिंदी अनुकूलन के लिए एक बहुत महत्वपूर्ण कारण परिलक्षित है और वह कारण यह है कि हिंदी की शब्दावली संस्कृत से लगभग 65% से 70% आयातित है और भारतीय भूभाग में उपजी सभी भाषाओं में न्यूनतम प्रतिशत से लेकर 30% तक संस्कृत के शब्द पाए जाते हैं।

भाषाई आन्दोलन, सकारात्मक रूप से हिंदी शिक्षा की आनिवार्यता व हिंदी प्रसारक तत्व (यानी हिंदी के लेखक व पाठक दोनों) को अवसर की उपलब्धता व उपलब्धता में प्रचुरता, आदि के सहयोग से हिंदी को एक दृढ़ धरातल पर पुनर्स्थापित किया जा सकता है। आन्दोलन के विषय पर विचार करें तो यहाँ आन्दोलन का अर्थ है हिंदी की स्फुरणा सबके मन में अनुग्रह के आयाम में स्थापित हो व उज्ज्वल रहे। यहाँ एक झकझोरने वाली रणनीति की अपेक्षा एक स्वस्फुरित प्रसार की आवश्यकता होती है। जिस वस्तु का अस्तित्व इतना क्लिष्ट हो उसे एक विशेष तरीके से स्थापन का वह तरीका हमें प्रकृति से अधिकार युक्त अनुदान में प्राप्त है।

क्रान्ति बनाम उत्क्रांति

किसी भी बदलाव के लिए प्रकृति में भी दो ही तरीके होते हैं। पहला है, बाह्य प्रेरक तत्व जो अंतस में प्रभाव उत्पन्न करता है जिसे हम क्रांति कहते है। वर्ग, समय या परिस्थितियों के बदलने पर क्रांति के उद्देश्य का अस्तित्व खत्म हो जाता है स्थापना की इस अनुक्रमणिका में एक सत्य यह भी है कि क्रान्ति की बारम्बारता नहीं होती है। क्रांति एक ऐसा प्रयास है जिसमें बाह्य वातावरण से बदलाव के बीज अन्तस की वैचारिक धरातल की मिट्टी से खाद लेकर एक नवीन तंत्र का अंकुर प्रदान करते हैं। अतः हम जैसे क्रान्ति, हिंदी शिक्षण की नवीनता जैसे तंत्र की स्थापना कर सकते हैं। किन्तु जिस क्षण शिक्षण में नवीनता स्थापित हुई तत्क्षण क्रान्ति का उद्देश्य प्राप्त हो जाता है और प्रवाह ख़त्म हो जाता है। दूसरा प्रेरक तत्व वह है जिसे हम उत्क्रांति कहते हैं। उत्क्रांति में बदलाव

अंतस से बाह्य की और प्रसारित होते हैं। बाह्य दर्शन या बाह्य गुणलाभ भले ही एकात्मता के अभाव को प्रसारित करते प्रतीत हों पर अंतरतम में मूलता वही समानता लिए होती है। जैसे एककोषीय जीव का बहुकोषीय जीव में परिवर्तन और उन्नयन प्रकृति की उत्क्रांति का परिणाम है, लेकिन भीमकाय जीव जैसे कि डायनासोर का धरती से समाप्त हो जाना एक क्रांति का परिणाम है जिसका बीज एक उल्कापिंड के धरती पर आने में निहित था। उत्क्रांति का प्रारंभ सदा से ही सनातन है उसमें कई क्षणिक क्रान्ति जैसे लक्ष्यों की प्राप्ति होती है। भाषा संवाद का माध्यम है और यह हमें समझना है कि, माध्यम की स्थापना क्रांति की अपेक्षा उत्क्रांति से ही सम्भव है। माध्यम के मूल तत्व में बदलाव नहीं होता है, हाँ, यह जरूर होता है कि माध्यम एक स्थिति से दूसरी स्थिति में परिवर्तित हो जाए। अतः माध्यम की सिर्फ स्थापना होती है और वह भी एक मूल तत्व के आधार पर।

हिंदी का प्रचार प्रसार कैसे?

स्वाभाविकता में उत्क्रांति से! बिलकुल हिंदी के साथ भी यही उत्क्रांति की प्रणाली काम करेगी। भाषा का प्रसार एक ऐसी तकनीकी से करना होगा जो कि किण्वन या खमीरीकरण के सिद्धान्त पर आधारित हो। एक विचार मनो-मस्तिष्क में हिंदी-प्रेम नामक किण्वन बीज के रूप में स्थापित हो और वह हिंदी भाषा को न सीखने व अपनाने के कारणों को हिंदी-प्रेम में परिवर्तित कर दे। संभवतः एक प्रारम्भिक चरण में यह एक क्रान्ति जैसी प्रक्रिया होगी, तत्पश्चात वह उन्नयन की अवस्था में आएगी और फिर उत्क्रांति का प्रवाह वेग पर आरूढ़ होकर समस्त माध्यम को परिवर्तित कर देगा। और इन दोनों का समग्र रूप यानी क्रान्ति धन उन्नयन, उत्क्रांति जैसा होगा जो कि हिंदी की उत्क्रांति में परिवर्तित हो जाएगा। हिंदी उत्क्रांति इसी का मिला-जुला रूप होगा। समाज में हिंदी की स्वीकार्यता का प्रतिशत बहुत उच्च स्तर पर है और आगे भी रहेगा और यह एक बहुत उपकारक वातावरण है और इसमें सहयोगी होगी तकनीकी, जो हिंदी उत्क्रांति के हवन में घृत का काम करेगी। हिंदी में कार्य करने के अवसर की उपलब्धता, स्वीकार्यता व जन मानस को हिंदी में अन्य भाषाओं के साहित्य की उपलब्धता आदि कई ऐसी लघु लेकिन आवश्यक प्रक्रियाएँ हैं जो हिंदी प्रसार में बहुत योगदान दे सकती हैं। व्यापार जगत में हिंदी के उपयोग के लिए एक साझा निधि का निर्माण कर उसे हिंदी उपयोगिता के आधार पर व्यक्ति व संस्थान को पुरस्कार के तौर पर प्रदान किया जा सकता है जो कि एक उत्प्रेरक का भी काम कर सकता है। ऐसे कई उत्प्रेरक खोज कर उसे समाज में अन्तःक्षेप (interpolation) किया जा सकता है, जिससे उत्क्रांति का प्रवाह रुके नहीं।

निष्कर्ष

एक सार्वभौमिक सत्य को शायद ही कोई नकार पाए कि 70% संस्कृत को समाहित करने वाली हिंदी न्यूनतम प्रतिशत से 30% तक अन्य भाषाओं में अपनी आभा प्रसारित कर रही है। तो कुल मिलाकर, हिंदी के किण्वन के बीज तो भारतवर्ष की जनता के मनोमष्तिष्क के उनकी अपनी मातृभाषा के अंदर ही प्रसारित है बस उसे एक सूत्र में बांधने के लिए हिंदी के लिए सही वातावरण बनाना है। कई विद्वानों एवं भाषा शोधकों की यही अंतर्दृष्टि है कि आप तीन भाषाएँ सीखिए। आपकी एक मातृभाषा, एक राष्ट्रभाषा (भारत में राजभाषा) और तीसरी अंतरराष्ट्रीय भाषा और हिंदी को किसी भी एक भाषा श्रेणी में समाहित कीजिए। इसमें इतना फायदा है कि ज्यादा भाषाएँ सीखेंगे तो मस्तिष्क की तीक्ष्णता को पोषण मिलता है। मन से मन तक और तत्पश्चात जीवनचर्या तक यानी घर से व्यापार तक हिंदी का प्रचार व प्रसार सुनिश्चितता से सुलभ है। कतिपय ये किण्वण आरम्भ हो चुका है इसलिए हिंदी का भविष्य उज्ज्वल है और इस बात को वैश्विक स्तर पर सभी को जल्द ही स्वीकारना होगा।

प्रकृति

प्रतीक पटेल
मल्टी टास्किंग स्टाफ

प्रकृति की देख इतनी सुंदरता,
मन कितना हर्षाया है।
सावन की हरियाली में,
भीगी पत्तियों से,
खिले फूलों से सारा आलम खुशियों से शर्माया है।

किया जिसने नया श्रृंगार धरती का,
अपनी ही प्यारी छवि को दर्शाया है।
उसकी हर कृति में कितनी है श्रेष्ठता,
ये सब देखकर अब मैंने खुद को भी श्रेष्ठ पाया है।

टिन्नी की पिक्सी

श्रीमती कुमुद वर्मा
पत्नी, प्रोफेसर संजय वर्मा

पालतू कुत्ते शुरू से ही लुभाते हैं। टिन्नी बचपन से ही अपने घर में एक पालतू कुत्ता लाना चाहती थी। किसी का भी पालतू कुत्ता देखती तो टिन्नी को जाकर उसे छूने, सहलाने और उसके साथ खेलने का मन होता था। बालमन जिम्मेवारी नहीं जानता था कि एक कुत्ता घर पर लाने से काम कितना बढ़ जाता है लेकिन टिन्नी के कहने पर उसके माता-पिता ने उसको एक फीमेल कुत्ता घर पर लाकर दिया जिसका टिन्नी ने नाम रखा-पिक्सी। आइए पढ़ते हैं पिक्सी की कहानी -

पिक्सी लगभग 27 दिन की थी जब उसको घर पर लाया गया। जैसे ही उस को घर पर लेकर आए, माँ ने पिक्सी को देखा और उनकी आँखों में बहुत सारे सवाल आ गए कि यह केवल कुछ ही दिन की ही है; कम से कम 2 महीने का बच्चा घर पर लाना चाहिए। इसको कैसे संभालेंगे ? इसको इसकी माँ से अलग क्यों कर दिया?

टिन्नी पर मानो इन सवालों का कोई असर नहीं हो रहा था। वह बस उस कुत्ते को अपने घर में रखना चाहती थी। हर हाल में। कुत्ता अभी अपने टांगों पर खड़ा भी नहीं हो सकता था। वह धीरे-धीरे फर्श पर रेंग रहा था। शायद कमजोरी थी। माँ के सवालों का जवाब जो व्यक्ति कुत्ता लेकर आया था, उसने दिया। इसकी माँ कमजोर है। उसके पास 5 और बच्चे हैं। वह बच्चों की देखभाल नहीं कर पा रही है इसलिए हमने इसको देने का सोचा है। रखवाले की बात का माँ पर भी असर हुआ। टिन्नी की माँ ने उस बच्चे की देखभाल करने की ठानी और उसका प्यार से रखरखाव करने लगी।

वक्त पर उसको खाना दिया जाता। उसका हर तरह से ध्यान रखा जाता और उसको सभी टीके डॉक्टर की सलाह के अनुसार समय पर लगवा दिए गए। उस रखवाले ने टिम्मी की मम्मी को एक डॉक्टर का फोन नंबर भी दे दिया और बताया कि समय-समय पर वह उससे सलाह ले सकते हैं और जरूरी दवाइयाँ और इंजेक्शन उनकी सलाह से दे सकते हैं। टिन्नी ने प्यार से उस बच्चे का नाम रखा पिक्सी। गोरे चिट्टे रंग का लैब्राडोर - जो स्वभाव से ही शांत और प्रिय होते हैं।

पिक्सी धीरे-धीरे सब के मन में अपनी जगह बनाने लगी। पिक्सी को घर के बच्चों की तरह रखा जाता - साफ सुथरा। पूरे घर में घूमने की आजादी थी। पिक्सी का जब मन होता, जहाँ मर्जी होती वहीं सोती। धीरे-धीरे माँ को लगा कि नहीं इसको अब ट्रेनिंग की जरूरत है। पिक्सी 2 महीने की होने आई थी। मम्मी ने उसके लिए एक छोटा-सा बिस्तर बनवा दिया था।

उसके लिए सुंदर-सुंदर गले के पट्टे आ गए थे और डॉक्टर की हिदायत के अनुसार पिक्सी की जरूरत का सारा सामान उपलब्ध रहता था। धीरे-धीरे बड़ी होती हुई पिक्सी डॉक्टरी सलाह के अनुसार गोदी में ही रहा करती थी। जब उसको बाहर घुमाने का समय आया तो टिन्नी और उसके भाई-बहन उसे दिन में चार बार घुमाने लगे।

मम्मी सोच में पड़ गईं इस तरह तो पिक्सी की आदतें बिगड़ जाएंगी। धीरे-धीरे उन्होंने बच्चों को समझाया और बच्चे फिर बारी-बारी उसको घुमाने ले जाते। पिक्सी बड़ी हो चली थी। उसका जन्मदिन मनाया गया।

उसके साथ उसके चार-पाँच मित्र कुत्तों को बुलाया गया। माँ ने टिन्नी से पूछा कि पिक्सी का जन्मदिन कैसे

मनाएंगे? इसको तो केक नहीं दे सकते। टिन्नी ने माँ का ज्ञान बढ़ाते हुए उन्हें बताया कि डॉग्स के लिए केक अलग से मिलता है।

टिन्नी और उसके मित्र पिज्जा खाएंगे और पिक्सी और उसके मित्र डॉग्स, डॉग फूड ही खाएंगे। आप चिंता ना करें। हम सब संभाल लेंगे। बच्चों ने एक बहुत ही आयोजित तरीके से पिक्सी का जन्मदिन मनाया। मम्मी बच्चों के आयोजन को देखकर बहुत चकित थी। बच्चे सब जानते थे। धीरे-धीरे माँ की चिंता पिक्सी को लेकर कम होने लगी।

पिक्सी बड़ी हो रही थी। एक दिन जब पिक्सी को घुमाने के लिए ले जाया गया तो थोड़ी दूर चलकर पिक्सी हल्का सा लंगड़ा कर चलने लगी और जाकर गार्डन में बैठ गई। पिक्सी ने और कोई भी हरकत नहीं की लेकिन वह थोड़ा-सा लंगड़ा कर चल रही थी।

क्या हुआ ? कैसे हुआ? कुछ पता नहीं चला लेकिन मम्मी ने उसको तुरंत डॉक्टर के पास ले जाना उचित समझा। पिक्सी, टिन्नी और मम्मी डॉक्टर के पास गए तो पता चला कि इसे शायद कुत्ते ने काटा है। जरूरी दवाइयाँ और इंजेक्शन पिक्सी को दे दिए गए और बेचारी पिक्सी काफी दिन तक दर्द सहती रही।

समय के साथ-साथ पिक्सी और बड़ी हो चली थी और घर पर सब का लगाव पिक्सी से बढ़ गया था। आज पिक्सी का छठा जन्मदिन था। पिक्सी को आज पापा स्विमिंग के लिए डॉग्स क्लब लेकर गए थे। पिक्सी बहुत दिनों बाद घर से बाहर निकली थी।

कोरोना वायरस के कारण पापा भी बहुत दिन तक उसको कहीं लेकर नहीं जा पाए थे इसलिए दोनों बहुत खुश थे। पापा पिक्सी को स्विमिंग पूल में उतारने वाले ही थे कि एक दूसरे मालिक का कुत्ता, जिसकी ब्रीड ग्रेडन थी ; एकदम से चुपचाप पापा के पीछे से आया और पिक्सी पर उसने हमला कर दिया। पिक्सी बुरी तरह घायल हो गई और पापा से कुछ कहते नहीं बना। वह तुरंत पिक्सी को लेकर डॉक्टर के पास भागे। पिक्सी उस तरह शांत रही जिस तरह वह पहली बार थी लेकिन आज उसके चार घाव थे। पिछली बार दो ही थे। आँख के पास उस कुत्ते ने अपने दांत घुसा दिए थे। उसका गला पूरा लहूलुहान था और फिर से उसकी टांग में दांत गड़े हुए थे ।

पापा ने पिक्सी को बहुत प्यार से संभाला। उसे डॉक्टर को दिखाया। जरूरी दवाइयाँ लीं। उसको फिर से इंजेक्शन लगा। पिक्सी पाँच-छह दिन में शायद ठीक हो जाएगी लेकिन मम्मी और टिन्नी आज जी भर कर रोए।

उनकी चर्चा हुई कि घर में किस तरह का कुत्ता रखना चाहिए। क्या उन लोगों को मालूम नहीं था जो वह एक शिकारी कुत्ते को क्लब में लेकर आ गए? टिन्नी इस तरह के बहुत से सवाल कर रही है। पापा के पास कोई जवाब नहीं है तो क्लब के मालिक ने पूरा आश्वासन दिया है कि वह आगे से ऐसे कुत्ते को अपने क्लब में नहीं आने देगा ताकि और लोगों को किसी तरह की असुविधा ना हो।

आगे बढ़ते रहेंगे

श्रीमती कुमुद वर्मा
पत्नी, प्रोफेसर संजय वर्मा

आएंगी रुकावटें, उठेंगे बवंडर,
रोकेंगी बाधाएँ, उठेंगी उंगलियाँ,
डगमगाऐं चाहे, आगे बढ़ते कदम,
बुलंद हौसले से हम , आगे बढ़ते रहेंगे।

दुश्मनों के मंसूबे, उनके तौर-तरीके,
सब जानते समझते, उनकी चालें,
कुछ ना कहते, बहुत कुछ समझते,
पाक दिल से हम, आगे बढ़ते रहेंगे।

निगाहें अपनी, लक्ष्य पर जमा,
बढ़ते आँधी व, तूफान से टकरा,
सत्य का दामन, सहारे को थाम,
हम अनथक, आगे बढ़ते रहेंगे।

100 इल्जाम लगे, मगर सब झूठलाते,
भले ही उनींदे, हर दम मुस्कुराते,
अपने कदम बढ़ाते, अपनी हिम्मत जुटाते,
दुश्मनों के सिर झुका, आगे बढ़ते रहेंगे।

पर्यावरण और आर्थिक विकास

मोनिका अग्रवाल
सहायक प्रबंधक

आर्थिक विकास – आए दिन उपयोग में आने वाले दो शब्द और अधिकतर टी.वी. पर, समाचारों में और राजनेताओं के भाषण में प्रयोग किए जाने वाले शब्द जो प्रायः गरीबों के मुख से उनके विचारों से, उनके जीवन से कोई सरोकार ही नहीं रखते।

खैर, आर्थिक विकास दुनिया में अस्तित्व तो रखता है, चाहे किसी भी रूप में हो। वैसे इन दो शब्दों को परिभाषित करना सरल नहीं है। हर कोई अपने मतलब से इनका मतलब निकाल लेता है, फिर भी, सामान्य और बहुत ही सीधे से शब्दों में कहें तो आर्थिक विकास अर्थात् नित नई शोधों और सुविधाओं की अधिकाधिक उपलब्धि। जितनी ही सुविधाएँ, जितने ही सुख जनता तक पहुँचेंगे, उतना ही आर्थिक विकास होगा।

यदि आपके देश के लोग पढ़ाई-लिखाई कर रहे हैं, आपके डॉक्टर्स को नई-नई बीमारियों और संबंधित दवाइयों / इलाजों का ज्ञान है, आपके इंजीनियर्स अद्यतन तकनीकों के उपयोग से मजबूत इमारतें बना रहे हैं, आपके वैज्ञानिकों को आविष्कार और उससे जुड़े अनुसंधानों के लिए वित्त एवं अन्य सुविधाएँ मिली हैं, तो आपका देश आर्थिक विकास के पथ पर अग्रसर है। ये सब तो केवल कुछ ही उदाहरण हैं, ऐसे तो ना जाने कितने ही मापदंड हैं आर्थिक विकास को जाँचने के लिए।

आर्थिक विकास अपने साथ केवल विकास नहीं लाता, वह लाता है साथ में कभी ना ठीक किया जा सकने वाला नुकसान, जो कदाचित भविष्य को विनाश के गर्त में मंद गति से धकेल रहा हो। जी हाँ, विकास से विनाश की ओर अथवा अर्श से फर्श की ओर की यह प्रक्रिया इतनी मंद है कि इंसान अपने स्वयं के जीवन में यह नहीं देख सकता। बड़े-बड़े कारखाने और मीलें इंसान ने खोल लिए, चरखे के बदले पावर लूम मशीनों में कपड़े बनने लगे, कुदरती रंगों के बदले रसायनों से वस्त्र रंगीन होने लगे, लेकिन यही रसायन और इन्हीं मशीनों का धुआँ हमारे प्राकृतिक संसाधनों को भस्म करने लगा। ये रसायन नदियों, नालों, तालाबों से होते हुए समुद्र में मिलने लगे, इंसान, पशु-पक्षी, प्राणी और जल जीवन पर दुष्प्रभाव डालने लगे। इनका धुआँ हमारे वायुमंडल में घुलने लगा और विष की भाँति हवाओं को जानलेवा बनाने लगा।

यदि हम आँकड़े देखें तो यह सिद्ध हो जाएगा कि दमा, चर्मरोग, फेफड़ों की बीमारियाँ आदि पाँच दशक पहले की अपेक्षा अभी कितनी सामान्य हो गई हैं। हर कोई किसी ना किसी तरह की दवाइयों पर ही जीवित दिखाई पड़ता है।

इसी आर्थिक विकास के चलते हमने अपने जंगलों को काट दिया, क्योंकि हमें रेलवे लाइन जो डालनी थी, हमने पेड़ काट दिए क्योंकि हमें इमारतें बनानी थीं, फर्नीचर बनाना था, हमने धरती की गोद को भी खोद डाला, क्योंकि हमें धातु चाहिए थे, हमें खनिज चाहिए थे। इन सबके बाद हम ही शिकायत करते रहते हैं कि फलाँ जगह इतना बड़ा भूकंप आया, इतनी गर्मी बढ़ रही है, बारिश नहीं हो रही इत्यादि। पेड़ काटेंगे, विस्फोटक सामग्री प्रयोग करेंगे, परमाणु बम छोड़ेंगे, मिसाइलें चलाएँगे तो तापमान बढ़ेगा ही। इसी तापमान को कम करने का एक माध्यम होते हैं वृक्ष, परंतु हम नए वृक्ष लगाते ही नहीं।

मंगल ग्रह पर सभी देशों को जाना है, चंद्रमा पर पानी है या नहीं यह पता भी लगाना है, लेकिन हम यह नहीं सोच पा रहे कि अपने ग्रह को कैसे बचाना है। चलिए, ग्रहों की जानकारी की ही बात करें तो हम और अन्य देश आए दिन जो नए-नए उपग्रह अवकाश में भेजते हैं, उनका बाद में क्या हुआ ये हम नहीं जानते। हमें नहीं पता कि ये उपग्रह अवकाश

में ना जाने कितना कचरा फैला रहे हैं और खेद के साथ यह कहना पड़ रहा है कि अवकाश में या अवकाश के लिए कोई स्वच्छता अभियान नहीं चलता। आने वाले कल में इन्हीं उपग्रहों और स्पेस शटल के टुकड़ों के धरती से टकराने पर कौन-सी विपत्ति आ जाए यह कोई नहीं कह सकता।

जैसे कि, पहले भी कहा गया है कि हमने जंगल काट दिए और वहाँ शहर बसा लिए, इससे हमने जंगल की हरियाली और उसके परिणामस्वरूप वर्षा की मात्रा तो कम कर ही दिया, साथ ही धरती का कटाव भी बढ़ गया। जंगल में स्वयं बढ़ने वाले चिरकालीन वृक्ष जो अपनी जड़ों से धरती को पकड़कर रखते थे, उन्हें काटकर हमने धरती का कटाव बढ़ा दिया। इसके अलावा, वन्य प्राणियों का आवास छीन लिया और अब जब वे भोजन की तलाश में गाँवों और आसपास की बस्तियों पर हमला कर देते हैं तो हम कहते हैं कि ये जानवर हमारी बस्ती में आ गए। हम यह नहीं सोचते कि सच में तो हमारी बस्ती उनके जंगल में आ गई है।

समाचारों में आए दिन सुनते हैं कि कुछ देशों में अब पानी खत्म होने की कगार पर है, ऐसे में बड़े कारखाने ना सिर्फ पानी का अपव्यय कर रहे हैं बल्कि शेष पानी को दूषित भी कर रहे हैं। यह कैसी दुनिया हम अपनी आने वाली पीढ़ी के लिए छोड़ जा रहे हैं, जहाँ ना खाने को शुद्ध आहार है, ना पीने को शुद्ध पानी और ना ही साँसों में जाने वाली हवा शुद्ध है। सभी कुछ तो दूषित होता जा रहा है। यदि सरकारों के साथ-साथ आम जनता और व्यावसायिकों ने समय रहते साझा प्रयास नहीं किया तो कदाचित इंसान और बाकी के सजीवों की पूरी नस्ल ही खत्म हो जाएगी।

हिंदी हमारे देश और भाषा की
प्रभावशाली विरासत है।

- माखनलाल चतुर्वेदी

अच्छा सुनो!

रुचि गहलावत,
अकादमिक सहयोगी

अच्छा सुनो!
कितने दिन हो गए खुद से बातें किये?

कभी टाइम निकालो; और बैठो खुद के साथ,
थोड़ा-सा डांटना खुद को,
और फिर खूब सारा प्यार भी जताना।
क्यूंकि; काम का बहाना मार कर बहुत कम करते
हो खुद से मुलाकात,
और काम, उसका क्या है;
वो तो ज़िन्दगीभर तुम्हारे साथ रहेगा।
कुछ है, तो, उन बीत गए लम्हों का,
जो तुम खुल के जी सकते थे।
कुछ है, तो, उन छूट गए रिश्तों का, जो एक
मुलाकात से और गहरे हो सकते थे।

हर चीज़ और हर काम में परफेक्शन
को क्यों ढूंढ़ना है?
जो जरूरी है कभी-कभी उसकी तरफ मुड़ो ना।
हाँ, हैं ऐसे लोग जो तुम्हे रोज़ याद करते हैं,
तो कभी-कभी उनको तुम भी कॉल करो ना।
ज़िन्दगी तो यूँ ही चलती रहेगी,
और कैलंडर भी यूँ ही बदलते रहेंगे,
कुछ साथ रहेगा तो ये छोटी-छोटी यादें, वो
अटपटी-सी बातें और लम्हों की माला,
अब देखना है कि जो ज़रूरी था उसको
तुमने कैसे संभाला,
या एक और बहाना देकर खुद से
मुलाकात को टाला?
और अगर जीतना है ना, तो काम नहीं ,
रिश्तों और ज़िन्दगी की रेस में जीतकर दिखाना।

साक्षरता द्वारा महिलाओं के लिए समानता

शिल्पा नागरे
कार्यकारी

"किसी भी समाज की स्थिति का ज्ञान उस समाज की महिलाओं की शिक्षा से ज्ञात होता है।"

- नेल्सन मंडेला

जैसा कि उपरोक्त वाक्य से यह स्पष्ट होता है कि एक समाज की स्थिति समाज में रहने वाली महिलाओं की शिक्षा स्तर से की जा सकती है। यह केवल एक अवधारणा नहीं है बल्कि विश्व प्रसिद्ध विचारक नेल्सन मंडेला जी द्वारा कहे गए वाक्य हैं।

वर्तमान में साक्षरता की बात करने से पूर्व इतिहास में महिलाओं की साक्षरता और समानता पर ध्यान केंद्रित करते हैं। प्राचीन समय में एक महान महिला लेखिका थी, लोपामुद्रा। वह काल इस सत्य का प्रमाण है कि समानता का हक केवल एक विशेष लिंग अथवा वर्ण का नहीं, बल्कि समस्त व्यक्तियों को होना चाहिए। यह तथ्य यह भी दर्शाता है कि उस समय भारतवर्ष अपनी भौतिकता के लिए समस्त विश्व में विख्यात था। समाज में शिक्षा प्राप्ति का हक सभी को समान था, परिणामस्वरूप समाज में नस्लभेद नहीं था।

उसी इतिहास के पन्नों को आगे बढ़ाते हैं तो हमारा ध्यान 'स्वतंत्रता पूर्व' के भारत पर जाता है। इस समय भारत की स्थिति अत्यंत गंभीर थी, आर्थिक रूप से भी और सामाजिक रूप से भी। यही कारण है कि, कई प्रकार से समाज सुधारों के चलते शिक्षा को और खास कर, 'स्त्री शिक्षा' को ध्यान में रखकर आंदोलन चलाए गए। पश्चिमी भारत में, ज्योतिबा फुले और उनकी पत्नी सावित्रीबाई फुले महिला शिक्षा के अग्रदूत बन गए। उन्होंने वर्ष 1848 में पुणे में लड़कियों की शिक्षा के लिए एक स्कूल शुरू किया। सावित्रीबाई फुले को भारतीय नारीवाद की जननी भी माना जाता है। उन्होंने महिलाओं के अधिकारों के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए 'महिला सेवा मंडल' नामक एक गुट की भी स्थापना की।

सावित्री बाई फुले

वर्तमान में 2021 की रिपोर्ट के आंकडों के अनुसार, आज देश में साक्षरता 77.7 प्रतिशत हो गई है। आज देश के 84.7 प्रतिशत पुरुष तो 70.3 प्रतिशत महिलाएँ शिक्षित हैं। फिर भी आज हमारे समाज के कुछ वर्गों का यह मानना है कि स्त्री/बेटी तो पराया धन है, और उसका स्थान रसोई में ही है। इस तरह का लिंग भेद आज भी कहीं-कहीं बरकरार है। कुछ-कुछ वर्ग आज भी महिला शिक्षा को उतना महत्त्व नहीं दे रहे हैं। शायद इसके पीछे एक बड़ा कारण आर्थिक भी हो सकता है। घर संभालने की जिम्मेदारी, घर के करीब विद्यालयों का ना होना, उच्च शिक्षा प्राप्ति के लिए परिवार से सहमति ना मिलना इत्यादि।

शिक्षा वह पंख है,
जो स्त्री रूपी पक्षी को,
आकाश में स्वतंत्र उड़ने का,
साहस प्रदान करता है।

शिक्षा और समानता एक ही डोरी के दो छोर हैं। उदाहरण के तौर पर, दो परिवार हैं। एक परिवार में माता जी शिक्षित हैं, वह अपने बच्चों को शिक्षा के लिए प्रेरित करती हैं और समझाती हैं कि शिक्षा मनुष्य को मानव बनाती है। इसके विपरीत, दूसरे परिवार में माता जी शिक्षा से वंचित रह गईं और परिवार के बच्चे शिक्षा हेतु विद्यालय तो जाते हैं परंतु जो सीख और ज्ञान एक शिक्षित माता से मिलता है वह इन बच्चों को नहीं मिल पाता है।

शिक्षा महिलाओं को अपने पैरों पर खड़े होना भी सिखा देती है। वर्तमान में अनेकों महिलाएँ हैं जो परिवार और दफ़्तर दोनों को बराबर से संभाल रही हैं। साक्षर महिला अपने दायित्वों का ध्यान रखती हैं साथ-साथ वे अन्य महिलाओं को भी उनके दायित्वों से अवगत कराती हैं। साक्षर महिला को सरकार द्वारा मिल रही सभी योजनाओं और लाभ का ज्ञान होता है और इसी कारण वह और प्रयास करके आगे बढ़ने की लालसा रखती है। साक्षरता को बढ़ाने में तथा समाज में महिलाओं की समानता के लिए सरकारों द्वारा अनेक योजनाओं का आरंभ किया गया है। लाडली लक्ष्मी योजना, घर-घर विद्यालय योजना, लेपटॉप वितरण योजना, महिला शिक्षावृत्ति आदि।

एक समाज का सुधार कोई एक व्यक्ति अकेले नहीं कर सकता। यह कर्तव्य प्रत्येक व्यक्ति का होता है। अगर समाज में महिलाओं को समानता का स्थान चाहिए तो सभी को मिलकर प्रयत्न करना होगा। प्रत्येक वर्ग, लिंग, समाज और धर्म के लोगों को समझना होगा और साथ ही आगे आकर प्रयास करना होगा। तभी एक आदर्श समाज बनेगा एवं महिलाएँ अधिक से अधिक संख्या में शिक्षित होंगी और इस तरह समाज आगे बढ़ेगा। गाँधी जी मानते थे कि शिक्षा किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व का आईना होती है। उस व्यक्ति की विचारधारा का यह परिमाण होती है। हम सब संकल्प लें कि आने वाले वर्षों में महिला साक्षरता दर सौ प्रतिशत हो और समाज में महिलाएँ भी बराबर की हिस्सेदार हों।

शिक्षा में ही है महिलाओं का आने वाला कल,
साक्षरता से ही होगा उनका जीवन सफल ।।

जवानी बीती बुढापा आया

प्रतिमा भारती
पूर्वछात्रा, पीजीपी-एबीएम (2014-16)

वक्त ऐसे बीते जैसे आंधी आई और गई,
धूल उठी इतनी फिर भी पता न चला।
धरती डोलीं आसमान डोले,
एक क्षण में सब खो चला था।
बारिश आई बसंत आया,
पर कुछ भी उसे बचा ना सका था।
वक्त बीतते जा रहे थे ऐसे ...
जैसे काटे नहीं कट रहे हो,
बचपन बीता... जवानी आई... जवानी बीती...
बुढापा आया... और अब बुढापे ने अपना असर
दिखाया था।
ना दिन कट रही ना राते... ना मौसम बदल रहे...
ना हीं किस्मत,
ना बाल - बच्चे साथ है, ना ही अब ये शरीर...
ना हीं परिवार साथ है, ना हीं पडोसी।

साथ है तो बस मेरा प्यारा साथी,
जो पास बैठे मुस्कुरा रहा मुझ पर।
दिल चाह रहा बात करू उससे खुल कर,
पर जुबां है कि, साथ नहीं दे पा रही।
लेकिन ये झुर्रियाँ... ये हम दोनो कि झुर्रियां बडी
नसीब की हैं,
बहुत कुछ आपस मे कह रही सुन रहीं है।
हमारे सफेद बाल भी आपस मे अपनी कहानी
कह रहे हैं।

बस अब बहुत हुआ अब और ना जिया जाता ऐसे,
कुछ आखिरी सांस ही बची है इस ख्वाहिश में..
की एक बार फिर से जी पाऊं बचपन की दुनिया में,
कुछ जवानी की यादों मे, कुछ हमसफ़र की बाहों
मे।
काश ये वक्त पीछे मुड़ जाता,
काश की सब कुछ वहीं रुक पाता।

डॉ. विक्रम अंबालाल साराभाई

रवि डी. पारेख
अकादमिक सहयोगी

"कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन। मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि।।"
(श्रीमद् भगवत गीता, अ.2/47)

जब कोई व्यक्ति एक स्वप्नद्रष्टा की तरह कठोर परिश्रम की असाधारण क्षमता के साथ इस उद्देश्य के साथ कार्य करता है कि विज्ञान के प्रायोगिक उपयोग मेरे देश के आम आदमी तक पहुँचे। ऐसी महान सोच रखने वाला एक राष्ट्र प्रेमी जो राष्ट्र के वास्तविक संसाधनों की तकनीक तथा आर्थिक मूल्यांकन के आधार पर देश की समस्याओं के लिए उन्नत प्रौद्योगिकी में सक्षमता प्राप्त करने की दिशा में अविरत, निस्वार्थ भाव से कार्य करता है तब असामान्य, अद्भुत और अविश्वसनीय परिणाम प्राप्त होते हैं।

जब हम इस महान व्यक्ति के बारे में सोचते हैं तब हमे भारतीय होने पर गर्व महसूस होता है। एक साथ अनेक विशेषताओं के धनी डॉ. विक्रम साराभाई के व्यक्तित्व में सृजनशील वैज्ञानिक, सफल और दूरदर्शी उद्योगपति, उच्च कोटि के प्रवर्तक, महान संस्था निर्माता, अलग किस्म के शिक्षाविद, कला पारखी, सामाजिक परिवर्तन के ठेकेदार, अग्रणी प्रबंध प्रशिक्षक जैसी अनेकों विशेषताएँ समाहित थीं। वे एक ऐसे उच्च कोटि के इन्सान थे जिसके मन में दूसरों के प्रति असाधारण सहानुभूति थी। वे एक ऐसे व्यक्ति थे उनके संपर्क में जो भी आता, उनसे प्रभावित हुए बिना नहीं रहता। मैं बात कर रहा हूँ एक ऐसे व्यक्ति की जिसको भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम का पितामह माना जाता है। उनके द्वारा शुरू किए गए भारत के अंतरिक्ष कार्यक्रम जो आज पूरे विश्व में विख्यात है। जिन्होंने अनेकों लोगों को स्वप्न देखना और उस स्वप्न को वास्तविक बनाने के लिए काम करना सिखाया। भारत के अंतरिक्ष कार्यक्रम की सफलता इसका प्रमाण है। इस महान इंसान का नाम है.. डॉ. विक्रम अंबालाल साराभाई।

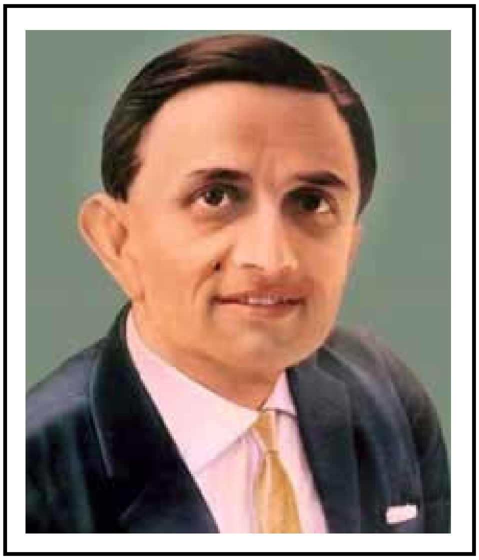

विक्रम साराभाई का जन्म 12 अगस्त, 1919 को अहमदाबाद के प्रगतिशील उद्योगपति के संपन्न परिवार में हुआ था। वे श्री अंबालाल एवं श्रीमती सरला देवी के आठ बच्चों में से एक थे। कुछ महान व्यक्तित्व जैसे गुरुदेव रवीन्द्रनाथ, जे कृष्णामूर्ति, मोतीलाल नेहरु, वी.एस. श्रीनिवास शास्त्री, जवाहरलाल नेहरु, सरोजनी नायडू, मौलाना आजाद, सी. एफ. एड्रूज, सी.वी. रमन आदि, जब अहमदाबाद आते थे, तब साराभाई परिवार के साथ रहते थे। ऐसे महान व्यक्तित्व के सानिध्य ने विक्रम साराभाई को बहुत ही प्रभावित किया था।

डॉ. विक्रम साराभाई सदा चीजों को बेहतर और कुशल तरीके से करने के बारे में सोचते रहते थे। उन्होंने जो भी किया उसे सृजनात्मक रूप में किया। युवाओं के प्रति उनकी उद्विग्नता देखते ही बनती थी। डॉ. विक्रम साराभाई को युवा

वर्ग की क्षमताओं में अत्यधिक विश्वास था। यही कारण था कि वे उन्हें अवसर और स्वतंत्रता प्रदान करने के लिए सदा तैयार रहते थे। उनमें एक प्रवर्तक वैज्ञानिक, भविष्य द्रष्टा, औद्योगिक प्रबंधक और देश के आर्थिक, शैक्षिक और सामाजिक उत्थान के लिए संस्थाओं के परिकाल्पनिक निर्माता का अद्भुत संयोजन था। उनमें अर्थशास्त्र और प्रबंध कौशल की अद्वितीय सूझ थी।

डॉ॰ विक्रम साराभाई एक महान संस्थान निर्माता थे। उन्होंने विभिन्न क्षेत्रों में बड़ी संख्या में संस्थानों को स्थापित करने में अपना सहयोग दिया। साराभाई ने सबसे पहले अहमदाबाद वस्त्र उद्योग की अनुसंधान एसोसिएशन (एटीआईआरए) के गठन में अपना सहयोग प्रदान किया। यह कार्य उन्होंने कैम्ब्रिज से कॉस्मिक रे भौतिकी में डॉक्ट्रेट की उपाधि प्राप्त कर लौटने के तत्काल बाद हाथ में लिया था। डॉ॰ विक्रम साराभाई द्वारा स्थापित कुछ सर्वाधिक जानी-मानी संस्थाओं के नाम इस प्रकार हैं- भौतिक अनुसंधान प्रयोगशाला (पीआरएल), अहमदाबाद; भारतीय प्रबंधन संस्थान (आईआईएम) अहमदाबाद; सामुदायिक विज्ञान केन्द्र; अहमदाबाद, दर्पण अकादमी फॉर परफार्मिंग आर्टस, अहमदाबाद; विक्रम साराभाई अंतरिक्ष केन्द्र, तिरुवनन्तपुरम; अंतरिक्ष अनुप्रयोग केंद्र, अहमदाबाद; फास्टर ब्रीडर टेस्ट रिएक्टर (एफबीटीआर) कलपक्कम; वैरीएबल एनर्जी साईक्लोट्रोन प्रोजक्ट, कोलकाता; भारतीय इलेक्ट्रानिक निगम लिमिटेड (ईसीआईएल) हैदराबाद और भारतीय यूरेनियम निगम लिमिटेड (यूसीआईएल) जादुगुडा, बिहार।

डॉ॰ साराभाई सांस्कृतिक गतिविधियों में भी गहरी रूचि रखते थे। वे संगीत, फोटोग्राफी, पुरातत्व, ललित कला और अन्य अनेकों क्षेत्रों से जुड़े रहे। अपनी पत्नी मृणालिनी के साथ मिलकर उन्होंने मंचन कलाओं की संस्था दर्पण अकादमी का गठन किया। उनकी बेटी मल्लिका साराभाई बड़ी होकर भरतनाट्यम और कुचीपुड्डी की सुप्रसिध्द नृत्यांग्ना बनीं।

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) की स्थापना उनकी सबसे बड़ी उपलब्धियों में से एक थी। रूसी स्पुतनिक प्रक्षेपण के बाद उन्होंने सरकार को भारत जैसे विकासशील देश के लिए अंतरिक्ष कार्यक्रम के महत्व के बारे में सफलतापूर्वक आश्वस्त किया। होमी भाभा की मृत्यु के बाद, डॉ. विक्रम साराभाई भारत में परमाणु ऊर्जा संयंत्रों की स्थापना और विकास के लिए काफी हद तक जिम्मेदार थे। वे उपग्रह संचार के माध्यम से देश के दूरदराज के इलाकों में बच्चों को शिक्षित करने में गहन रूप से शामिल थे और प्राकृतिक संसाधनों के उपग्रह-आधारित रिमोट सेंसिंग के विकास के लिए काम किया। डॉ. विक्रम साराभाई ने 1962 में शांति स्वरुप भटनागर पदक प्राप्त किया। वर्ष 1966 में पद्म भूषण तथा वर्ष 1972 में पद्म विभूषण (मृत्योपरांत) से सम्मानित हुए।

उन्होंने किसी समस्या को कभी कम करके नहीं आँका। उनका अधिकतम समय उनकी अनुसंधान गतिविधियों में गुजरा और मृत्युपर्यन्त उन्होंने अपनी असामयिक अनुसंधान का निरीक्षण करना जारी रखा। उनके सानिध्य में 19 लोगों ने अपनी डॉक्ट्रेट का कार्य सम्पन्न किया। डॉ॰ साराभाई ने स्वतन्त्र रूप से और अपने सहयोगियों के साथ मिलकर राष्ट्रीय पत्रिकाओं में 86 अनुसंधान लेख लिखे। उन्होंने भारत के विभिन्न क्षेत्रों में बड़ी संख्या में संस्थान स्थापित करने में अपना सहयोग देते हुए भारत के भविष्य को सुनहरे अक्षरों में लिखा है। डॉ. विक्रम साराभाई ने देश की रॉकेट प्रौद्योगिकी को भी आगे बढाया। उन्होंने भारत में उपग्रह टेलीविजन प्रसारण के विकास में भी अग्रणी भूमिका निभाई। आज हम 4जी ,5जी और सैटेलाइट की कई सेवाओं का लाभ उठा रहे हैं, इसी सैटेलाइट सिस्टम की मदद से आज भारत में डिजिटलाइजेशन हो रहा है। इसकी नींव रखने वाले डॉ. विक्रम साराभाई जिन्होंने आने वाले कई वर्षों तक अपनी प्रतिभा से सम्पूर्ण भारत को आलोकित किया है और देश के गौरव को बढाया हैं। केवल अपने कर्म की तरफ संपूर्ण समर्पित, अपने देश की अविरत सेवा करने वाले डॉ. विक्रम साराभाई को कोटि कोटि नमन।

राष्ट्रीय व्यवहार में हिंदी को काम में लाना देश की शीघ्र उन्नति के लिए आवश्यक है।

- महात्मा गाँधी

तृषित

श्रीमती प्रिया एस. प्रसाद
माँ, आर्यन प्रसाद, पीजीपी-20

अरे! इतना अंधेरा कैसे हो गया? जब मैं सोया था तब तो यहाँ से चाँद भी नजर आ रहा था और कल सुबह सूरज भी दिखा था पर आज की सुबह सूरज क्यों नहीं दिख रहा? उफ़! यह अंधेरा, कुछ दिखाई नहीं दे रहा, क्या करूँ मैं? बाहर कोई है? क्या कोई मुझे सुन रहा है? प्लीज कोई इस अंधेरे को हटाओ, मुझे रोशनी नजर नहीं आ रही है। मुझे रोशनी देखनी है। मुझे हवा चाहिए, मुझे दुनिया देखनी है किसने किया यह अंधेरा क्यों किया यह अंधेरा? हे! भगवान मुझे इस अंधेरे से बाहर निकालो। यहाँ से चाँद कितना खूबसूरत दिखता है कभी आड़ा, कभी तिरछा, कभी गोल, कभी लाल तो कभी पीला और उसके साथ वे तारे भी तो कितने खूबसूरत लगते हैं। जब कोई तारा जब टूटता है तो वह ऐसे लगता है कि जैसे मेरे पास ही आ जाएगा और मैं अपनी दोनों बाहें फैलाए उसको थामने के लिए तैयार रहता हूँ लेकिन वह गायब हो जाता है और ऐसे ही तारों को देखते-देखते मेरी सुबह हो जाती है और सुबह उठते ही जब मुझे आसमान में सूरज दिखता है तो ऐसे लगता है जैसे मुझ में नई जान आ गई हो।

फिर धीरे-धीरे गाड़ियों मोटरों का शोर, हवाएँ और कई बार उन हवाओं के साथ उड़ते हुए हुए पत्ते भी मेरे पास आ जाते। कुछ दिन पहले तो एक कबूतर और कबूतरी का जोड़ा भी आए थे मेरे पास। यहाँ बैठकर इतना प्यार कर रहे थे कि मैं उनको निहारता ही रहा। मैं ही तो उनके अंडों और चूज़ों की देखभाल करता ... मैं कौन?

मैं हूँ एक झरोखा। एक ऐसा झरोखा जिससे आती है ठंडी हवा, एक ऐसा झरोखा जो अंधेरे पड़े कमरे में रोशनी की किरण दिखाता है, जिससे पता चलता है कि उठ जाओ सुबह हो गई है। एक ऐसा झरोखा जो लोगों को एहसास कराता है कि बाहर भी जिंदगी है। एक ऐसा झरोखा जो लोगों को उनके घरों में उनके जिंदा रहने का एहसास कराता है। चाहे बड़ी-बड़ी खिड़कियाँ ना हों, बड़े-बड़े बरामदे और छत ना हों, कितना भी बंद घर हो लेकिन उसमें एक झरोखा तो होता ही है। इतिहास की बात करें तो महलों में मेरी क्या शान होती थी। झरोखे पर खड़े होकर ही रानियाँ प्रकृति की खूबसूरती निहारा करती थीं। उनके प्रेम-संबंधों को परवान चढ़ते मैंने ही देखा तो उनके प्रेम-पत्र भी मेरे ही पास आते। लोग पुराने ज़माने में मेरा बहुत ख्याल रखते थे। समय-समय पर सफाई भी करते थे लेकिन अब तो शहर की बड़ी इमारतों में गायब-सा होने लगा हूँ मैं। कूलर और एसी लगने लगे तो खिड़कियाँ बंद हुई और घरों के आधुनिक डिज़ाइन बने तो उसमें झरोखों को कोई जगह नहीं मिली। फिर भी अभी भी कुछ लोग मुझे रसोई में जगह तो देते हैं लेकिन मेरे सामने पंखा लगा देते हैं जिससे न कोई पक्षी आता है न ही घोंसला बनता है, क्योंकि पंखे से उनके पर जो क़तर जाते हैं, ऊपर से रसोई की तेज़ मिर्ची के धुएँ से मेरा दम घुटता है सो अलग। फिर भी मुझे तसल्ली है कि आखिर मेरा अस्तित्व तो कायम है। मुझे अपने प्यारे पंछियों की बहुत याद आती है। मुझे याद है जब एक दिन तेज़ आँधी-तूफ़ान के साथ बारिश आई तो चिड़ियों का एक जोड़ा मेरे पास आकर बहुत देर तक बैठा रहा था। मुझे बहुत अच्छा लगा क्योंकि वे दोनों मेरे अकेलेपन के साथी बने थे। वे पंछी मेरे वीरान बने घर में एक तरह से उजाला लेकर आते जिससे लगता कि हाँ, अभी मैं जिंदा हूँ। कुछ दिन पहले भी वो दोनों पंछी आए थे और एग्जॉस्ट फैन में से किसी तरह निकलकर पूरे घर में ची-ची करते उड़ रहे थे। कितना खुश थे हम ... !!

लेकिन आज अचानक ये अंधेरा? ओह ! याद आया दो दिन पहले ही तो दिवाली की सफ़ाई की घर के मालिक ने शायद झरोखे के परिंदों और घोसले से घर के लोगों को परेशानी हुई हो तो उन्होंने इसे बंद कर दिया होगा। इस झरोखे को बंद करने का मतलब है उस रोशनी को, उस हवा को बंद कर देना जो आपको जिंदा रहने का एहसास दिलाती है। एक गाना भी है ना मेरे ऊपर “अंखियों के झरोखों से, मैंने देखा जो ख्वाब रे!”- यानी कि झरोखा छोटा जरूर होता है लेकिन पूरा ब्रह्मांड दिखा देता है। इस झरोखे को अपने घर से कभी अलग ना करें। मेरी वजह से ही एक बंद पड़े घर में प्राणवायु आती है।

शारीरिक भाषा का मनोविज्ञान

डॉ. नंदलाल माहेश्वरी
चिकित्सा अधिकारी

भाषा संचार का एक माध्यम है। जब आप किसी दूसरे व्यक्ति को कुछ बताना चाहते हैं, तो आप बस बोलकर अपनी बात कह देते हैं। हालाँकि, बातचीत के दौरान, मौखिक भाषा ही संचार का एकमात्र तरीका नहीं है जिसका उपयोग मनुष्य करता है। शारीरिक भाषा, या गैर-मौखिक संचार, मानव संपर्क का एक बड़ा हिस्सा है। गैर-मौखिक संचार तब होता है जब लोग शब्दों और मौखिक या लिखित भाषा के उपयोग के बिना अपने विचारों और भावनाओं को व्यक्त करते हैं। इसके बजाय, चेहरे के भाव, शरीर की हरकतें एवं हाव-भाव, मुद्रा, स्वर, मात्रा तथा आपकी आवाज के उतार-चढ़ाव और स्पर्श का उपयोग किया जाता है।

शारीरिक भाषा के माध्यम से संचार बचपन से ही शुरू हो जाता है। हालाँकि, इनमें से अधिकांश संचार चेतना के स्तर से नीचे होता है। उदाहरण के लिए, आप किसी परीक्षा के दौरान चिंतित हो सकते हैं और अपने पैर से जमीन पर थपथपा रहे होंगे और आपको यह एहसास भी नहीं होगा कि आप ऐसा कर रहे हैं। गैर-मौखिक संचार विशेषज्ञ पैटी वुड का कहना है कि मनुष्य एक मिनट से भी कम समय में 10,000 संकेतों का आदान-प्रदान करने में सक्षम हैं। यह इस बात पर प्रभाव डाल सकता है कि किसी व्यक्ति को कैसे देखा जाता है, और उनकी प्रेरणाओं और मनोदशा की व्याख्या कैसे की जाती है। अपनी शारीरिक भाषा पर नियंत्रण बढ़ाने के लिए और दूसरों द्वारा संप्रेषित किए जा रहे संकेतों को बेहतर ढंग से समझने के लिए, आइए, शारीरिक भाषा के कुछ रूपों पर नजर डालें और वे क्या व्यक्त कर सकते हैं उन्हें समझते हैं।

किसी व्यक्ति का चेहरा क्या कहता है?

1. मुँह

किसी व्यक्ति की शारीरिक भाषा को समझने की कोशिश करते समय सबसे पहले उसके चेहरे पर नजर जाती है। सूक्ष्म अभिव्यक्ति और चेहरे की हरकतें बहुत-सी बातें संप्रेषित कर सकती हैं। मुस्कुराना स्वागत का संकेत है। हालाँकि, ईमानदार और निष्ठाहीन मुस्कुराहट के बीच अंतर करना संभव है। जब कोई व्यक्ति ईमानदारी से मुस्कुराता है, तो उसके मुँह के कोने ऊपर हो जाते हैं और आंखें सिकुड़ जाती हैं और झुर्रियाँ पड़ जाती हैं। जबकि, निष्ठाहीन मुस्कुराहट में आमतौर पर हाँ शामिल नहीं होती है। ऐसा आमतौर पर तब होता है जब किसी व्यक्ति को असहज होने पर मुस्कुराने के लिए मजबूर किया जाता है। मुस्कुराहट, नाराजगी, अवमानना या नापसंदगी भी व्यक्त कर सकती है। यह आमतौर पर मुस्कुराकर या आंशिक रूप से मुस्कुराकर किया जाता है।

2. आँखें

आँखें किसी व्यक्ति की भावनात्मक स्थिति का बड़ा संकेतक होती हैं। तेजी से पलकें झपकाना बढ़ते तनाव का संकेत है। एक लोकप्रिय धारणा यह है कि जब आप रोमांटिक आकर्षण का अनुभव करते हैं तो आपकी पुतलियाँ फैल जाती हैं। हालाँकि यह कुछ हद तक सच है, यह एकमात्र ऐसी चीज़ नहीं है जो पुतली के फैलाव का कारण बन सकती है। यह तब भी हो सकता है जब कोई क्रोधित हो या डरा हुआ हो। इसके विपरीत, जब आपको कोई चीज़ पसंद नहीं आती तो आपकी पुतलियाँ सिकुड़ जाती हैं। किसी व्यक्ति की नज़र की दिशा इस बात पर निर्भर करती है कि उनकी रुचि किस चीज़ में है।

इसलिए यदि आपका साथी आपसे बात करते समय आपके पीछे टी.वी. स्क्रीन को देखता रहता है, तो आप जानते हैं कि उनकी रुचि किस चीज़ में है। चिड़चिड़ापन, हताशा, चिंता या परेशानी का

एक प्रमुख संकेतक आँख का अवरुद्ध होना है। इन भावनाओं का अनुभव करते समय लोग अनजाने में अपनी आँखें ढक लेते हैं। वे उन्हें अपने हाथों से ढक सकते हैं, लंबी पलकें झपकाते हैं, या तिरछी आँखें करके देखते हैं।

3. चेहरे के अन्य हाव-भाव

धनुषाकार भौहें निमंत्रण और स्वीकार्यता का संकेत दे सकती हैं। इसके अलावा, झुके हुए सिर वाला व्यक्ति चौकस और देखभाल करने वाला माना जाता है। इस संचार में ऐसे लोगों की गर्दन नजर के सामने होती है जो उनकी अभिव्यक्ति की भेद्यता को प्रदर्शित करती है। अक्सर, जब आप किसी बच्चे के पास जाकर अपना सिर झुकाकर कुछ बतियाते हैं, तब बच्चा सुकून पाकर प्रतिक्रिया देता है।

किसी व्यक्ति की शारीरिक गतिविधियाँ क्या दर्शाती हैं?

1. बाँहें और हाथ:

जब लोग असुरक्षित या चिंतित महसूस करते हैं तो वे अपनी बाँहों को क्रॉस कर लेते हैं। यह अरुचि के कारण भी हो सकता है। हालाँकि, पीछे की ओर झुकने या मुस्कुराने के साथ, क्रॉस्ड बाँहों का अर्थ बदल जाता है और इसके बजाय यह आत्मविश्वास और स्थिति पर नियंत्रण का सुझाव देता है। किसी व्यक्ति को आराम दिलाने के लिए बाँह की स्थिति का भी उपयोग किया जा सकता है। इसलिए, यदि कोई अपनी छाती के सामने हाथ में कुछ पकड़े हुए है, अपनी बाँहों को मेज पर रखे हुए है, या एक हाथ से दूसरे हाथ को पीठ पीछे से पकड़ रहा है, तो ऐसा इसलिए हो सकता है क्योंकि वह असहज है और अनजाने में खुद को बचाने की कोशिश कर रहा है।

दूसरी ओर, खुली भुजाएँ बस इतना ही व्यक्त करती हैं, खुलापन। जब हाथों की बात आती है, तो आत्मविश्वास महसूस होने पर आपकी उंगलियों के बीच की जगह बढ़ जाती है, लेकिन असुरक्षित महसूस होने पर कम हो जाती है। बंद मुट्ठियाँ इंगित करती हैं कि व्यक्ति क्रोधित या निराश है, लेकिन उन भावनाओं को दबाने की कोशिश कर रहा है। हाथों को रगड़ने से मतलब है कि व्यक्ति तनाव में है।

2. पैर या पाँव:

पैर या पाँव बातचीत में रुचि को दर्शाने वाले अच्छे संकेतक बने रहते हैं। यदि कोई व्यक्ति, आपसे बातचीत करते समय, अपने पाँव आपकी ओर रखता है, तो संभवतः वह बातचीत में रुचि रखता है और आपसे बात करना जारी रखना चाहता है, लेकिन अगर उसके पाँव आपसे विपरीत स्थिति में हैं तो उसका मतलब यह हो सकता है कि वह जाना चाहता है। पाँव को जमीन पर थपथपाने या एक पाँव से दूसरे पाँव तक बदलते रहने का मतलब है कि व्यक्ति को बेचैनी या घबराहट हो रही है। खड़े होने पर क्रॉस पैर यह दर्शाते हैं कि एक व्यक्ति दूसरे के साथ सहज है। बातचीत के दौरान पैर क्रॉस करके खड़े रहकर बात करने का मतलब "आप इत्मीनान से बात कर सकते हैं" हो सकता है। हालाँकि, बैठते समय क्रॉस किए हुए पैर, या क्रॉस किए हुए हाथों के साथ माना जा सकता है कि, दूसरे व्यक्ति की बात सुनने की इच्छा नहीं है।

बातचीत में स्पर्श से क्या बताया जा सकता है?

स्पर्श के माध्यम से संचार को हैप्टिक्स के रूप में जाना जाता है। किसी के गले को छूना या सहलाना एक शांति देने वाला व्यवहार है। जब हम तनावग्रस्त होते हैं, तो हम अपनी गर्दन और गर्दन के किनारों, या यहाँ तक कि ठोड़ी के नीचे के क्षेत्र को भी रगड़ सकते हैं। इस उत्तरार्द्ध क्षेत्र में तंत्रिका सिरा होते हैं, और इसे सहलाने से हमारी हृदय गति कम हो सकती है और हम शांत महसूस करते हैं। यदि कोई दूसरा व्यक्ति आपको छोटे-मोटे तरीकों से छू रहा है, तो इसका मतलब यह हो सकता है कि वह आपकी ओर आकर्षित है। इसे बाँहों को छूने, दूसरे के कंधों पर हल्के से हाथ रखने या कोहनियाँ छुआने से प्रदर्शित किया जाता है।

निकटता क्या हैं?

निकटता अशाब्दिक संचार के प्रकार को संदर्भित करता है जो भौतिक स्थान और दूरी से संबंधित है। शोधकर्ताओं ने लोगों के बीच बनी दूरी को दूसरों के साथ उनकी परिचितता के आधार पर चार क्षेत्रों में वर्गीकृत किया है। व्यक्तिगत

स्थान के चार क्षेत्र हैं: अंतरंग, व्यक्तिगत, सामाजिक और व्यावसायिक/सार्वजनिक। हम अपने और दूसरों के बीच कितनी दूरी तय करने का निर्णय लेते हैं, यह इस बात पर निर्भर करता है कि हम उनकी संगति में कितना सहज महसूस करते हैं। इसलिए इस पर निर्भर करते हुए कि वे आपके बारे में खुद को किस तरह से पेश करते हैं, आप यह निर्धारित कर सकते हैं कि कोई व्यक्ति आपकी कंपनी में कैसा महसूस करता है।

मुद्रा/आसन क्या भूमिका निभाता है?

मुद्रा को नियंत्रित करना अशाब्दिक संचार के अधिक कठिन रूपों में से एक है। हालाँकि, अन्य लोगों की मुद्राएँ सामान्य रूप से उनकी भावनाओं और व्यक्तित्व के बारे में कुछ जानकारी प्रदान कर सकती हैं। कुछ सांकेतिक मुद्राएँ हैं - दीवार पर पीठ के बल झुकना बोरियत या अरुचि का संचार करता है, बातचीत में किसी की ओर झुकना रुचि का संकेत देता है, कमर पर हाथ रखकर सीधे खड़े होना उत्साह और आत्मविश्वास का संकेत दे सकता है, और अपनी दोनों बाजुओं की तरफ हाथ रखकर सीधे खड़ा होना एक सामान्य स्थिति है, जो दूसरे व्यक्ति को सुनने की इच्छा का सुझाव देता है।

सामाजिक मनोवैज्ञानिक एमी कड्डी के शोध से पता चला है कि न केवल मन शरीर को प्रभावित करता है, बल्कि शरीर भी मन को प्रभावित करता है। वे सुझाव देती हैं कि पावर पोज़िंग - आत्मविश्वास की मुद्रा में खड़े रहने की शारीरिक स्थिति जब आप आत्मविश्वास महसूस नहीं करते हैं, तब भी अगर आजमायी जाए तो आत्मविश्वास की भावनाओं को बढ़ावा दे सकती है और आपको शक्तिशाली और स्थिति पर नियंत्रण महसूस करा सकता है। इस क्रिया से शरीर में कोर्टिसोल (तनाव हार्मोन) जैसे हार्मोन को कम किया जा सकता है। एमी कड्डी सलाह देती है कि तनावपूर्ण सामाजिक संपर्क, विशेष रूप से नौकरी के साक्षात्कार में प्रवेश करने से पहले कुछ मिनटों के लिए पावर पोज़िंग की क्रिया करनी चाहिए, जिससे आपकी सफलता की संभावनाओं में काफी सुधार आ सकता है। इस क्रिया से कक्षा या कार्यस्थलों में धोखेबाजी के अज्ञात डर की भावनाओं को दूर करने में भी मदद मिलती है। एमी का मानना है कि 'जब तक कामयाब न हो जाओ, कामयाब होने का नाटक करते रहो' इस विचारधारा में वे विश्वास नहीं रखती, बल्कि 'जब तक आप ऐसे बन नहीं जाते तब तक इसे करते ही रहिए' में विश्वास रखती हैं।

सारांश

हमने देखा है कि दैनिक बातचीत में शारीरिक भाषा और अशाब्दिक संचार कितने महत्वपूर्ण हैं। उपरोक्त असंख्य उपचारों में से केवल कुछ हैं जिनका उपयोग मनुष्य भाषा के उपयोग के बिना एक दूसरे के साथ संवाद करने के लिए करते हैं। इसे डिजिटल रूप से भी विस्तारित किया जा सकता है, उदाहरण के लिए, इमोजी का उपयोग इस बात पर बहुत प्रभाव डालता है कि हम टेक्स्टिंग करते समय दूसरे व्यक्ति के लहजे को कैसे समझते हैं। अशाब्दिक संचार संकेतों के बारे में अपना ज्ञान बढ़ाना और अपने जीवन में कुछ बदलाव लाना हमें बेहतर संचारक बना सकता है।

पानी है बचाना

अनिका मेहता
पुत्री, श्री अंशुल मेहता

पानी का संरक्षण है हमारी जिम्मेदारी,
पानी बचाना है एक समझदारी।
ना मिले पानी,
तो हो जाती परेशानी।
इसलिए ना करे पानी को प्रदूषित,
वरना बीमारियाँ हो जाएँगी आकर्षित।
पेड़ हो या प्राणी,
सबके लिए है जरूरी पानी।
अगर ना हो पानी,
तो रह जाएगी अधूरी हर कहानी।
पानी ना मिले तो होगी अनावृष्टि,
और पानी के बिना नहीं रहेगी यह सृष्टि।
पानी, पानी, पानी,
ना होने दें इसकी हानि।

संस्थान की राजभाषा गतिविधियाँ

भारतीय प्रबंध संस्थान अहमदाबाद राजभाषा नीतियों की अनुपालना सुनिश्चत करने के लिए सदैव प्रयासरत रहता है। संस्थान राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम के अनुरूप वर्ष भर विभिन्न गतिविधियाँ आयोजित करता रहता है। राजभाषा कार्यान्वयन को बढ़ावा देने के उद्देश्य से पिछले वर्ष के दौरान संस्थान में आयोजित की गई राजभाषा गतिविधियों का संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार से है :-

हिंदी पखवाड़े का आयोजन

हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी संस्थान में राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए हिंदी पखवाड़े का आयोजन 14 सितंबर से 29 सितंबर 2023 के दौरान किया गया। इस वर्ष हिंदी पखवाड़े के दौरान कुल नौ प्रतियोगिताएँ आयोजित की गई। इन प्रतियोगिताओं में हिंदी कविता-पाठ (स्वरचित) प्रतियोगिता, ऑनलाइन हिंदी सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता, हिंदी शब्द-ज्ञान प्रतियोगिता, हिंदी स्लोगन प्रतियोगिता, हिंदी निबंध प्रतियोगिता, हिंदी आशुभाषण प्रतियोगिता, हिंदी अंताक्षरी प्रतियोगिता, हिंदी सुलेख प्रतियोगिता एवं हिंदी गीत गायन प्रतियोगिता शामिल थीं। इनमें से कविता-पाठ (स्वरचित), शब्द-ज्ञान, एवं निबंध प्रतियोगिताओं का आयोजन हिंदीभाषी एवं गैर-हिंदीभाषी प्रतिभागियों के लिए अलग-अलग किया गया था। इन सभी प्रतियोगिताओं में संस्थान के सदस्यों ने काफी उत्साह से भाग लिया था। संस्थान के कुल 553 सदस्यों नें इन प्रतियोगिताओं में अपनी प्रतिभागिता दर्ज करायी थी। इस हिंदी पखवाड़े के दौरान 27 सितंबर 2023 को संस्थान के विक्रम साराभाई पुस्तकालय में हिंदी पुस्तकों की प्रदर्शनी भी लगाई गई। संस्थान के पुस्तकालय में विभिन्न विषयों पर हिंदी में उपलब्ध 2712 पुस्तकों के बारे में सभी सदस्यों को ऑनलाइन जानकारी प्रदान की गई, जिससे हिंदी पुस्तकों में रुचि रखने वाले पाठक अपनी पसंद की हिंदी पुस्तकों का चयन आसानी से कर सकें।

29 सितंबर 2023 को हिंदी पखवाड़े का समापन समारोह कर्मचारी सदस्यों के बच्चों द्वारा हिंदी कविता-

पाठ पठन के साथ संपन्न किया गया। कविता पठन करने वाले बच्चों में 4 वर्ष से लेकर 11 वर्ष की आयु तक के बच्चे शामिल थे। इस अवसर पर संस्थान के डीन (संकाय) प्रोफेसर सतीष देवधर की उपस्थिति में सभी प्रतियोगिताओं के विजयी प्रतिभागियों को पुरस्कार राशि एवं प्रमाणपत्र से सम्मानित किया गया। विजयी प्रतिभागियों को हिंदी भाषी और गैर-हिंदी भाषी वर्ग में अलग-अलग पुरस्कार प्रदान किये गए। इस अवसर पर माननीय शिक्षा मंत्री एवं माननीय गृह मंत्री से प्राप्त संदेशों से सभी सदस्यों को अवगत कराया गया तथा इन संदेशों की प्रतियाँ नोटिस बोर्ड पर भी प्रदर्शित की गई। समापन समारोह के अवसर पर संस्थान के डीन (संकाय) प्रोफेसर सतीश देवधर ने भी सभी उपस्थित सदस्यों को अपने दैनिक कार्यकलापों में राजभाषा हिंदी को अधिक से अधिक प्रयोग में लाने के लिए प्रेरित किया। हिंदी पखवाड़े के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं के विजयी प्रतिभागियों के विवरण निम्न प्रकार से हैं :-

हिंदी

हिंदी

हिंदी

हिंदी

हिंदी

हिंदी

हिंदी

हिंदी

हिंदी

हिंदी

हिंदी

हिंदी

हिंदी

हिंदी

हिंदी

14 सितंबर 2023 – हिंदी कविता-पाठ (स्वरचित) प्रतियोगिता

हिंदीतर भाषी	
प्रथम	श्री चिंतन पटेल
द्वितीय	सुश्री दिपाली चौहान
तृतीय	सुश्री नीलम वाढेर
प्रोत्साहन	श्री भावेश पटेल
हिंदीभाषी	
प्रथम	श्री हरीश प्रेमी
द्वितीय	श्री अभिषेक कुमार मिश्रा
तृतीय	डॉ. कृतिका टेकवानी
प्रोत्साहन	सुश्री तान्या आहूजा

15 सितंबर 2023 – ऑनलाइन हिंदी सामान्य-ज्ञान प्रतियोगिता

प्रथम	श्री मल्लिकार्जुन डोरा
द्वितीय	श्री विनय कुमार झा
तृतीय	सुश्री दिपाली चौहान
प्रोत्साहन	श्री अमित कुमार

18 सितंबर 2023 – हिंदी शब्द-ज्ञान प्रतियोगिता

हिंदीतर भाषी	
प्रथम	श्री निरज दवे
द्वितीय	श्री विरल सोलंकी
तृतीय	सुश्री उमा जानी
प्रोत्साहन	श्री प्रह्लाद पटनी
हिंदीभाषी	
प्रथम	सुश्री मोनिका अग्रवाल
द्वितीय	श्री नितिन पाठक
तृतीय	श्री शुभम
प्रोत्साहन	सुश्री श्रीया बजाज

20 सितंबर 2023 – हिंदी स्लोगन प्रतियोगिता

प्रथम	सुश्री मोनिका अग्रवाल
द्वितीय	श्री प्रियंकेश दीक्षित
तृतीय	श्री जगदीश रबारी
प्रोत्साहन	सुश्री तान्या आहूजा

20 सितंबर 2023 – हिंदी निबंध प्रतियोगिता

हिंदीतर भाषी	
प्रथम	श्री निकुंजकुमार पटेल
द्वितीय	श्री रितेश मल्हारी घोलप
तृतीय	श्री हरीश वाघेला
प्रोत्साहन	सुश्री उमा एच. जानी
हिंदीभाषी	
प्रथम	श्री हरीश प्रेमी
द्वितीय	सुश्री शिल्पा नागरे
तृतीय	सुश्री श्रीया बजाज
प्रोत्साहन	श्री सामंतक चक्रवर्ती

21 सितंबर 2023 – हिंदी आशुभाषण प्रतियोगिता

प्रथम	डॉ. कृतिक टेकवानी
द्वितीय	श्री रवि पाबारी
तृतीय	सुश्री महिमा शर्मा
प्रोत्साहन	श्री मनमोहन सिंह यादव

22 सितंबर 2023 – हिंदी अंताक्षरी प्रतियोगिता

प्रथम	सुश्री राधा शर्मा टीम सुश्री कमल रंजन श्री दीक्षित पटेल सुश्री मानसी पारेख सुश्री जागृति लुखडा सुश्री रेखा पालीवाल

द्वितीय	श्री भौमिक सोलंकी टीम सुश्री राजश्री मुखर्जी सुश्री स्नेहल जेठवा श्री संदीप मेहता श्री विकी मौर्य सुश्री मोनिका पंचोली
तृतीय	श्री अमित मकवाना टीम श्री प्रतीक पटेल सुश्री शर्विन क्रिश्चन सुश्री शिबानी गोगोई सुश्री तान्या आहूजा श्री मोहन पालीवाल
प्रोत्साहन	सुश्री प्रियंका त्रिपाठी टीम श्री प्रतीक कुमार महंत श्री वत्सल सुथार श्री रविराज चौहान श्री हरीश चोपड़ा सुश्री विधि कोटक

25 सितंबर 2023 – हिंदी सुलेख प्रतियोगिता

प्रथम	श्री योगेश रवींद्रभाई परमार
द्वितीय	श्री विरल सोलंकी
तृतीय	श्री विक्की आर. मौर्य
प्रोत्साहन	श्री अशोकभाई पटेल

26 सितंबर 2023 – हिंदी गीत गायन प्रतियोगिता

प्रथम	श्री हरीश चोपड़ा
द्वितीय	श्री मांगल्य मजमुदार
तृतीय	श्री राहुल जोशी
प्रोत्साहन	सुश्री ध्रुवी शाह

हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन

राजभाषा विभाग द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम के अनुरूप सभी कर्मचारियों एवं अधिकारियों को हिंदी में काम करने के लिए प्रेरित करने और हिंदी में काम करने के प्रति उनकी झिझक को दूर करने के उद्देश्य से पिछले वर्ष संस्थान में चार हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन किया गया। पिछले वर्ष के दौरान संस्थान में हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन क्रमशः 16 मार्च 2023, 02 जून 2023, 25 सितंबर 2023, एवं 27 दिसंबर, 2023 को किया गया। इन कार्यशालाओं में 94 से अधिक प्रतिभागियों ने भाग लिया।

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक

संस्थान की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकें समय-समय पर आयोजित की जाती रही हैं। पिछले वर्ष के दौरान प्रत्येक तिमाही के अनुरूप चार बैठकों का आयोजन किया गया। इन बैठकों में राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार से संबंधित विभिन्न निर्णय लिए गए तथा इन निर्णयों के कार्यान्वयन की समीक्षा भी गई। इन बैठकों के कार्यवृत्तों की प्रति शिक्षा मंत्रालय (राजभाषा विभाग) एवं नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति को भेजी गई।

संस्थान के वार्षिक प्रतिवेदन का हिंदी अनुवाद

वित्त वर्ष 2022-23 के संस्थान के 61वें वार्षिक प्रतिवेदन का हिंदी में प्रकाशन किया गया है। इस वित्त वर्ष का हिंदी वार्षिक प्रतिवेदन 240 से अधिक पृष्ठों में प्रकाशित हुआ है, जिसे भारत सरकार के दोनों सदनों – लोक सभा और राज्य सभा में प्रस्तुत किया जाता है। इस वर्ष के वार्षिक प्रतिवेदन का हिंदी अनुवाद कार्य निर्धारित समय सीमा में किया गया है और इसे निर्धारित समय पर प्रकाशित करते हुए शिक्षा मंत्रालय को भेजा गया है।

अक्षय कोष - एक सकारात्मक पहल

विजयंत जोशी
वरिष्ठ उपाध्यक्ष

सन् 2020 में भारतीय प्रबंध संस्थान, अहमदाबाद के कुछ पूर्वछात्रों ने आईआईएमए अक्षय कोष (एंडोमेंट फंड) (आईआईएमएईएफ़) की स्थापना की थी। आईआईएमएईएफ़ कंपनी अधिनियम की धारा 8 के तहत स्थापित किया गया है और भारतीय प्रबंध संस्थान के लिए कार्य करता है। यह भारत में प्रबंध संस्थानों के लिए कार्य करने वाली अपनी तरह की पहली पहल है।

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर, एंडोमेंट फंड या अक्षय कोष बहुत लोकप्रिय है। सभी बड़े उच्च शिक्षण संस्थानों के एंडोमेंट फंड (अक्षय कोष) के पास भरपूर धनकोष है, जिसका उपयोग वे विभिन्न उद्देश्यों को पूरा करने के लिए करते हैं।

भारतीय प्रबंध संस्थान, अहमदाबाद में भी एंडोमेंट फंड (अक्षय कोष) स्थापित किया गया है जिसका उद्देश्य पूर्वछात्रों, व्यावसायिक संस्थानों, सीएसआर अनुदानों तथा व्यक्तिगत अनुदानों को उनके द्वारा दी गई वित्तीय सहायता को मान्यता देना है।

आईआईएमए के चार बुनियादी स्तम्भों के लिए, अक्षय कोष एक औपचारिक, व्यवस्थित तरीके से वित्तीय अनुदानों का संचालन करने के लिए बनाया गया है। आईआईएमए के चार बुनियादी स्तम्भ हैं-

1. शोध और अनुसंधान
2. उत्कृष्टता केंद्र और उनकी खोजें
3. सहयोग और प्रोत्साहन छात्रवृत्ति और पुरस्कारों द्वारा
4. आईआईएमए का विस्तार, अंतर्राष्ट्रीयकरण और आधारभूत संरचना का निर्माण

सन् 2021 में भारतीय प्रबंध संस्थान में अक्षय कोष ने कार्य प्रारम्भ किया। आईआईएमए के चार मूल स्तम्भों

को प्रोत्साहित करने के लिए इस अक्षय कोष ने पिछले ढाई वर्षों में दो सौ पंद्रह (215) करोड़ रुपये की धनराशि की प्रतिबद्धता प्राप्त की है।

वर्ष 2023-24 में आईआईएम के छात्र-छात्राओं के लिए एंडोमेंट फंड (अक्षय कोष) से प्राप्त अनुदानों में से 30 नई छात्रवृत्तियों की घोषणा की गई है। 10 पूर्ण शैक्षणिक शुल्क और 20 अर्ध शैक्षणिक शुल्क के लिए ये अनुदान हैं। भारतीय प्रबंध संस्थान, अहमदाबाद के अक्षय कोष (आईआईएमएईएफ़) ने अनेक कार्यक्रम शुरू किए हैं, जिनमें छात्राओं के लिए छात्रवृत्ति प्रवेश स्तर की छात्रवृत्तियाँ, डॉ. लाल पैथ लैब की सहायता से स्वास्थ्य सेवा अनुसंधान अध्यक्षता, नायका की सहायता से उपभोक्ता टेक्नोलॉजी में अनुसंधान अध्यक्षता, मरिको के साथ स्कूल शिक्षकों के लिए प्रशिक्षण और सेंट गोबेन की सहायता से आईआईएमए कैंपस में बायो डाइवर्सिटी का अध्ययन शामिल हैं।

काश मैं उड़ पाती

अनिका मेहता
पुत्री, श्री अंशुल मेहता

अगर मैं उड़ पाती,
तो मैं जल्दी से हर जगह पहुँच जाती।
अगर लोगों को जरुरत होती,
तो मैं उनकी मदद करती।
मेरे सुंदर पंख होते,
जो फड़फड़ाते।
मैं ऊँची उड़ान भरती,
आकाश से सुहाने नज़ारे देखती।
मैं पक्षियों को मित्र बनाती,
उन्हें अपनी बोली सिखाती।
मैं अपनी इच्छाएँ पूरी कर लेती,
काश मैं उड़ पाती।

ऐ जिंदगी

धर्मेंद्र एन. सोलंकी
सहायक प्रबंधक

"आज-कल" तू क्या बन गई है जिंदगी।
"आज-कल" तू क्या बन गई है जिंदगी।

सुबह का 6 बजे का अलार्म बन गई है जिंदगी।

देर तक सोते थे, बिना कुछ फिक्र किए,
देर तक सोते थे, बिना कुछ फिक्र किए,

पता नहीं कहाँ खो गई वो जिंदगी।
"आज-कल" तू क्या बन गई है जिंदगी।

याद आ रहे वो पल,
जब दोस्तों के साथ बिना कुछ बताए घर से निकल पड़ते,

अब यह आलम है कि, वजह ढूँढ़ रहे हैं कि,
क्या बता के निकलें,
अब यह आलम है कि, वजह ढूँढ़ रहे हैं कि,
क्या बता के निकलें,

"आज-कल" तू क्या बन गई है जिंदगी।

जिंदगी के रंग, कुछ इस तरह से बदले,
रंग नये आए, कुछ पुराने उतार ले चले,
जैसे कि कुछ नए मौके आए और पुराने ले चले,

"आज-कल" तू क्या बन गई है जिंदगी।

जिम्मेदारियों की दौड़ में, कभी सोचा ना था।
जिम्मेदारियों की दौड़ में, कभी सोचा ना था।

बहुत कुछ पाने में, हम क्या-क्या खो चले।
बहुत कुछ पाने में, हम क्या-क्या खो चले।

"आज-कल" तू क्या बन गई है जिंदगी।

सुबह से शाम कब हो गई पता ही नहीं चला,
सुबह से शाम कब हो गई पता ही नहीं चला,
पूरी इस तरह, तू होने को चली,

"आज-कल" तू क्या बन गई है जिंदगी।

लगता है आज-कल, कुछ अधूरा-अधूरा रह गया,
लगता है आज-कल, कुछ अधूरा-अधूरा रह गया,
पूरे होने की चाहत में, जो था, वो भी चल दिया।

"आज-कल" तू क्या बन गई है जिंदगी।
"आज-कल" तू क्या बन गई है जिंदगी।

मेरे सपनों का भारत

हरीश वाघेला
कार्यकारी

इस विषय पर बताना चाहूँगा कि हमारा देश पहले अखंड भारत था। हमारे देश का विस्तार ईरान से लेकर इंडोनेशिया तक था। परंतु कालक्रम में हुए विभिन्न विभाजनों के कारण हमारा अखंड भारत टुकड़ों में बँटकर आज के भारत तक सीमित होकर रह गया है। मेरा यह सपना है कि भारत फिर से अपना खोया हुआ अतीत हासिल करे। इतना बड़ा भूखंड था उसकी हालत यह हुई इसके लिए कौन जिम्मेदार है? विदेशी आक्रांताओं ने कई बार इस देश की संस्कृति और अखंडितता को चूर-चूर किया है। इस देश के धार्मिक स्थानों और धरोहरों को बर्बाद कर दिया है। इसका एक कारण था, देश में जाति प्रथा का प्रसार। ऐसे ही कुछ कारणों से हम विदेशी आक्रमणकर्ताओं के सामने एक नहीं हो पाए। इसीलिए हमारे समृद्ध विशाल देश को कुछ सदियों तक गुलाम बने रहना पड़ा। अनेकों विदेशी आक्रांताओं ने हमारे देश को कई बार लूटा क्योंकि हमारे बीच एकता की कमी थी।

मेरे सपनों के भारत में ना ही कोई ऊँचा होगा ना ही कोई नीचा। मेरे सपनों के भारत में जन्म से नहीं, परंतु कर्म से इंसान की कीमत बढ़ेगी और मान-सम्मान दिया जाएगा। सब अपने देश के लिए एक होकर लड़ेंगे और भाई-भाई होकर रहेंगे। हम जानते हैं कि देश की 68.8 प्रतिशत जनसंख्या गाँवों में रहती है। आज भी गाँवों में कुछ मूलभूत सुविधाएँ पूरी तरह पहुँच नहीं पायी हैं। आज भी साक्षरता की दर गाँवों में कम पायी जाती है। जब तक गाँवों का विकास व उन्नति नहीं होगी, तब तक समुचे भारत देश की उन्नति संभव नहीं है। मेरा यह सपना है कि भारत के गाँवों के सभी लोग शिक्षित हों। शिक्षित जनसंख्या ही विकास को आगे ले जा सकती है। आज भी गाँवों में महिलाएँ घरों के काम तक सीमित हैं। ग्रामीण समाज में पुरुष प्रधानता आज भी वैसी ही है, जैसी रूढ़िवाद के समय दिखती थी। महिलाओं और बच्चियों के शोषण की घटनाएँ होती रहती हैं। मेरा यह सपना है कि देश की महिलाओं को भी पुरुषों के बराबर की शिक्षा मिले और वे देश की प्रगति में बराबर का योगदान दें।

सन् 1700 के वर्ष में भारत की जीडीपी (ग्रोस डॉमेस्टिक प्रॉडक्ट-सकल घरेलू उत्पाद) 24.4 प्रतिशत थी। तब भारत को सोने की चीड़िया कहा जाता था और गुलामी के अंत तक भारत का जीडीपी 4 प्रतिशत तक नीचे आ गिरा था। आज भारत धीरे-धीरे आगे बढ़ रहा है, परंतु हमारे सामने अनेक चुनौतियाँ भी हैं। मेरा यह सपना है कि भारत विश्व के उन गिने-चुने देशों में शामिल हो और आर्थिक रूप से महाशक्ति बनकर विश्व पर शासन करे। वही पुराना गौरव वापस आए यह मेरा सपना है।

अगर हम गौर करें तो पाते हैं कि विश्व में सर्वाधिक जनसंख्या भारत देश में है और गरीबी भी ज्यादा है। कुछ लोग एक वक्त की रोटी भी मुश्किल से पाते हैं। अगर जनसंख्या का एक तबका इतना पिछड़ा रहेगा तो जाहिर है कि देश का विकास व प्रगति बाधित होंगे। मेरा सपना है कि देश में कोई भी गरीब ना रहे, कम से कम उन्हें अच्छा खाना, रहने के लिए सर पर छत मिले। उनके लिए यह भी जरूरी है कि हम सब आगे आएँ और उन गरीबों को जिन्हें बुनियादी सुविधाएँ नहीं मिल पायी उन्हें सहारा दें, उन्हें आगे बढ़ाने के लिए समर्थन दें और वे सारे काम करें जिससे देश में गरीबी का स्तर नीचे आएँ। तभी तो देश आगे बढ़ेगा।

हमारा देश कृषि पर निर्भर है। हमारी सर्वाधिक जनसंख्या कृषि का काम करती है और कृषिलक्षी व्यवसायों पर निर्भर है। हर वर्ष किसी ना किसी कारणवश फसलें बर्बाद होने पर हज़ारों किसान आत्महत्या कर लेते हैं। इनके पीछे-पीछे कई परिवार भी बर्बाद हो जाते हैं। मेरा यह सपना है कि देश में कभी किसान को कर्ज में डूबकर आत्महत्या करने की जरूरत ना पड़े और फसल बर्बाद हो तो देनदारियाँ ना बढ़ें, ऐसी राहतकर योजनाओं से वे समर्थित रहें। फसलों के लिए

पानी की पर्याप्त उपलब्धता रहे, कम दामों पर खाद मिले और अच्छी उपज मिलती रहे, ऐसे संसाधन बनाए रखे जाएँ। इससे किसान खुशहाल जिंदगी जीने के साथ खुशी-खुशी फसलें पैदा करता रहे।

मेरा यह भी सपना है कि देश की सुरक्षा करने वाला एक भी सैनकि शहीद ना हो। मातृभूमि की रक्षा के लिए वह अपनी जान तो देता है पर पीछे माँ-बाप, बीवी-बच्चे निराधार हो जाते हैं और कई चुनौतियाँ उनके सामने आकर खड़ी हो जाती हैं। मेरा सपना है कि देश की सीमाओं पर कभी युद्ध ना हो। सभी अच्छे पड़ौसी की तरह रहें और अपने कर्तव्य अच्छे-से निभाएँ। ना ही सीमा पार या इस पार कोई युद्ध हो और ना कोई युद्ध में मरे। परंतु मेरा यह भी मानना है कि मानवता के दुश्मनों को कभी बख्शा नहीं जाना चाहिए। हम शांति चाहेंगे परंतु हिंसा के सामने नहीं। मेरा यह सपना है कि भारत विश्व शांति दूत बने। विश्व में कहीं भी युद्ध ना हो। और अगर हो तो भारत शांति दूत के रूप में उसे रोक ले। क्योंकि हमारी भूमि बुद्ध की है, युद्ध की नहीं।

निम्नलिखित कुछ मुद्दों से मैं बताना चाहता हूँ कि मेरा सपना है कि –

- भारत देश विश्व में शांति का दूत बने।
- भारत सुखी-समृद्ध-संपन्न राष्ट्र बने।
- भारत एक आर्थिक महासत्ता बने।
- भारत अंतरिक्ष के क्षेत्र में नये मुकाम हासिल करे।
- भारत में गरीबी खत्म हो।
- भारत में जाति प्रथा वगैरह दूर हो।
- भारत में सभी धर्मों के लोग मिलजुल कर रहे।
- देश में महिलाओं का आदर-सम्मान बढ़े।
- देश में साक्षरता बढ़े, अक्षर ज्ञान बढ़े।
- देश का प्रत्येक व्यक्ति सुखी, संपन्न रहे।
- देश सभी खेलों में आगे रहे।
- भारत में कभी अकाल ना पड़े।
- फिर से नालंदा जैसे विश्व प्रसिद्ध विश्वविद्यालय बनें जिनमें विविध राष्ट्रों से अध्ययनार्थी पढ़ने आएँ।
- भारतीय संस्कृति का गुणगान सारे विश्व में हो।
- भारत में विश्व स्तरीय औषधालय, चिकित्सा के उपकरण हों, जिससे कोई भी गंभीर बीमारियाँ ना बढ़ें।
- बस मेरा यही सपना है कि पूरे विश्व में भारत का डंका बजे।

हम गुजराती

नीलम वाढेर
सहायक प्रबंधक

गुजरात के हम लोग कहलाते हैं गुजराती,
आज गुजरात की बात मैं हिंदी में हूँ दोहराती।

पहचान हमारी जैसे मीठी बानी,
और मीठा खाना जान हमारी,
वैसे ही अरमान हैं हमारे सबमें बसना,
क्योंकि हम हैं गुजराती।

कृष्ण की कर्मभूमि द्वारका हो,
या शिव का सोमनाथ ज्योतिर्लिंग,
सब लोग दर्शन करते हैं बिना कोई जात-पात,
क्योंकि हम हैं गुजराती।

गरबा के साथ पटोला हमने परदेश पहुँचाए,
तो लोगों ने यहाँ आकर पतंग उड़ाए,
यहाँ तो सफ़ेद रेगिस्तान में भी सफारी का अद्त
आनंद आए, क्योंकि हम हैं गुजराती।

श्रेष्ठ प्रबंध संस्थान है गुजरात में,
देश के सबसे बड़े उद्योगी हैं गुजरात के
गाँधी और सरदार की है ये पावन भूमि,
क्योंकि हम हैं गुजराती।

खाली गुजरात या देश पर राज़
करना उद्देश्य नहीं हमारा,
हम तो पंख फैलाकर सारे विश्व में उड़ना चाहते हैं,
वसुधैव कुटुंबकम का ध्येय सिद्ध करना चाहते हैं,
क्योंकि हम हैं गुजराती।

जीवन अपना

श्री दामजीभाई सोलंकी
पिता जी, नीलम वाढेर

अपना जीवन एक नदियाँ की धारा जैसा है। नदियाँ सीधी राह पर बहुत सरलता से बहती हैं। पथरीली ज़मीन पर उछल-कूद कर बहती है। घाटियों, नालों में वो टेढ़ी-मेढ़ी बन जाती है। ज़मीनी दरारों में छुपकर बहती है और आगे बाहर निकलती है। ऊँचे पहाड़ों से गिरकर जल-प्रपात बन जाती है। बस, ऐसा ही हमारा जीवन भी है। कहीं लोग अपना जीवन शांति से बिताते हैं, कहीं उछल-कूद कर आनंद से बिताते हैं। किसी के जीवन में ऐसी स्थिति पैदा होती है कि उनको जीवन को मोड़ना पड़ता है। किसी का जीवन धूप-छाँव जैसा, कभी दुःख में, कभी सुख में बीत जाता है। कई ऐसे लोग होते हैं जो बहुत ऊँचाई पर पहुँच जाते हैं, मगर कभी ऐसी परिस्थिति आ जाती है जब वे ऊँचाई से गिरकर वापस ज़मीन पर आ जाते हैं।

हर किसी का जीवन ऐसे ही नदियों के प्रवाह की तरह अलग-अलग परिस्थितियों में ज़रूर बीतता है। लेकिन नदियाँ अपने अलग-अलग प्रवाह में बहकर, कई कठिनाइयों को झेलकर अपनी आखिरी मंजिल तक पहुँच जाती हैं। अपने महासागर में समा जाती हैं। हमें भी उनसे यही सीख मिलती है कि अपने जीवनपथ पर चाहे कितनी भी मुश्किलें आएँ, उनसे डरना नहीं हैं। हिम्मत से उनका सामना करते हुए आगे बढ़ना चाहिए। इस तरह एक दिन हम भी अपनी मंजिल तक पहुँच सकते हैं। ऐसे कितने ही महानुभावों ने अपने सफर को अंजाम दिया है जिनका इतिहास बना हुआ है। गरीबी में जीते-जीते अपने जीवन में कितनी सारी मुश्किलें झेली हैं। लेकिन, उनके दृढ़ विश्वास से वे ऊँचाइयों पर पहुँच गए। अमर बन गए। समाज के लिए प्रेरणा स्वरूप बन गए। हर किसी के मन में अनेकों तमन्नाएँ होती हैं। हर कोई सोचता है कि वह अपना नाम बनाए। कोई सोचता है कि वह दुनिया को अपने इशारे पर चलाए। कोई दुनिया को डराना चाहता है। परंतु इस तरह की नकारात्मकता से कुछ हासिल नहीं होता। अच्छे बनने के लिए, अच्छा हासिल करने के लिए सकारात्मक बने रहना पड़ता है। सकारात्मकता में एक ही तमन्ना होती है कि मुझे लोगों के लिए अच्छे काम करना है, अपने देश के लिए कुछ कर गुजरना है। ऐसी एक ही तमन्ना लेकर हम जीवन जीते हैं तब हम एक न एक दिन कुछ बनकर आगे निकल जाते हैं। बस मुझे एक ही बात कहनी है, ज़िंदगी एक सुहाना सफर है, वो कहाँ कब मोड़ लेगी, इससे सभी बेखबर हैं। इस शेर के साथ अपनी बात खत्म करना चाहूँगा :-

अपनी मर्ज़ी से कहाँ अपने सफ़र के हम हैं,
रुख हवाओं का जिधर का है उधर के हम हैं।।

रह जाए ग़र तो इश्क है

प्रोफेसर प्रशांत दास

रह जाए ग़र तो इश्क है, खो जाए ग़र तो मर्ज़ है,
ये दर्द-ए-दिल की है सदा, तू गुनगुना क्या हर्ज़ है।

दिल रात भर जलता रहा, हम रात भर लिखते रहे,
इन ग़ज़लों में अब है ही क्या, न साज़ है ना तर्ज़ है।

हमदर्द जानें हैं कहाँ, कोई चारागर मिलता नहीं,
अब पारा-पारा दिल हुआ, हो इलाज किसको ग़र्ज़ है

हम दौलतों के ख़्वाब में, उस दर गए इस दर गए,
जेबों में भर के आए हैं, कुछ अश्क है कुछ क़र्ज़ है।

दिल काग़ज़ों का है किला, चिंगारियों के वक्त में,
उठ रहे शोलों को बुझा, ये ही मुनासिब फ़र्ज़ है।

वो पंचनामा कर गए, मेरा नाम जिसमें दर्ज़ है,
अब उन शरीफ़ों को मेरी, दुआ है आदाब'अर्ज़ है।

संस्थान के पूर्व चित्रकार

श्री उर्मिल अंजारिया

श्री अंजारिया भारतीय प्रबंध संस्थान अहमदाबाद के भूतपूर्व कर्मचारी हैं। आप 31 अक्टूबर 2019 को संस्थान से 30 वर्ष की सेवा देने के बाद संकाय सचिव पद से सेवानिवृत्त हुए हैं। अपनी 30 वर्ष की सेवा के दौरान आप एक अच्छे चित्रकार भी रहें हैं। आप चित्रों के माध्यम से अपने विचारों को अभिव्यक्त करने की कला में निपुण हैं। आपके कुछ विचारों के साथ कुछ चित्र इस प्रकार हैं :-

फ्रॉम इवॉल्युशन टू डीवॉल्युशन

इस पेंटिंग में वानर का मानव में रूपांतरण, टेलिफोन का आविष्कार, और आधुनिक मानव की मोबाइल फोन के प्रति अति निर्भरता और उनके संभावित परिणाम को दिखाया गया है। चार्ल्स डार्विन ने उत्क्रांतिवाद का सिद्धांत दिया, जिसके द्वारा उन्होंने समझाया कि जैविक आबादी – मनुष्य, पशु-पक्षी और सभी जीव-जंतुओं के आनुवंशिक गुणों में पीढ़ी-दर-पीढ़ी परिवर्तन होता रहता है, जिसे उत्क्रांति कहते हैं। इसी सिद्धांत के द्वारा उन्होंने यह भी कहा कि वानर मनुष्यों के पूर्वजों के समीप है, और कुछ विशेष प्रकार के वानर का विकास होते-होते आधुनिक मानव बना है। मानव ने बहुत-से आविष्कार किये हैं जिनमें रेडियो, मोटरकार, रेलवे, स्टीमर, टीवी, टेलिफोन और मोबाइल फोन आदि अनेकों आविष्कार शामिल हैं। सन् 1973 के आस-पास मोबाइल फोन का आविष्कार हुआ था। वर्तमान समय में हवा, पानी, भोजन और मकान के साथ मोबाइल फोन ने आधुनिक मानव की प्राथमिक आवश्यकताओं में अपना स्थान बना लिया है।

मोबाइल फोन के कुछ लाभ इस प्रकार हैं :-

- मोबाइल फोन से सूचना का आदान-प्रदान आसानी से किया जा सकता है।
- विश्व के किसी भी कोने से हम सगे-संबंधियों, मित्रों आदि को संदेशे भेज सकते हैं और संबंध बनाए रख सकते हैं।
- आपातकाल के समय में मोबाइल से संदेश भेजकर हम जरूरी सहायता ले सकते हैं।

मोबाइल के ज्यादा उपयोग से होने वाले नुकसान इस प्रकार हैं :–

- मोबाइल से निकलने वाले विकिरणों से बहुत-सी शारीरिक बीमारियाँ हो सकती हैं।
- मोबाइल हैकर्स लोगों की निजी बातें चुराकर गलत उपयोग कर सकते हैं।

इंसान समय के दायरे में बंधा हुआ है और शायद विकास इसी का नाम है। मानव बालक अवस्था के बाद जब जवानी के पड़ाव पर पहुँचता है तब तेज़-तर्रार और जोश-जुनून के साथ दौड़ पड़ता है। थोड़े साल बाद प्रौढावस्था तक पहुँचता है। फिर बुढ़ापे तक दौड़ता रहता है। हम सब मनुष्य चाहे कितने भी खूबसूरत, बुद्धिमान, और समझदार क्यों ना हो, इन सब पर बुढ़ापा भारी पड़ जाता है। बुढ़ापा हमारी ओर धीमी गति से बढ़ता रहता है, या हम बुढ़ापे की ओर बढ़ते रहते हैं। हमारी काम करने की शक्ति और काबिलियत भी क्षीण होने लगती है। जैसे-जैसे समय बितता जाता है, वैसे-वैसे हमारे सभी प्रकार के कौशल – शारीरिक, मानसिक,

ब्यूटी ऑफ़ टाइम

- मोबाइल का ज्यादा उपयोग अन्य जरूरी कार्यों को करने के समय को घटा देता है।
- इंटरनेट द्वारा बच्चों के चरित्र पर गलत असर उत्पन्न हो सकती है। इसके अलावा, बच्चों के पढ़ाई करने वाले समय को मनोरंजन मात्र में व्यतीत करा देता है।

और अन्य कम होने लगते हैं। यही सत्य है जो सृष्टि में सबको समान रूप से लागू है। समय का संचालन कुदरत ने अपने पास ही रखा है और उसे हम अपने हाथ में नहीं ले सकते। हम उसके अधीन हैं, और इसी में हमारी भलाई है।

जापानियों ने जिस ढंग से विदेशी भाषाएँ सीखकर
अपनी मातृभाषा को उन्नति के शिखर पर पहुँचाया है
उसी प्रकार हमें भी अपनी मातृभाषा का
भक्त होना चाहिए।

- श्यामसुंदर दास

हमारी मातृभाषा: पहली पहचान

इशिता सोलंकी
महाप्रबंधक - मान्यता एवं रैंकिंग

जब भी भाषा की बात आती है तभी बार-बार मेरा अपना एक किस्सा मेरे ज़हेन में उभर आता है। भाषा का विषय छिड़ते ही मुझे मेरे अपने ही घर के एक बड़े, मेरे रिश्ते के चाचाजी की याद आ गई जिन्हे मैं मोटा काका बुलाती थी। मुझे जन्म से सुनाई देने वाली और समझाई जाने वाली अपनी भाषा का मूल्य समझना चाहिए और पूरे सम्मान से उसे स्वीकारना चाहिए। इस वास्तविकता से परिचय कराने में मेरे इन चाचाजी का अहम योगदान रहा है।

पाठशाला में मातृभाषा में लिखना मैंने जरूर सीखा था। पर आश्चर्य की बात यह है कि किसी अपने ने मुझे एक जिम्मेदारी का एहसास कराते हुए मेरी मातृभाषा को एक परिवार और एक समुदाय के रूप में नए तरीके से पहचान कराई और तब अंग्रेज़ी के रंग-ढ़ंग में ढली हुई मैं नये सिरे से सोचने पर मजबूर हो गई और मुझ में भाषा के मामले में एक नया परिवर्तन आने लगा। सिर्फ अंग्रेज़ी को महत्त्व देना और उसी में आगे बढ़ना आदि जो मेरे मन में घर कर चुका था, उस प्रभाव से मैं धीरे-धीरे बाहर आने लगी और पूरे विश्व की सभी भाषाओं की तुलना में मेरी अपनी मातृभाषा, जन्म भाषा गुजराती को एक नए अंदाज़ से पहचान ने लगी।

हुआ यूँ था कि एक दिन की बात है। यह वह समय था जब मैं भी ममता की दुनिया में कदम रख चुकी थी। मुझे मेरी पहली संतान, एक बेटी की माँ बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। मेरी बेटी शायद तब 2 साल की हो चुकी थी। और अक्सर मेरे घर आते रहने वाले मोटा काका उस दिन हमारे घर पधारे थे। मैं मेरी दो साल की बच्ची को अंग्रेज़ी में बोलना सीखा रही थी। इस तरह गौरवान्वित होते हुए बेटी को बताने लगी, "बेटा, यू वॉन्ट टू ईट एप्पल ओर बनाना?" बोलते हुए मैंने चाचाजी की तरफ देखा। मैंने गौर किया कि मेरे चाचाजी के चेहरे पर प्रसन्नता के कोई भाव नहीं थे। ज्यादा हैरानी तो तब हुई जब मैंने एहसास किया कि चाचाजी थोड़े नाराज नजर आ रहे थे।

उन्होंने मुझे अपने पास में बुलाया, बिठाया और मेरे सिर पर अपना दाँया हाथ रखा और आशीर्वाद बरसाते हुए उन्होंने मुझे शांत चित्त से समझाया और कहा, "बेटा, आपकी बेटी कल को अंग्रेजी बोलना सीख जाएगी तब वह फल-सब्जी की रेड़ी वाले के साथ कौन-सी भाषा में बोलेगी? आप क्या सोचती हैं कि फेरी या रेड़ी वालों के साथ बच्ची द्वारा कौन-सी भाषा में बात करना योग्य रहेगा?" चाचा जी के इस सवाल ने मुझे सोचने पर विवश कर दिया।

अक्सर माताएँ (विशेष कर भारत में) अपने बच्चों की परवरिश अपनी मातृभाषा में ना करके क्यों विदेशी भाषा याने अंग्रेजी से करना चाहती हैं? पिछले कुछ सालों से शुरू हुआ यह सिलसिला कि ज़्यादा तर घरों में परिवार के सदस्यों के बीच मातृभाषा का प्रयोग नहीं करके अंग्रेजी भाषा के प्रयोग को प्रशंसा योग्य क्यों माना जाता है? एक अंग्रेजीभाषा को भारतीय परिवारों के लिए समाज में रूतबा बढ़ाने वाली भाषा क्यों समझा जाता है? यह सिलसिला क्यों थमता नहीं? क्यों जन्म से मिली मातृभाषा को अनदेखा करते हुए निम्न कोटी की समझा जाता है?

मैंने जवाब में चाचाजी को बताया, "चाचाजी, वी हैव टू वॉक विथ द टाइम, यू नो?"

चाचाजी, "यह भी एक बड़ी उलझन है। क्योंकि अंग्रेज़ी काम की भाषा जरूर है। पर वह तब जब बच्चे बड़े हो जाएं। जिस भाषा का जन मानस पर अहेमभाव है हम अपनी अगली पीढ़ी से खुदकी पहचान बनाने का कीमती उपहार उससे छीन लेते हैं।

चाचाजी ने आगे बताया, "जब बाल्यावस्था में बच्चों को अपनी मूल जन्मजात भाषा या मातृभाषा को सुनने,

जानने, बोलने का अवसर मिलता है तब बच्चे अपने परिवार, अपने समुदाय जो चाहे विदेश में भी बस रहे हों, उनसे भी मेलजोल, सम्मिलित होने और एकता का बल प्रकट करते हुए अपनेपन के भाव से जीना सीखते हैं।"

चाचाजी की बात मेरे जेहन में गहरी उतर गई। जिस परिवेश में हम पैदा होते हैं उसी के भावोद्रेक भरी समझ से चाचा जी ने मातृभाषा के प्रति मेरी लगन जगा दी और तेज़ कर दी। यह मेरा सिर्फ एक यादगार अनुभव ही नहीं, बल्कि जन्मभूमि के प्रति ना चुकाए जाने वाले ऋण का एहसास है, जो मुझे यथोचित समय पर चाचाजी के द्वारा कराया गया था।

इसीलिए मैं **पद्मश्री से सम्मानित प्रसिद्ध गुजराती ग़ज़लकार श्री खलिल धनतेजवी** की दो पंक्तियाँ हमेशा याद रखती हूँ, जिसके हिंदी अनुवाद को यहाँ रख रही हूँ –

(बात मेरी जिसे समझ में आती नहीं है,
वह जो कोई भी हो, पर गुजराती नहीं है।)

વાત મારી જેને સમજાતી નથી,
તે ગમે તે હોય, ગુજરાતી નથી..!

'यादों का आर्काइव्स'

अभिषेक कुमार मिश्रा
अभिलेखाधिकारी

चलो इतिहास संजोते हैं।
इस आज को आने वाले कल में पिरोते हैं।

चलो इतिहास संजोते हैं।
इस आज को आने वाले कल में पिरोते हैं।

ये प्यारे से जो पल हैं अभी,
हो जाएँगे पुराने सभी।
और बनेंगे इतिहास,
आख़िर हैं ये इतने ख़ास।।

चलो इतिहास संजोते हैं।
इस आज को आने वाले कल में पिरोते हैं।

इससे पहले कि ये खो जायें,
एकदम धुंधला सा हो जायें।

ये रंगीन शामें, दिन भर की मेहनत,
जागी हुई रातें, बारिश का मौसम,
प्यारा-सा कैम्पस, दोस्तों से बातें।।

चलो इतिहास संजोते हैं।
इस आज को आने वाले कल में पिरोते हैं।

चलो थोड़ा समय निकालते हैं,
इसे सबसे अच्छे पेन से सँभालते हैं।
एक प्यारी-सी डायरी में,
चाहे कविता में या शायरी में।।

चलो इतिहास संजोते हैं।
इस आज को आने वाले कल में पिरोते हैं।

डायरी में नहीं,
तो लैपटॉप ही सही।
एक परमानेंट फ़ोल्डर,
या सोशल मीडिया में बोलकर।।

चलो इतिहास संजोते हैं।
इस आज को आने वाले कल में पिरोते हैं।

देखेंगे इसको जब, काफ़ी समय के बाद,
आयेगा ये सब हमको, बहुत-बहुत याद।
ये सारे पल फिर से पास हो जाएँगे,
ये दोस्त, ये कैम्पस, ये दिन, सब ख़ास हो जाएँगे।।

चलो इतिहास संजोते हैं।
इस आज को आने वाले कल में पिरोते हैं।

शायद कुछ यूँ तरक़्क़ी हो जाये,
हमारी कहानियाँ, किताब हो जायें।
शायद कुछ यूँ तरक़्क़ी हो जाये,
हमारी कहानियाँ, किताब हो जायें।।

चलो इतिहास संजोते हैं...
ये कहानियाँ पिरोते हैं...

आईआईएमए ने एक प्यारा-सा आर्काइव्स बनाया है,
इंस्टीट्यूट की यादों को, अच्छे से सजाया है।
अब बारी सबकी है,
ज़िम्मेदारी सबकी है।।

चलो इतिहास संजोते हैं।
इस आज को आने वाले कल में पिरोते हैं।

बुआ

श्रीमती सविता शर्मा
पत्नी, डॉ. मुकेश शर्मा

"सुन्नो बुआ..." बंटी ने कमरे में घुसते ही अपनी माँ से पहले बुआ को आवाज़ दी।

"हाँ, बोल बेटा, क्या हुआ... क्या चाहिए..."

"अरे बुआ, मेरा कोई भी सामान नहीं मिल रहा, मेरे कपड़े कहाँ हैं?"

"अरे बेटा, मैंने सब संभालकर रखा है। पहले हल्दी के लिए चौकी पर तो बैठो, मुहूर्त निकला जा रहा है। सब तुम्हें हल्दी लगाने को आतुर हैं।"

आज बंटी की शादी थी और शादी की सारी जिम्मेदारी हमेशा की तरह सुन्नो बुआ के ऊपर ही थी। बुआ के बिना किसी भी शादी में कोई काम संभव ही नहीं होता था। होता भी कैसे! जितनी शिद्दत और जिम्मेदारी से बुआ काम संभालती थी, दूसरों में वह बात नहीं थी। हर कोई बुआ से अपना काम निकलवाने में लगा रहता था। उसकी वजह शायद यह थी कि बुआ कभी भी किसी को काम के लिए ना नहीं बोलती थी। बच्चा हो या बड़ा, हर किसी की जुबाँ पर सिर्फ बुआ का नाम रहता था। बुआ के परिवार में कोई प्रसंग हो या अड़ौस-पड़ौस में, बुआ हमेशा मौजूद होतीं।

बुआ का व्यक्तित्व ही कुछ ऐसा था। गठीला बदन, लंबी-चौड़ी कद-काठी, गोरा रंग! जब बुआ अपनी सुरीली आवाज़ में शादी-ब्याह में गीत गाती थीं तो लगता था मानो स्वयं देवता उनकी वाणी मे वास करते हों! तीज-त्यौहार हो या शादी-ब्याह, बुआ हर प्रसंग की जान होतीं। बुआ को सभी खूब मान-सम्मान देते थे। ऐसे हर प्रसंग में हर एक की जुबाँ पर बुआ-बुआ की आवाज़ लगी रहती। और बुआ भी बिना थके भाग-भागकर सारे काम बड़े चाव से करती है।

बंटी की शादी हो गई। नई-नवेली दुल्हन घर आ गई। सभी रिश्तेदार अपने-अपने गंतव्य की ओर निकल लिए। अगर नहीं निकली तो सिर्फ बुआ। बुआ पास के गाँव में रहती थीं। अभी भाईसाहब और भाभीजी से अपने गाँव जाने के लिए कह रही थी। इस पर भाभीजी ने उन्हें बड़े ही हक से दो दिन और रुकने को कहा। मैं भी आज अपने घर निकलने वाली थी। बहू की मुँह दिखाई करने और भाभीजी से मिलने के हिसाब से हमने अपनी कार भाभीजी के घर की तरफ से निकालना उचित समझा। वैसे तो हम अपने पुश्तैनी घर में सास-ससुर के पास ठहरे हुए थे। समय-समय पर भाभीजी के घर आते थे और रात में अपने घर जाकर सोते थे।

नई बहू से मिलकर जब मैं जीने से नीचे उतर रही थो तो मैंने बुआ को किसी से फोन पर बात करते सुना। वह किसी से पैसों को लेकर बात कर रही थी। बुआ की बात खत्म होने के बाद मैंने बुआ से पूछा, "क्या बात है, दीदी? कोई परेशानी है क्या?" पहले तो बुआ ने कुछ भी बताने से आनाकानी की, लेकिन, जब मैंने बहुत ज़ोर दिया तो पता चला कि उनकी पूरी जमा पूँजी कहीं फँस गई है! अपनों की मदद करने के चक्कर में वह अपने बच्चों के हक के पैसे ही गँवा बैठी हैं। उनकी बात सुनकर मेरे पैरों तले से ज़मीन खिसक गई! इतनी बड़ी टेंशन के साथ भी बुआ पूरी शादी में कितनी खुश रह रही थीं! कितनी तत्परता से सारे काम निपटा रही थीं! हम जैसे लोगों को तो ज़रा-सी टेंशन होती है तो चेहरे पर हवाइयाँ उड़ने लगती हैं! हर कोई हमारे चेहरे से ही भाँप लेता है कि कुछ तो हुआ है! बुआ ने किसी को पता भी नहीं चलने दिया कि वे किस विपदा से गुजर रही हैं! जब भाईसाहब - भाभीजी ने भी हमारी बातें सुनी तो वे भी सक्ते में आ गए।

हम सबने बुआ को आराम से बिठाया और सारी बातें विस्तार से जानना चाही। जानने के बाद उनकी हर संभव मदद करने का आश्वासन दिया। स्वाभिमानी बुआ कहाँ किसी से मदद लेने वाली थीं! उन्होंने तो मदद करना सीखा था, लेना नहीं! क़िताब तो उन्होंने सिर्फ छठवीं कक्षा तक ही

पढ़ी हैं लेकिन, ज़िंदगी की क़िताब उन्होंने बख़ूबी पढ़ी है। उन्होंने अपने संघर्ष भी अडिग रहकर और बड़ी हिम्मत से निपटाए थे।

जिस आर्थिक संकट से वह घिरी हुई थीं उससे वे बहुत चतुराई से बाहर भी निकल आईं जब मुझे उन्होंने फोन पर यह बात बताई तो मन खुशी से नाच उठा! लोग कहते हैं ना कि अगर आपने कभी किसी का बुरा नहीं किया तो ईश्वर आपके साथ भी कुछ गलत नहीं होने देता! भगवान हमेशा अच्छे के साथ अच्छा ही करते हैं। बस, एक अटूट विश्वास बनाए रखने की ज़रूरत होती है।

मैं हिंदुस्तान हूँ

चिंतन पटेल
अकादमिक सहयोगी

विश्व का पथदर्शक, देश एक महान हूँ,
मैं हिंदुस्तान हूँ,
सिरताज बन विराजमान हिमालय मेरे,
दक्षिण में लिए हिन्द महासागर सदियों से अटल,
मैं हिंदुस्तान हूँ।

है गीता का सार यहाँ, मर्यादा पुरुषोत्तम राम यहाँ,
विश्वगुरु की फलक पे बैठा,मैं हिंदुस्तान हूँ।

शून्य का सिरजनहार यहाँ, रामन का तरंगाकार यहाँ,
है कलाम का ज्ञान यहाँ, होता विज्ञान का सम्मान जहाँ,
वो मैं हिंदुस्तान हूँ।

टैगोर की गीतांजलि हो या हो रहीम के दोहे,
चाणक्य रस से लबालब साहित्य का सागर हूँ,
मैं हिंदुस्तान हूँ।

भरतवंश की जन्मभूमि हूँ, ऋषिओं की तपोभूमि हूँ,
राणा की वीरभूमि हूँ, लक्ष्मी की रणभूमि हूँ,
शिवाजी के शौर्य-सा अखंड,
मैं हिंदुस्तान हूँ।

काशी से सोमनाथ तक मिलते है शंकर यहाँ,
बहती अविरत मोक्षदायनी गंगा यहाँ,
कामाख्या की देवी से पुरी के जगन्नाथ तक,
हरमंदिर साहिब के गुणगान से मीनाक्षियम्मा की महिमा तक,
मंदिर की घंटनाद से मस्जिद की अजान तक,
हर मन में बस्ता मैं हिंदुस्तान हूँ।

गुण है मेरे गाँधी से, सरदार है पहचान मेरी,
है गर्व मुझे भगतसिंह पर, विवेकानंद है शान मेरी,
वीर सपूतो के रक्त से है लिखी आज़ादी की गाथा मेरी,
उन शहीदों के बलिदान के आगे नतमस्तक
मैं हिंदुस्तान हूँ।

हो कारगिल या हो उरी,
देते माकूल जवाब जांबाज जवान,
दुश्मन की छाती चीरने को राफेल प्रहार है आसमान,
आँख दिखाने वालो का काल,
मैं हिंदुस्तान हूँ।

चाँद की चांदनी में रोशन मेरा चंद्रयान है,
सूरज की ओजस को परखने भेजा,
आदित्य जिसका नाम है,
अंतरिक्ष में पाँव पसारते वीर वैज्ञानिकों का अभिनन्दन,
मैं हिन्दुस्तान हूँ।

नीरज, सिंधू, छेत्री, चानू और धोनी,
चमकते हैं सोने-सा हर खेल में,
और हर मैदान में करोडो धड़कनों-सा दहाड़ता,
मैं हिन्दुस्तान हूँ।

हो रही स्वच्छ हर गली मेरी,
कर रहा जनकल्याण हूँ,
सबको साथ लिए बन रहा आत्मनिर्भर,
दिशाहीन इस दुनिया की दशा तय करता,
मैं हिन्दुस्तान हूँ।

क्या भगवा, क्या हरा, तिरंगा मेरा धर्म है,
क्या इसका, क्या उसका, संविधान मेरा कर्म है,
ना रोके मुझे कोई बेड़ियाँ कभी,
कल, आज और कल मैं सबका हिंदुस्तान हूँ,
मैं सबका हिंदुस्तान हूँ, देश एक महान हूँ,
मैं हिंदुस्तान हूँ, मैं हिंदुस्तान हूँ।

तितली की सीख

प्रवीण शर्मा
एजीएमपी-13 बैच

आज फुर्सत में था कि नज़रें खिड़की के झरोंके पे जा टिकी,
बाहर एक बेपरवाह सी रंगीन तितली एक झूमते पत्ते पे दिखी।

उत्सुक मन ने सोचा चलो तितली से थोड़ी बात करते हैं,
इससे आगाज़ की उम्मीद नहीं तो हम ही कुछ शुरुआत करते हैं।

मैंने पूंछा कि क्या यूँ ही बेपरवाह दिखती तुम रोज़ हो?
क्या उलझने नहीं ज़िन्दगी में जिन्हें सुलझाने का बोझ हो?

कुछ देर तो माहौल में ख़ामोशी ही छायी थी,
तभी लगा चेहरे पे उसके मुस्कान सी आई थी।

वो बोली..

उलझने और तकलीफें तो सबके हिस्से में आती हैं,
फिर इंसान क्या और तितली क्या सबको बराबर बाँटी हैं।
बस फर्क यही कि हम अपना हर पल जी भर के बिताते हैं,
तुम जैसे आने वाले कल की फिक्र में ही नहीं गंवाते हैं।

ये बाते मेरे इंसानी गुरूर को थोड़ी नागवार गुज़री और मैंने कहा।

कुछ बड़ा कर जाओ ऐसी तुममे आग कहाँ,
कल की फिक्र आज कर पाओ इतना भी दिमाग कहाँ?

उसने थोड़ी गहरी सांस ली और फिर बोली...

कब तक गुरूर की छद्म परत के अंदर से ही झांकोगे?
कितना पाया इसपे इतराते, कितना खोया कब आँकोगे ?

किसी दौड़ में भाग रहे हो लगता क्या कुछ हांसिल कर लो,
खुद को तो पूरा झोंक दिया अब अपनों को भी शामिल कर लो।

इस प्रतिस्पर्धा में भले ही तुमने कितने कीर्तिमान बनाये हैं,
पर क्रोध, घमंड, स्वार्थ और ईर्ष्या जैसे द्वेष भी पाए हैं।

मत कोसो किस्मत को सोचो इसमें भी तो सच्चाई है,
इन मुश्किलों की भीड़ में कितनी खुद तुम ने उपजायी हैं।

बड़ा करने की हर एक ज़िद ने बढ़ाई कुदरत से दूरी है,
धरती पर बस इंसान नहीं हर एक चीज़ ज़रूरी है।

आकांक्षाओं की सीमा अनंत है पता भी है कब रुकना है?
इस शोषित धरा पे आगे निज वंशज को ही घुटना है।

मेरा स्वार्थ बस मुझ तक सीमित, छोटे से सपने मेरे हैं,
सुंदर मनभावन दुनिया में थोड़े, मैंने भी रंग बिखेरे हैं।।

तितली ने ये बातें कहकर कहीं और की भरी उड़ान,
इस काल्पनिक यात्रा से मेरा भी झट से टूटा ध्यान।

तितली की बातों मे कुछ तो गहरी सच्चाई है,
मुश्किलों के धुंधलेपन में हमारी अपनी परछाईं है।

हम शायद जीवनपथ पे कितना कुछ ही पा जायेंगे,
पर क्या एक स्वछंद भरी उड़ान कभी भर पाएंगे?

विद्याविनियोगाद्विकास:

भारतीय प्रबंध संस्थान अहमदाबाद
वस्त्रापुर, अहमदाबाद - 380 015
दूरभाष: 91-79-7152 4691 • फैक्स : 91-079-26300352, 26308345
ईमेल : agm-hindi@iima.ac.in • वेबसाइट : www.iima.ac.in